पूर्ण संख्या—८९

आसाम-दर्शन

मई १९४७ वर्ष ८

वैशाख २००४ संख्या ११

सम्पादक

पं० रामनारायण मिश्र, बी०

प्रकाशक

भूगोल-कार्यालय, इलाहाबाद

वार्षिक मूल्य ६)

विदेश में ८)

इस प्रति का ॥)

विषय-सूची

स्थिति

स्थिति सीमा, तथा विस्तार

आसाम का वर्तमान नाम असम का अपभ्रंश है। सचमुच यह प्रान्त सम या बराबर नहीं है। कहीं ऊंची पहाड़ियां हैं। कहीं नीची घाटियां हैं। बराबर या सम न होने से इसका असम नाम अनुकूल है ही। पर असम या आसाम का पुराना नाम कामरूप है। कहते हैं शिव जी ने तपस्या भंग करने वाले कामदेव को भस्म कर दिया था। इससे उसकी स्त्री रति का विलाप सुन कर शिव जी ने उसे वरदान दिया कि कामदेव अपना इच्छित रूप प्राप्त कर ले। चाहे इस घटना से चाहे लोगों के सुन्दर स्वरूप और देश के मनोहर दृश्य के कारण यह नाम पड़ा हो। पर इसमें कोई सन्देह नहीं कि आसाम का प्राचीन नाम कामरूप रहा।

आसाम प्रान्त की एक विशेषता यह है कि यहां के अहोम वंशी राजाओं ने बुरुंजी नाम के इतिहास-ग्रन्थ लिखवाये।

आसाम प्रान्त की दूसरी बड़ी विशेषता यह है कि यह प्रान्त मुसलमानों की पराधीनता में कभी नहीं आया। जब भारत के दूसरे भागों में मुसलमानी राज्य

स्थापित हो गया उस समय भी यह प्रान्त स्वतंत्र बना बना रहा। तन्त्र (जादू, टोना) के लिये भी यह प्रान्त बहुत प्रसिद्ध रहा। वर्तमान समय में मुस्लिम लीग के आक्रमण और आन्दोलन ने आसाम के प्रश्न को अखिल भारतवर्ष का प्रश्न बना दिया। पर आसामवासी लीग के पूर्वी पाकिस्तान में कभी सम्मिलित होना पसन्द न करेंगे।

आसाम प्रान्त भारत का सबसे पूर्वोत्तरी प्रान्त है। यह बंगाल की सीमा के पूर्व और उत्तर में स्थित है। यह अक्षांश २८° १७' और २२°१' उत्तर और देशान्तर ८९°४५' तथा ९७°१५' पूर्व के मध्य में विद्यमान है। इस प्रान्त के उत्तर में भूटान का स्वतंत्र राज्य, लासा सरकार के अन्तर्गत टोआंग नामक भूटियों का प्रदेश, हिमालय पहाड़ियों की श्रेणी, अका, डफला, मिरी, अबोर और मिशमी नामक सीमान्त जातियों के प्रदेश, उत्तर पूर्व में मिशमी की पहाडियां, पूर्व में पटकोई की पहाड़ियां नागा की पहाड़ियां और मणिपूर की देशी रियासत, दक्षिण में लुशाई की पहाड़ियां, टिपेरा की पहाड़ियां और बंगाल का टिपेरा (त्रिपुरा जिला) और

आसाम-दर्शन

पश्चिम में बंगाल के मैमनसिंह और रंगपूर के जिले तथा कूच विहार की देशी रियासत है। आसाम भारत के पूर्व और उत्तर की दिशा में स्थित सीमान्त प्रान्त है। आसाम प्रान्त का वर्तमान क्षेत्रफल ६३,५०० वर्गमील है। सन् १६०१ की रिपार्ट के अनुसार इसका क्षेत्रफल (मणिपूर की रियासत को छोड़कर) ५२,६५६ वर्ग-मील था। जिसमें ३१,७८६ वर्गमील मैदान था तथा २१,१७० वर्गमील पहाड़ो प्रदेश था और मणिपूर का क्षेत्रफल ३,२८४ वर्गमील था।

प्राकृतिक विभाग

आसाम का प्रान्त तीन प्रधान प्राकृतिक विभागों में बंटा हुआ है—

१—उत्तर में ब्रह्मपुत्र की घाटी।

२—मध्य में पार्वत्य प्रदेश। जिसमें गारो खसिया और जयन्तिया आदि की पहाड़ियां सम्मिलित हैं।

३—दक्षिण में सूरमा की घाटी।

इन तीनों विभागों में प्रत्येक अपना पृथक महत्व रखता है। इनका संक्षिप्त वर्णन इस प्रकार है।

देश दर्शन

ब्रह्मपुत्र की घाटी

ब्रह्मपुत्र की घाटी जिसे आसाम की घाटी भी कहते हैं एक विशाल उपजाऊ मैदान है। इसकी लम्बाई ४५० मील है तथा चौड़ाई लगभग ५० मील है। इस घाटी का पिछला हिस्सा पूर्व से पश्चिम की ओर फैला हुआ है लेकिन ऊपर का हिस्सा उत्तर-पूर्व को झुकता हुआ है। इसके उत्तर में हिमालय पर्वत की प्रधान श्रेणी हैं जिसके निम्न भाग मैदान से कहीं कहीं उठे हुये हैं और दक्षिण में बड़ा पठार अथवा पठार समूह है जो "आसाम रेञ्ज" के नाम से प्रसिद्ध है। यह "आसाम रेञ्ज" पूर्वान्त तथा पश्चिमान्त प्रदेश में और उत्तर की ओर बहुत कुछ टूटा-फूटा है। परन्तु इसका मध्य भाग जो गारो की पहाड़ियों के पूर्वीय भाग से लेकर धनसिरी नदी के जल-विभाजक (वाटर शेड) तक फैला हुआ है बहुत ही ऊंचा प्रदेश है। इस रेञ्ज (श्रेणी) के भिन्न स्थानों में जो भिन्न-भिन्न जातियां बसी हुई हैं वे स्थान इन्ही जातियों के नाम से प्रसिद्ध हो गये हैं। इसमें गारो, खसिया तथा नागा आदि पहाड़ी जातियां बसी हुई हैं। अतः इनके नाम गारो की

पहाड़ी, खसिया और जयन्तिया की पहाड़ी तथा नागा की पहाड़ी है। ब्रह्मपुत्र की घाटी के दक्षिणी किनारे पर कई स्थानों में 'आसाम श्रेणी की पहाड़ियां नदी के किनारे तक घुस कर चली आई हैं। नवगांव तथा शिवसागर जिले में मीकर की पहाड़ियां घाटी में बिल्कुल घुस गई हैं और गोआलपाड़ा, गोहाटी और तेजपुर स्थानों में तो इस श्रेणी की अन्य पहाड़ियां ब्रह्मपुत्र के उत्तरी तथा दक्षिणी किनारे के बिल्कुल ऊपर चली आई हैं। इस घाटी का सबसे चौड़ा भाग वह है जहां यह नदी शिव सागर तथा लखीमपुर के ज़िलों को विभक्त करती है इस स्थान से ४० मील नीचे की ओर यह फिर चौड़ी हो जाती है परन्तु नवगांव ज़िले के निचले भाग के अंत में खासी की पहाड़ियां फिर घाटी में घुस आती हैं। इन पहाड़ियों में से होती हुई नदी आगे चल कर गौहाटी पहुँचती है जहां पर यह पहाड़ियां घुस आने के कारण बिल्कुल पतली पड़ जाती हैं। इस स्थान पर ब्रह्मपुत्र की चौड़ाई १००० गज़ भी नहीं है। इसके आगे गोआलपाड़ा तक पहाड़ियों का अभाव है तथा नदी स्वच्छन्द रूप से बहती है। इसी स्थान पर मनास नदी का संगम है तथा पहाड़ियों के बीच में

"आसाम का दरवाजा" है। इस स्थान के आगे यह घाटी और अधिक विस्तृत हो जाती है और धुब्री के आगे बंगाल के बड़े डेल्टे में चली जाती है। ब्रह्मपुत्र के किनारे अनेक भागों में दलदल स्थान पाये जाते हैं जो घास के घने जंगलों से भरे पड़े हैं। इन्हीं जङ्गलों में कहीं कहीं तेलहन और गरमी में होने वाले धान के खेत भी दिखाई पड़ते हैं। ब्रह्मपुत्र के तट के विशाल चौरस मैदान में स्थाई रूप से खेती होती है। यह मैदान धान के हरे हरे खेतों से सर्वदा आच्छादित रहता है तथा बीच बीच में बांसों के झुरमुट तथा ताड़ और फल देने वाले वृक्षों की पंक्तियां दिखाई पड़ती हैं जिनमें गरीब किसानों की झोपड़ियां अपनी लघुता के कारण दृष्टिगोचर नहीं होतीं। इस घाटी के अधिक भागों में बड़ी घनी बस्ती है क्योंकि यहां पैदावार अधिक है। परन्तु घाटी में जहां पहाड़ियां घुस आई हैं वहां खेती नहीं होती है तथा केवल जंगल ही जङ्गल दिखाई पड़ते हैं। फिर भी यहां पर यूरोपियन लोगों ने जङ्गलों को काट कर चाय के बगीचे और धान के खेत बना ही लिये हैं। घाटी के उपजाऊ होने के कारण यहां ज़मीन

का बड़ा अभाव हो गया है और कोई भी ऐसा सुन्दर स्थान नहीं जिसमें लोग खेती न करते हों। इस घाटी का प्राकृतिक दृश्य बड़ा ही मनोरम तथा सुहावना है। घाटी के उत्तर और दक्षिण दोनों ओर सुन्दर पहाड़ियां दिखाई पड़ती हैं तथा हिमालय की निम्न श्रेणियों के ऊपर सफेद बर्फ बाल सूर्य की सुनहली रश्मियों से सुवर्ण के समान चमकती हुई दृष्टि गोचर होती है। सचमुच इस घाटी का प्राकृतिक दृश्य बड़ा ही अलौकिक, स्वर्गीय तथा मनोहर है।

सूरमा घाटी

यह घाटी आसाम के दक्षिणी भाग में स्थित है यह प्रान्त के तीन प्राकृतिक विभागों में से एक है। इस घाटी में काचार तथा सिलहट के ज़िले सम्मिलित हैं। इसकी लम्बाई प्रायः १२५ मील है तथा चौड़ाई ६० मील है और इसका क्षेत्रफल ७५०६ वर्गमील है। यह ब्रह्मपुत्र की घाटी से विस्तार में बहुत छोटा है क्योंकि ब्रह्मपुत्र की घाटी का क्षेत्रफल २४,२८३ वर्ग-मील है। यह घाटी तीन ओर से पहाड़ियों से घिरी हुई है। इसके उत्तर में गारो, खसिया और जयन्तिया तथा नागा की पहाड़ियां हैं। पूर्व में मणिपूर की पर्वत

श्रेणियां तथा दक्षिण में लुशाई की पहाड़ियां हैं। यह घाटी ब्रह्मपुत्र की घाटी से अनेक बातों में भिन्न है। सर्व प्रथम यह उस घाटी से विस्तार में बहुत छोटी है। समुद्र की सतह से इसकी औसत ऊंचाई दूसरी घाटी की अपेक्षा बहुत कम है क्योंकि सिलहट में सूरमा की सतह से ऊंचाई केवल २२'७ फुट है जब कि गौहाटी में ब्रह्मपुत्र की ऊंचाई १४८'३६ फुट है। इसी कारण इस घाटी में बहने वाली नदियों का प्रवाह बहुत मन्द है जब कि ब्रह्मपुत्र और उसकी सहायक नदियों का प्रवाह बहुत ही वेग पूर्ण है। ब्रह्मपुत्र नदी अपने बालूदार 'चूर' से होती हुई बड़ी ही द्रुत गति तथा विशाल वेग से बहती है जिससे इसके किनारे प्रत्येक वर्ष नष्ट भ्रष्ट होते रहते हैं परन्तु सूरमा घाटी की नदियां धीरे धीरे बहती हुई और टेढ़ी मेढ़ी धाराओं से चलती हुई विशाल मेघना नदी में जाकर मिल जाती है। इन नदियों के किनारे (तट) प्रतिवर्ष इनके द्वारा लाई गई मिट्टियों से बहुत ही ऊंचे हो गये हैं और इस कारण इन स्थानों में बड़ी ही घनी आबादी है क्योंकि इससे अधिक उपजाऊ जमीन अन्यत्र उपलब्ध नहीं। कहने का

तात्पर्य यह है कि सूरमा घाटी में नदियों के किनारे की ज़मीन सबसे अधिक उपजाऊ है तथा फलस्वरूप यहां आबादी भी बहुत अधिक है।

जैसा कि पहिले लिखा गया है इस घाटी के उत्तर में खासी तथा जयन्तिया की पहाड़ियां हैं जिनके मध्य का पठार (प्लेटो) ज़मीन से ४००० फीट ऊंचा है। सिलहट की पूर्वी सीमा के पास यह प्लेटो पीछे खिसकता हुआ पहाड़ियों के मध्य में घुस जाता है और एक नई पर्वत श्रेणी जिसे बरेल श्रेणी अथवा ग्रेट डाइक कहते हैं इस प्लेटो के स्थान पर घाटी की उत्तरी सीमा के रूप में चली आती है। हम जब पूर्व की ओर चलते हैं। तब इस श्रेणी को क्रमशः ऊंची उठती हुई तथा ढलुआ बनती हुई पाते हैं। काचार ज़िले के पूर्वी सीमान्त के पास यह श्रेणी उत्तर-पूर्व की ओर ऊपर उठती है तथा नागा की पहाड़ियों से होती हुई अन्त में पटकोई की पहाड़ियों में मिल जाती है। पूर्व में यह घाटी मणिपुर की पर्वत श्रेणियों से बिल्कुल घिरी हुई है। जो श्रेणियां उत्तर से दक्षिण को समानान्तर कतारों में फैली हुई हैं। दक्षिण में भी ये श्रेणियां उपजाऊ मैदान में कुछ दूर तक फैली

हैं। इसके अतिरिक्त इस ओर लुशाई पहाड़ियां तथा टिपेरा की पहाड़ियां वर्तमान हैं।

इस समस्त उपजाऊ मैदान में कुछ स्थानों को छोड़ कर नदी की तह में छोटी छोटी पहाड़ियां जिनकी ऊंचाई बहुत कम है और जो 'टीला' के नाम से पुकारी जाती हैं—घुस आई हैं। जहां पर टीला और दक्षिणी पहाड़ियों की श्रेणी घाटी में घुसी हैं उन स्थानों को छोड़ कर घाटी का शेष भाग एक बहुत ही बड़ा डेल्टा है जिसमें मन्द गति वाली छोटी छोटी नदियों का जाल बिछा हुआ है जो बरसात के दिनों में तुलसीदास की "छीद्र नदी भरि चलि उतराई" की उक्ति को सार्थक बनाती हैं। नदियों के तट की भूमि सब से ऊँची जमीन है। इन स्थानों पर कृषकों के अनेक गाँव बने दिखाई पड़ते हैं।

सिलहट जिले के पश्चिमी भाग में किसानों के गाँव बड़े सघन बसे हुए हैं। परन्तु यहाँ पर बगीचे तथा फल वाले वृक्षों का अभाव है। यहाँ का दृश्य भी कभी सुहावना नहीं मालूम होता, ठीक इसके विपरीत सिलहट जिले का पूर्वी भाग तथा काचार जिले में बड़े सुन्दर

प्राकृतिक दृश्य हैं जो चित्त को आकर्षित कर लेते हैं। प्रायः प्रत्येक ओर सुन्दर पहाड़ियाँ दृष्टिगोचर होती हैं। पतले पतले ताड़ वृक्षों के झुण्ड, पत्तों वाले घने बाँस के पेड़ तथा कदलीकुञ्जों में बसे हुये गाँव इन वृक्षों की अधिकता के कारण दिखाई नहीं पड़ते। भिन्न भिन्न स्थानों पर लगे हुये नरकट और घासें वास्तव में प्राकृतिक दृश्य को और भी सुहावना बना देते हैं।

मध्यवर्ती पर्वतीय प्रदेश

आसाम के मध्य में कुछ ऐसे पार्वत्य प्रदेश हैं जो ब्रह्मपुत्र की घाटी तथा सूरमा की घाटी को पृथक करते हैं। इन प्रदेशों को आसाम श्रेणी के नाम से पुकारते हैं। यह श्रेणी आसाम के पश्चिमान्त से लेकर पूर्वोत्तर प्रदेश के अन्त तक फैली हुई है। इस श्रेणी के अन्तर्गत गारो की पहाड़ियां, खसिया और जयन्तिया की पहाड़ियाँ तथा बैरेल रेञ्ज (श्रेणी) सम्मिलित हैं। यह आसाम श्रेणी अपनी पूर्वी सीमा में पटकोई पहाड़ियों के द्वारा हिमालय की प्रधान श्रेणी से जुटी हुई है तथा मणिपुर के पर्वतों के द्वार अराकान पर्वत से मिली हुई है। यह श्रेणी पश्चिम में गारो की पहाड़ियों में अधिक

ऊँची हो गई है परन्तु खासी पहाड़ी की सीमा आने के पहिले ही यह फिर कम हो जाती है। खासी तथा जयन्तिया की पहाड़ियों में सब से ऊँचा स्थान शिलाङ्ग की चोटी है जो ६४५० फीट ऊँचा है। इस आसाम के प्लेटो पर जिस पर शिलाङ्ग बसा हुआ है सब स्थान बहुत ऊँचे हैं। किसी की ऊँचाई ६००० फीट से कम नहीं है। इन स्थानों में खेती होती है तथा यहाँ आबादी भी है। और पूर्व की ओर आगे चलने पर ऊँचाई की सतह फिर नीची हो जाती है और जयन्तिया की पहाड़ियों में सब से अधिक ऊँची चोटी ५००० फीट से बड़ी नहीं है। बैरेल के उत्तर में स्थित काचार की पहाड़ियों में तो यह ऊँचाई बहुत ही कम हो जाती है। बैरेल श्रेणी खासी-जयन्तिया प्लेटो की दक्षिणी-पूर्वी सीमा से जहाँ से हरी नदी पहाड़ियों से निकलती है—प्रारम्भ होती है और अचानक बहुत ऊँची हो जाती है जतिंगा की घाटी के पास इसकी चोटियाँ ५००० से ६००० फुट तक ऊँची पाई जाती हैं। इसके पश्चात् यह श्रेणी कुछ टेढ़ी होकर उत्तर-पूर्व की ओर चली जाती है तथा और अधिक ऊँची हो कर नागा के

पहाड़ी जिला तथा मणिपुर राज्य के बीच में सीमा का काम करती है। जहां पर (ब्रिटिश राज्य में) यह सब से अधिक ऊँचाई को प्राप्त करता है। यह सब से ऊँचा स्थान जापवा की चोटी है जो कि समुद्र के तल से लगभग १०,००० फुट ऊँची है। इस स्थान के उत्तर-पूर्व में बैरेल श्रेणी कुछ भग्न हो गई है। इस स्थान की ऊंचाई ८,००० फुट से ६००० फुट तक है। जापवो की चोटी पर कभी कभी बर्फ गिरा करती है परन्तु इसके पश्चिम में कभी नहीं गिरती।

नवगांव के पूर्व में मिकिर तथा रेंगमा की पहाड़ियां हैं जो प्रधान श्रेणी से हट कर बिल्कुल पृथक हो गई हैं। इन पहाड़ियों के भीतरी भागों का जानकारी विशेष नहीं है। इन स्थानों में आबादी बहुत कम है तथा जंगल भरे पड़े हैं। लखीमपुर तथा शिवसागर के दक्षिण में स्थित पहाड़ियां छोटी छोटी टूटी श्रेणियों से युक्त हैं।

गारो की पहाड़ियों, खासी तथा बैरेल रेञ्ज के ढलुवे स्थानों पर घने जंगल लगे हुये हैं। खासी पहाड़ी के ऊपर तथा मध्य में प्लेटो तथा उत्तरी काचार के

अधिक भागों में पहाड़ का धरातल बहुत ऊंचा नीचा है जिसमें 'पाइन' तथा 'ओक' के वृक्ष लगे हुए हैं।

आसाम पठार (प्लेटो)

आसाम रेञ्ज में खासी तथा जयन्तिया वाला स्थान आसपास के सब स्थानों से ऊंचा है। इस ऊंची जमीन (पर्वत प्रदेश) को "आसाम का प्लेटो" कहते हैं। आसाम प्रान्त की वर्तमान राजधानी शिलांग इसी 'आसाम प्लेटो' पर बसा हुआ है। यह स्थान खेती के लायक है। अतः आबादी भी यहाँ साधारणतः अच्छी है। आसाम-प्लेटो' पर वर्षा भी होती है। दक्षिण-पश्चिम की मानसून पवायें यहीं आकर टकराती हैं तथा प्रचुर वर्षा करती हैं। इसी प्लेटो के दक्षिण ढलुवे भाग पर चेरापूञ्जी बसा है जहाँ पर संसार में सबसे अधिक वर्षा होती है।

ऊपर जो वर्णन किया गया है उससे स्पष्ट प्रतीत होता है कि आसाम प्रान्त तीन प्राकृतिक विभागों में बटा हुआ है। उत्तर में ब्रह्मपुत्र की घाटी दक्षिण में सूरमा की घाटी और मध्य में वे पर्वत श्रेणियाँ हैं जो इन दोनों घाटियों को विभक्त करती हैं तथा "आसाम-

रेञ्ज" के नाम से प्रसिद्ध हैं। यह रेञ्ज आसाम के पश्चिमी भाग से लेकर पूर्व-उत्तर भाग के अन्त तक फैली हुई है तथा भिन्न भिन्न स्थानों में उसमें रहने वाली जातियों के नाम के कारण भिन्न भिन्न नामों से विख्यात है। यही आसाम के प्राकृतिक विभाग हैं।

पर्वत

आसाम एक पहाड़ी प्रान्त है अतः यहां पहाड़ों की कुछ कमी नहीं है। यह प्रान्त तीन ओर से पहाड़ों से घिरा हुआ है। इसके केवल पश्चिम में ही पहाड़ नहीं है। प्रान्त का मध्य भाग पहाड़ों से घिरा हुआ है। आसाम में जो पहाड़ हैं उन्हें वास्तविक दृष्टि से विचार करें तो पहाड़ नहीं कह सकते बल्कि ये छोटी छोटी पहाड़ियाँ हैं तथा ये इसी नाम से पुकारी भी जाती हैं। इन पहाड़ियों की कुल संख्या सात है तथा इनके नाम ये हैं:-(१) गारो की पहाड़ियाँ (२) खासी और जयन्तिया की पहाड़ियाँ (३) नागा की पहाड़ियां (४) लुई की पहाड़ियां (५) पटकोई की पहाड़ियां (६) मिकिर और रेङ्गमा की पहाड़ियाँ (७) बैरेल श्रेणी।

(१) गारो की पहाड़ियाँ

इस जिले की प्रधान पहाड़ी-श्रेणी है तथा इसी पर इसका प्रधान स्थान तुरा है बसा हुआ है। यह श्रेणी उत्तर पश्चिम से दक्षिण-पूर्व को जाती है। इसकी सबसे बड़ी चोटी नोकरेक है जो ४,६५२ फुट ऊँची है तथा तुरा से आठ मील दक्षिण-पूर्व में स्थित है। इस स्थान से पहाड़ की ऊंचाई कम होने लगती है सोमेश्वरी नदी के पूर्व में इसकी कैलाश नामक एक चोटी है जिसकी ऊंचाई समुद्र की तल से ३,३७५ फुट है। खासी पहाड़ी की सीमा के पास एक तीसरी चोटी वालयाकुरम है जो २,८३१ फुट ऊंची है। तुरा वाली श्रेणी से ५ मील उत्तर में एक बहुत छोटी अबरेला नाम की पहाड़ी है जिसकी सबसे ऊंची चोटी ३,२७७ फुट ऊंची है। जिले के शेष भाग में जो पहाड़ियों की श्रेणी है वह उत्तर से दक्षिण की ओर जाती है। इस श्रेणी की अनेक चोटियां १५०० से लेकर २००० फीट तक ऊंची हैं। परन्तु इसका साधारण तल इससे कम है। इन पहाड़ियों पर घने जंगल लगे रहते हैं परन्तु जहां खेती के लिये जमीन बनाई गई है वहां केवल बांस

और नरकट के जङ्गल दिखाई पड़ते हैं। पहाड़ियां घाटियों की ओर ढलुआ है। गारो लोगों का ऐसा विश्वास है कि कैलाश चोटी पर मृत मनुष्यों की आत्मायें निवास करती हैं।

(२) खासी और जयन्तिया की पहाड़ियाँ

ये इसी नाम के ज़िले में फैली हुई हैं। उत्तरी और पश्चिमी किनारे पर ये पहाड़ियां ऊंची उठी हुई श्रेणी के रूप में विद्यमान हैं। साधारणतया इनकी ऊंचाई २००० से लेकर ३००० फुट तक है। परन्तु इनके मध्य भाग में शिलांग का प्लेटो स्थित है जिसकी ऊंचाई प्रायः ६००० फुट है। शिलांग की चोटी इसमें सबसे ऊंची जगह है तथा इसकी ऊंचाई ६,४५० फुट है। पूर्वी और पश्चिमी भाग में इस प्लेटो की उंचाई कम है। खासी जाति के अधिकांश लोग इसी प्लेटो में निवास करते हैं। इस प्रदेश का उत्तरी भाग भोई प्रदेश के नाम से प्रसिद्ध है। खासी और जयन्तिया पहाड़ियों की कुछ चोटियों की उंचाई इस प्रकार है। रेबलेङ्ग ५,६७१ फुट, लैतदेरा ६००० फुट, उ-मुन ६,२२१ फुट, मसकुइन ५,३०६ फुट और केलाङ्ग ५,६८४ फुट। इन

पहाड़ियों में गर्म पानी के सोते हैं तथा अनेक कन्दरायें भी पाई जाती हैं।

(३) दक्षिण की लुशाई पहाड़ियाँ

आसाम के दक्षिणी भाग में लुशाई की पहाड़ियाँ स्थित हैं जो आसाम को बर्मा से पृथक करती हैं। ये पहाड़ियां प्रायः घने बांस के जङ्गलों से घिरी हुई है। परन्तु इनके पूर्वी भाग में वर्षा के अभाव के कारण खुले घास से आच्छादित स्थान मिलते हैं। इन पहाड़ियों में लुशाई नाम की एक जाति रहती है परन्तु यहां आबादी बहुत ही कम है। काचार के ज़िले में इस पहाड़ी के आगे निकले हुये ढलुवे स्थानों में 'संरक्षित' जङ्गल हैं जो कि आजकल काटकर खेत बनाये जा रहे हैं। साधारणतया इन पहाड़ियों की ऊंचाई २००० फुट है परन्तु इनकी चोटियां ६००० फुट तक ऊंची हैं। लुशाई पहाड़ियों में एक नीला पर्वत है जिसकी ऊँचाई ७,१०० फीट है। इस जिले का पूर्वी भाग अधिक ऊँचा है। लुशाई पहाड़ियों के पास ही में स्थित चीन पहाड़ियों की कुछ चोटियाँ ८००० फीट तक ऊँची हैं।

(४) नागा की पहाड़ियाँ

ये पहाड़ियाँ मणिपुर राज्य के उत्तर तथा शिव-सागर जिले के पूर्व और उत्तर में फैली हुई हैं। इसमें आसाम की प्रसिद्ध नागा जाति बसती है। ये पहाड़ियां उत्तर-दक्षिण में बहुत दूर तक फैली हुई हैं। इसकी सब से बड़ी चोटी का नाम जापवो है जो १०,००० फीट ऊंची है। यह चोटी नागा पहाड़ियों के सुदूर दक्षिण भाग में स्थित है। इसके उत्तरी-पूर्वी भाग के आसपास अनेक कोयले की खानें हैं। धनसिरी नदी यहीं से निकलती है। ये पहाड़ियाँ अन्य पहाड़ियों से विस्तार में बड़ी हैं।

(५) मिकिर और रेङ्गमा की पहाड़ियाँ

ये पहाड़ियां आसाम श्रेणी से अलग हट कर शिवसागर और नवगांव के ज़िले में फैली हुई हैं। इन पहाड़ियों की चोटियाँ ४००० फीट तक ऊंची हैं। ये दोनों पहाड़ियाँ ब्रह्मपुत्र की घाटी में घुस आई हैं जिससे ब्रह्मपुत्र-घाटी का मैदान यहाँ बहुत ही कम हो गया है।

(६) पटकोई पहाड़ियाँ

ये नागा पहाड़ियों की उत्तरी-पूर्वी सीमा पर स्थित है। ये विशेष बड़ी नहीं हैं।

(७) बैरेल श्रेणी

यह श्रेणी खासी-जयन्तिया पहाड़ियों की दक्षिणी पूर्वी सीमा से प्रारम्भ होती है। यह शीघ्र ही अचानक बहुत ऊंची हो जाती है और जतिङ्गा की घाटी में जाकर इसकी चोटियाँ ५०००० फोट से लेकर ६००० फीट तक ऊंची हो जाती हैं। इसके पश्चात् यह श्रेणी कुछ टेढ़ी होकर उत्तर-पूर्व की ओर चली जाती है। तथा कुछ अधिक ऊंची होकर नागा पहाड़ी का जिला और मणि-पूर राज्य के बीच में इन दोनों की सीमा का काम करती है। इस श्रेणी पर भी जङ्गल लगे हुये हैं तथा अधिक ऊंचाई के कारण कहीं कहीं बर्फ भी पड़ती है।

आसाम की पहाड़ियों में कई समान बातें हैं। ये सब प्रायः छोटी हैं तथा जापवो-चोटो को छोड़कर इनकी ऊंचाई भी साधारणतया बराबर है। इन सब पर जङ्गल लगे हुये हैं तथा प्रायः प्रत्येक पहाड़ी किसी न किसी नदी का उद्गम स्थान अवश्य ही है।

नदियाँ

यदि आसाम को नदियों का देश कहें तो इसमें कुछ अत्युक्ति नहीं होगी। इतने कम क्षेत्रफल में इतनी अधिक नदियाँ किसी भी प्रदेश में नहीं हैं। देखिये वहां ही विशाल नदियाँ तथा छोटी छोटी शाखायें कहीं प्रबल वेग से बहती हुई तथा कहीं कलकल शब्द करतीं हुई दृष्टिगोचर होती हैं। सच पूछा जाय तो प्रान्त में नदियों का जाल सा बिछा हुआ है। आसाम की नदियों की कुल संख्या ६१ है जिसमें ३४ उत्तरी पहाड़ों से निकल कर बहती हैं तथा २४ नदियाँ दक्षिण की पहाड़ियों से निकलती हैं। ब्रह्मपुत्र तथा उसकी दो सहायक नदियाँ दिहाङ्ग और दिबाङ्ग इसके अतिरिक्त हैं।

ब्रह्मपुत्र नदी

यह आसाम की सब से बड़ी नदी है तथा भारत की प्रधान नदियों में से यह भी एक प्रधान नदी है। यह हिन्दुओं की बड़ी पवित्र तथा पूजनीय नदी समझी जाती है। संस्कृत साहित्य में इसका वर्णन मिलता है जहां इसका 'नद' (नदी नहीं) के नाम से उल्लेख

किया गया है। यह मानसरोवर के पास से निकलने के कारण मानस=ब्रह्म=पुत्र अर्थात् ब्रह्म का पुत्र मानी जाती है। पुत्र होने के कारण इसे नद (पुल्लिङ्ग) कहते हैं नदी (स्त्रीलिंग) नहीं। ब्रह्मा का पुत्र होने से इस नदी का नाम ब्रह्मपुत्र पड़ गया। चूंकि यह नदी अति पवित्र समझी जाती है अतः इसमें गोता लगाना कलिमलपुञ्ज को नाश करने वाला समझा जाता है। इस नदी में अनेक ऐसे स्थान हैं जो बड़े पवित्र समझे जाते हैं। इन्हीं स्थानों में से ब्रह्मकुण्ड भी है जहाँ पर स्नान करने के लिये प्रति वर्ष हज़ारों आदमी बिना मार्ग की विषमता का विचार किये जाते हैं और यहाँ स्नान कर अपने को कृत्कृत्य समझते हैं। कामाख्य देवी का भारत विख्यात मन्दिर जो शक्ति पूजा का प्रधान स्थान है इसी पवित्र नदी के तट पर बसा हुआ है। यदि ब्रह्मपुत्र को हम आसाम की गङ्गा कहें तो कुछ भी अत्युक्ति न होगी केवल हम हिन्दू ही नहीं बल्कि हिन्दू संस्कृति से अनभिज्ञ तिब्बत देश के पहाड़ी लोग भी इस नदी को बड़ी पवित्र तथा पूजनीय समझते हैं। जिस प्रकार से स्थान विशेष से गङ्गा का

नाम अलकनन्दा, गंगा और भागीरथी होता जाता है उसी प्रकार से इसका नाम भी तिब्बत में सांपू और आसाम तथा बङ्गाल में ब्रह्मपुत्र हो जाता है। प्राचीन समय में इस नदी (नद) का नाम लौहित्य था।

यह नदी मानसरोवर झील के पूर्व कैलाश पर्वत से निकलती है। यह १८०० मील लम्बी है और तिब्बत तथा उत्तरी-पूर्वी हिन्दुस्तान के विस्तृत (३,५०,००० वर्गमील) प्रदेश का पानी बहाकर लाती है। आसाम की घाटी में यह नदी ४५० मील तक ठीक पश्चिम की ओर बहती है। ब्रह्मपुत्र के मार्ग में आसाम में प्रबल वर्षा होती है और सदिया के पास इसकी घाटी समुद्र-तल से ४,००० फीट ऊंची है। सूरमा नदी की अपेक्षा ब्रह्मपुत्र की औसत ऊंचाई समुद्र की सतह से अधिक है। ब्रह्मपुत्र बड़े ज़ोरों से बहती है इस कारण सदा अपने किनारे काटती रहती है। यही कारण है कि कुछ इने गिने शहरों को छोड़ कर गङ्गा की भांति इसके किनारे अधिक शहर नहीं हैं।

ब्रह्मपुत्र नदी की अनेक सहायक नदियां हैं जो स्थान स्थान पर आकर इसमें मिलती रहती हैं। इन

में कुछ नदियां तो उत्तर के पहाड़ से निकलती हैं तथा कुछ ब्रह्मपुत्र के दक्षिण में स्थित पहाड़ियों से निकल कर इसमें मिलती हैं। ब्रह्मपुत्र की उत्तरी सहायक नदियों में सदा बर्फ गलगल कर आती रहती है जिससे इन नदियों का प्रवाह कभी सूखने नहीं पाता। परन्तु दक्षिण की नदियां सदा बरसाती पानी पर ही अवलम्बित रहती हैं और गर्मी के दिनों में प्रायः सूख जाती हैं। ब्रह्मपुत्र की उत्तरी प्रधान सहायक नदियां दिबाङ्ग, दिहाङ्ग, सुबिन्सरी, भरेली, लरनदी, और मनास हैं तथा दक्षिणी प्रधान सहायक नदियों के नाम नयी तथा पुरानी दिहिङ्ग, दिसाङ्ग, दिसोई तथा धनसिरी है। धनसिरी नदी के संगम के कुछ नीचे ब्रह्मपुत्र नदी का कुछ जल प्रधान धारा से अलग होकर, कैलेङ्ग का नाम धारण कर नवगांव जिले से वेग से बहता हुआ जाकर गौहाटी से कुछ पहले ही प्रधान धारा से फिर मिल जाता है। सदिया के ऊपर ब्रह्मपुत्र की धारा बहुत कुछ पतली हो जाती है।

ब्रह्मपुत्र नदी उन स्थानों के अतिरिक्त जहां पहाड़ियां घुस आई हैं सर्वत्र अपने बालूदार किनारे के

बीच में बहती है। ये किनारे सदा गिरते रहते हैं और कभी कभी तो प्रधान धारा छः छः मील इधर उधर चली जाती है। ब्रह्मपत्र की इस परिवर्तनशील सीमा के अन्दर किसी प्रकार की स्थाई खेती नहीं होती और न वहाँ कोई स्थाई निवास-स्थान है। यहां उन किसानों की केवल छोटी छोटी झोपड़ियां दिखाई पड़ती हैं जो इस 'चूर' जमीन पर जाड़े के मौसम में तेलहन बोते हैं। परन्तु इसके आगे कॉंर की सतह ऊंची हो जाती है और बालू के स्थान पर किसानों के जोते गये खेत और बस्तियाँ दिखाई पड़ती हैं। ब्रह्मपुत्र के किनारे के प्रधान नगरों के नाम ये हैं:—धुब्री-जो गोआलपाड़ा जिले का प्रधान स्थान है, गोआलपाड़ा, गौहाटी, तेजपूर, सिलघाट और विश्वनाथ से लेकर सदिया तक की २०० मील की दूरी में एक भी शहर इसके किनारे नहीं है। इस नदी के आस पास सबसे अधिक घने बसे स्थान कामरूप का उत्तरी भाग, जारहाट और शिवसागर है तथा सबसे कम आबाद स्थान डेरंग तेजपूर का पश्चिमी भाग, नवगांव का दक्षिणी भाग तथा लखीनपूर है। यह नदी बहुत गहरी तथा चौड़ी है अतः बड़े बड़े

व्यापारिक स्टीमर डिब्रूगढ़ तक जाते हैं तथा छोटे स्टीमर तो सदिया तक भी चले जाते हैं। इसकी अनेक सहायक नदियों में भी स्टीमर चलते हैं। इस प्रकार धार्मिक तथा व्यापारिक दोनों दृष्टियों से ब्रह्मपुत्र आसाम की सबसे पवित्र और उपयोग नदी है।

सूरमा नदी

यह आसाम की दूसरी प्रसिद्ध नदी है तथा ब्रह्मपुत्र के नीचे यही प्रधान नदी है। यह आसाम के दक्षिणी भाग में बहती है तथा इसी नदी के कारण इस स्थान का नाम भी सूरमा की घाटी हो गया है। यह नदी मणिपूर के उत्तर में स्थित बैरेल श्रेणी से निकलती है तथा मणिपूर, काचार और सिलहट ज़िलों से होती हुई बंगाल की ओर चली जाती है। इसका दूसरा नाम बराक (नदी) भी है अतः मणिपूर राज्य में इसे बराक नदी के नाम से ही स्मरण करते हैं। इस नदी का ठीक उद्गम स्थान 'जापवो' नामक पर्वत श्रेणियों से समझना चाहिये जिसके उत्तरी किनारे पर अंगामी नागा नाम की जातियाँ बसी हुई हैं। इस स्थान से निकल कर यह दक्षिण की ओर बहती है तथा
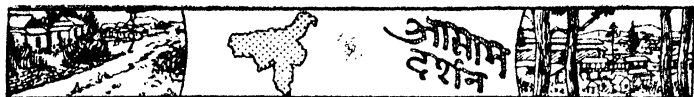
धीरे धीरे पश्चिम की ओर मुड़ती हुई मणिपूर राज्य में बहती है। ब्रिटिश राज्य की सीमा में आने के पहिले मणिपूर में इस नदी में आकर अनेक सहायक नदियां मिलती हैं। तिपाईमुख नामक स्थान में जहां मणिपूर राज्य, का काचार जिला तथा लुशाई की पहाड़ियाँ एकत्र मिलती हैं। यह नदी शीघ्रता से उत्तर की ओर मुड़ जाती है और लखीपूर के आसपास भुवन की पर्वत श्रेणी से निकल कर बड़ी टेढ़ी मेढ़ी चाल से चलती हुई, पश्चिम दिशा की ओर मुड़ती हुई काचार जिले में बहने लगती है। काचार जिले की पश्चिमी सीमा के पास बदरपूर के नीचे थोड़ी दूर पर यह नदी दो शाखाओं में विभक्त हो जाती है (१) उत्तरी शाखा तथा (२) दक्षिणी शाखा यह उत्तरी-शाखा सूरमा के नाम से विख्यात है और खासी की पहाड़ियों के नीचे से बहती हुई पश्चिम की ओर मुड़ती जाती है। यहां पर इसके तट पर स्थित सिलहट तथा छाटक ये दो शहर प्रसिद्ध हैं। यह सुनामगंज से फिर दक्षिण की ओर बहने लगती है। सूरमा की दक्षिणी शाखा का नाम पहिले कुसी आरा है, यह दक्षिण पश्चिम की ओर

बहती है और मनु नदी के संगम के पास यह दक्षिणी शाखा पुनः दो शाखाओं में विभक्त हो जाती है। इन शाखाओं में दक्षिणी शाखा सम्पूर्ण नदी का मूल नाम बराक धारण कर लेती है और नबीगंज के पश्चिम में थोड़ी दूर पर सूरमा नदी से जाकर मिल जाती है। इसकी दूसरी (उत्तरी) शाखा जो पहिले बीबी आना तथा पश्चात् कालनी के नाम से प्रसिद्ध है सूरमा तथा बराक के संगम के उत्तर में अबीदाबाद नामक स्थान में सूरमा नदी से मिल जाती है।

सूरमा नदी की उत्तर दिशा में बहने वाली सहायक नदियां जीरी, जतिंगा, लुबा, हरी, पियैन, बोगा जदुकाता और महेशकाली हैं और दक्षिण की सहायक नदियों के नाम सोनाई, धलेश्वरी, जुरी, मनु और खवांही आदि है। मननसिंह जिले में भैरव बाजार नामक स्थान में यह ब्रह्मपुत्र नदी से मिल जाती है और वहां से मेगना के नाम से प्रसिद्ध हो जाती है। बरसात के दिनों में सूरमा नदी में सिलचर तक स्टीमर जा सकते हैं परन्तु गर्मी में छाटक के आगे नहीं जा सकते हैं। बड़ी बड़ी नावें इस नदी में सिलचर के
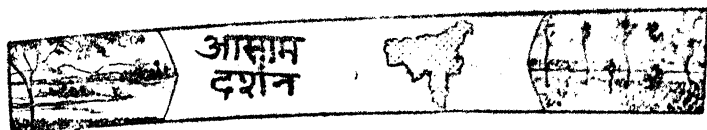
पूर्व बांसकण्डी तक चली जाती है। इस प्रकार यह नदी भी व्यापार के लिये बड़ी ही उपयोगी है। दिबांग और दिहांग-ये नदियां तिब्बत के पहाड़ों से निकलती हैं तथा सदिया के पास आकर ब्रह्मपुत्र नदी में मिल जाती है। ये नदियां बहुत बड़ी हैं अतः इनकी गिनती ब्रह्मपुत्र की प्रधान सहायक नदियों में की जाती है।

भरेली

यह नदी हिमालय पहाड़ से निकलती है तथा तेजपूर के पूर्व में ब्रह्मपुत्र से आकर मिल जाती है। मनास नदी भूटान के उत्तर में स्थित पहाड़ियों से निकलती है। यह भूटान को पार कर आसाम में गोआलपाड़ा ज़िले में प्रवेश करती है और जोगीघोपा के पास आकर ब्रह्मपुत्र से मिल जाती है। दिहिङ्ग नदो यह ब्रह्मपुत्र की दक्षिणी सहायक नदियों में प्रधान है। यह शिवसागर तथा लखीमपूर ज़िले की सीमा पर ब्रह्मपुत्र से मिल जातो है। धनसिरी-यह भी ब्रह्मपुत्र की दक्षिणी सहायक नदी है। यह मणिपूर के उत्तर में स्थित पहाड़ियों से निकल कर शिवसागर जिले में धनसिरीमुख के पास ब्रह्मपुत्र में मिल जाती

है। इसके अतिरिक्त बोर नदी, सुबन्सिरी, दिसांग तथा दिसोई आदि भी ब्रह्मपुत्र की सहायक नदियां हैं परन्तु ये छोटी हैं।

सूरमा नदी की बराक तथा कुसीआरा नाम से पुकारी जाने वाली भिन्न भिन्न शाखाओं का वर्णन पहिले किया जा चुका है। बोगापानी और यदुकाता ये दोनों सूरमा की सहायक नदियाँ हैं। ये खासी और जयन्तिया की पहाड़ियों से निकलती हैं और भिन्न भिन्न स्थानों में जाकर सूरमा से मिलती है। महेशकाली गारो की पहाड़ियो से निकलती है। सोनाई और धलेश्वरी लुशाई की पहाड़ियों से तथा लैंगेई जुरी और मनू नदियाँ त्रिपुरा की पहाड़ियों से निकलती हैं। ये सब नदियाँ सूरमा की सहायक नदियाँ हैं। आसाम की प्रधान नदियाँ यही हैं।

———

जलवायु

आसाम की जलवायु बहुत ही नम है। इसका कारण यह है कि यहां अधिक घने जंगल हैं तथा यहां के मैदानों में वर्षा का पानी सदा जमा रहता है। मैदान के पास ही ऊंची पहाड़ियां हैं जिसके कारण हवा ठंडी होकर पानी बरसाती है। यही कारण है कि यहां साल भर तक आकाश में बादल घिरे रहते हैं जब कि भारत के अन्य प्रान्तों में विशेषतः कड़ी धूप रहा करती है। यहां बसन्त ऋतु में ही घनघोर वर्षा प्रारम्भ हो जाती है जब कि अन्य प्रान्तों में प्रचण्ड गर्मी पड़ा करती है। इतनी जल्दी पहिले ही वर्षा शुरू होने का कारण मानसून नहीं है बल्कि यहाँ के स्थानीय तूफान और वास्प-निर्माण हैं। इन्हीं कारणों से आसाम में केवल दो ही ऋतु होते हैं (१) जाड़ा (२) बरसात नवम्बर मास से लेकर फरवरी तक यहां जाड़ा पड़ता है और उस समय यहां की जलवायु बड़ी सुहावनी होती है। साल के किसी भी भाग में यहां अधिक गर्मी नहीं पड़ती। उपर्युक्त महीनों को छोड़ कर वर्ष के शेष आठ महीनों में यहां बसात रहती है। इन महीनों में आकाश में सदा बादल घिरे रहते हैं तथा जाड़े के दिनों में सदा कुहरा पड़ा करता है।

तापक्रम

यहां की वर्षा और हवा में अधिक नमी होने के कारण यहां का तापक्रम ८३ अंश फारेनहाइट से अधिक ऊंचा नहीं होता है। नमी का असर सरदी पर भी पड़ता है अतः जाड़े में भी तापक्रम ६४ अंश फारेनहाइट से कम नहीं होता है। आसाम के उत्तरी पूर्वी भाग में शिवसागर के आसपास इस प्रान्त के पश्चिम में स्थित धुब्री की अपेक्षा जाड़े का तापक्रम कुछ कम और बरसात का तापक्रम कुछ अधिक होता है। इन दोनों स्थानों की अपेक्षा सिलचर का तापक्रम जाड़े और बरसात में सदा अधिक रहता है।

हवायें

ब्रह्मपुत्र की घाटी तथा सूरमा घाटी में हवायें भिन्न भिन्न दिशाओं से बहती है। सूरमा की घाटी में गंगा के डेल्टा के समान हवायें दक्षिण-पश्चिम से चलती हैं परन्तु अप्रैल और मई के महीनों में हवायें उत्तर पूर्व से बहती हैं। आसाम श्रेणी के पश्चिमी भागों में दक्षिणी-पश्चिमी हवा जो बंगाल की खाड़ी से उठती है बसन्त ऋतु में सदा एक ही दिशा से बहा
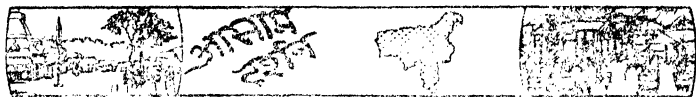
करती है। बरसात में कभी कभी हवा की दिशा दक्षिण और दक्षिण-पूर्व तथा उत्तर की ओर हो जाती है। ब्रह्मपुत्र की घाटी में इसके विपरीत हवायें जाड़े के दिनों में तथा बसन्त ऋतु में सदा उत्तर-पूर्व से चलती हैं परन्तु जुलाई और अगस्त में जब मानसून का ज़ोर अधिक होता है उस समय हवायें दक्षिण-पश्चिम से बहती हैं। गोआलपाड़ा के आस पास आसाम घाटी के निचले भाग में जाड़े के अधिक अंशों में हवायें उत्तर पूर्व से बहती हैं और साल के शेष भागों में हवायें सदा दक्षिण-पश्चिम से चला करती हैं। इस प्रकार से आसाम घाटी की मौसमी हवायें दक्षिण-पश्चिम मानसून की वे शाखायें हैं जो मुड़ कर इस घाटी में चली आती हैं। सूरमा तथा ब्रह्मपुत्र घाटी में जाड़े तथा बरसात के दिनों में कभी कभी हवा बिल्कुल बन्द सी हो जाती है परन्तु यह दशा बहुत समय तक नहीं रहती।

बसन्त ऋतु में अधिकतर तूफान उठा करते हैं जिसमें हवा बड़े ज़ोरों से बहती है और बहुत अधिक पानी बरसता है। घाटियों तथा शिलाङ्ग पठार की

पहाड़ियों के कारण ये तूफान प्रायः उठा करते हैं अतः आसाम की घाटी के निचले भागों में इनका प्रकोप अधिक होता है। बरसात के अन्त में बंगाल की खाड़ी से प्रभंजन उठा करते हैं जिसके कारण आसाम श्रेणी के पश्चिमी भागों में और पहाड़ के आस पास के मैदानों में अधिक पानी बरसता है।

नमी और बादल

गंगा के डेल्टा के समान ही आसाम के भिन्न-भिन्न भागों में हवा में नमी पाई जाती है। परन्तु बरसात के दिनों में यहां पर गंगा के डेल्टा से नमी अधिक पाई जाती है। साल भर का औसत लेने पर शिवसागर की जलवायु में जितनी नमी पाई जाती है उस से अधिक नमी भारत के किसी भी मेटिओरोलाजिकल स्टेशन पर नहीं पाई जाती। इतनी अधिक मात्रा में नमी केवल दार्जिलिंग में ही पाई जाती है। शिवसागर में आकाश बादलों से सदा आच्छादित रहता है। भारत के किसी भी अन्य स्थान में इतने अधिक बादल नहीं दिखाई पड़ते। इसका कारण संभवतः जाड़ों के दिनों का घना कुहरा तथा बसन्त ऋतु की अधिक
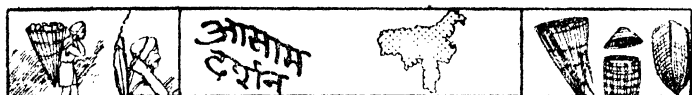
वृष्टि है। ब्रह्मपुत्र घाटी की अपेक्षा सूरमा की घाटी में कुहरा कम पड़ता है तथा उतना घना भी नहीं होता। सूरमा घाटी के पूर्वी भागों में जहां सिलचर बसा है पश्चिमी भागों की अपेक्षा बहुत ही कम कुहरा पड़ता है।

वर्षा

आसाम में भिन्न भिन्न स्थानों पर जितनी वर्षा होती है उनके आँकड़े देखने से पता चलता है कि मार्च से मई तक के महीनों में ब्रह्मपुत्र और सूरमा की घाटियों में वर्षा बहुत अधिक होती है जब कि उत्तरी भारत बिल्कुल सूखा पड़ा रहता है। ब्रह्मपुत्र घाटी के बीच के भाग में अर्थात गोहाटी, तेजपुर और नवगांव में घाटी के पश्चिमान्त और पूर्वान्त दोनों छोरों की अपेक्षा कम पानी बरसता है। सन् १६३४ ई० में नवगांव में औसत वार्षिक वर्षा ८१२'५ इंच हुई जब कि उसी साल गोआलपाड़ा और शिवसागर में वर्षा का वार्षिक औसत क्रमशः १०५'७६ तथा १०२'२६ इञ्च था। इसका कारण यह है कि इस (मध्यभाग) भाग के दक्षिण में शिलाङ्ग पठार का सब से ऊंचा भाग स्थित है जिसके दक्षिणी किनारे पर चेरापूंजी के पास

तथा पठार के केन्द्र स्थान पर मानसूनी हवाओं का सारा पानी बरस जाता है। इसलिये जब ये हवायें आसाम घाटी के मध्य भाग में प्रवेश करती हैं तब वे सूखी रहती हैं और पानी कम बरसता है। इसके विपरीत घाटी के पश्चिमी भाग में गोआलपाड़ा तथा धुब्री के आसपास के स्थान दक्षिणी-पश्चिमी मानसून के ठीक रास्ते में पड़ते हैं अतः यहां पानी अधिक बरसता है। इसी तरह पूर्वी भाग (शिवसागर के आसपास) में भी बङ्गाल की खाड़ी की मानसूनी हवायें शिलाङ्ग पठार के पूर्वी भागों के कम ऊंचा होने के कारण उन्हें पार कर प्रवेश करती हैं और पश्चिमी भाग की भाँति ही यहाँ भी अधिक पानी बरसता है।

सूरमा की घाटी में आसाम घाटी की अपेक्षा बसन्त ऋतु में पानी अधिक बरसता है।

गारो की पहाड़ियों का प्रधान स्थान तुरा श्रेणी के उत्तरी भाग में बसा है। इस कारण मानसूनी हवाओं से यह स्थान सुरक्षित है और यहाँ पानी कम बरसता है। इसी तरह कोहिमा भी जावप की चोटी के ठीक
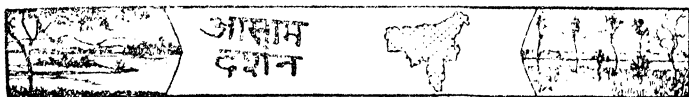
उत्तरी सिरे पर बसा हुआ है अतः यह भी मानसूनी हवाओं से वंचित रहता है।

शिलाङ्ग जो चेरापूंजी से केवल ३० ही मील की दूरी पर है 'शिलाङ्ग प्लेटो' के उत्तरी किनारे पर बसा है। परन्तु इतने समीप में रहने पर भी जहाँ चेरापूंजी में संसार सब से अधिक (५०० इञ्च तक) वर्षा होती है वहाँ शिलाङ्ग में अधिक से अधिक ८० इञ्च तक वर्षा होती है। इसका कारण यह है कि शिलांग 'रेन शैडो' में है और दक्षिण में शिलाङ्ग से शिलांग पठार, १००० फीट ऊंचा खड़ा है। अतः मानसून की हवायें इस ऊंची पर्वतीय दिवाल से टकरा कर सारा पानी दक्षिण की ओर ही (जिधर चेरापूंजी है) बरसा देती हैं। अतः जब ये हवायें 'दिवाल' के उत्तरी किनारे पर उतरती हैं तब सूखी रहती हैं। इसीलिये शिलांग में पानी चेरापूंजी की अपेक्षा बहुत ही कम बरसता हैं। इसके विपरीत चेरापूंजी ऐसे स्थान पर बसा है जहां पानी बरसने के सब साधन विद्यमान हैं। ठीक मैदान के पास ही ४४५५ फीट की ऊंचाई पर चेरापूंजी स्थित है और इसके दोनों तरफ २००० फीट ऊंची पहाड़ की

उतराई है। इसलिये जो दक्षिणी पश्चिमी हवा बङ्गाल की खाड़ी से उठती है वह सूरमा घाटी के पानी से डूबे हुये समतल स्थानों से होते हुये चेरापूंजी के तंग स्थान में आकर शिलांग पठार के दक्षिणी सिरे के पास पहुंचती है जहां पर उसे सीधे ऊपर उठना पड़ता है। इस कारण गर्मी के महीनों में इस पठार का दक्षिणी भाग भाप भरी हवाओं से घिर जाता है और इन हवाओं को ४००० फुट ऊंचा उठना पड़ता है जिस से ये हवायें बिल्कुल ठंडी होकर चेरापूंजी में प्रचुर पानी बरसा देती हैं।

जंगल

आसाम में जंगलों की संख्या बहुत अधिक है। आसाम का कोई भी ऐसा जिला नहीं जिसमें जंगल न हो। पहाड़ी प्रान्त होने के साथ ही साथ यह जंगलों से भी युक्त है। प्रकृति देवी ने इस विषय में आसाम के ऊपर बड़ी कृपा की है। यद्यपि इन जंगलों के होने से आसाम की बढ़ती आबादी को अन्न पैदा करने के
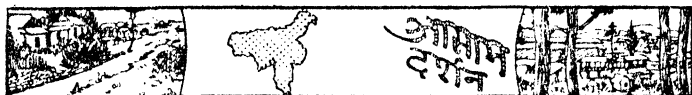
लिये खेत मिलना कठिन हो रहा है। इन से सरकार को बहुत बड़ी आमदनी है।

जङ्गल का विस्तार

यों तो आसाम में सर्वत्र जंगल पाये जाते हैं परन्तु आसाम घाटी के ऊपरी भाग में जिसमें लखीमपुर का पूरा जिला और शिवसागर तथा डैरेंग जिले के कुछ भाग सम्मिलित हैं—जंगल अत्यन्त अधिक हैं। यदि इस प्रदेश को जंगली देश कहें तो कुछ अत्युक्ति न होगी। यह स्थान घने और सदा हरे रहने वाले वृक्षों से घिरा हुआ है। इसकी तुलना में इस घाटी का मध्य तथा नीचे का भाग एक खुला हुआ मैदान है। इस विस्तृत मैदान में केवल घास ही होती है। परन्तु पहाड़ियों के आसपास ऊंचे स्थानों तथा निर्जन पहाड़ियों के ऊपर जंगलों की सत्ता विद्यमान है परन्तु सूरमा की घाटी में ऐसी दशा नहीं है। यहां जंगल बहुत ही कम हैं। केवल सिलहट जिले के दक्षिणी भाग की पहाड़ियों के ऊपर जो टिपरा तक फैली हुई हैं और दक्षिण-पूर्व दिशा की ओर लॅंगई तथा सिंगला नदियों की विशाल घाटी में १०३ वर्ग मील जमीन में जंगल फैला हुआ है।

काचार जिले के समस्त दक्षिणी भाग में जो लुशाई पहाड़ियों की सीमा पर हैं जंगल पाये जाते हैं। इन्हीं जंगलों से सिलहट के बहु संख्यक लोग अपनी लकड़ी की आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं। गारो की पहाड़ियों में भी जंगल का विस्तार कुछ कम नहीं है। काचार तथा सिलहट के जिलों में आबादी की सतत बृद्धि के कारण खेती के लिए जमीन की बड़ी कमी थी। अतः सन् १९०७ ई० २८ वर्ग मील जंगल को काचार ज़िले में तथा ६७ वर्गमील जमीन में फैले जंगल को सिलहट जिले में काट कर के खेती के काम के लिये जमीन तैयार की गई। जैसा कि पहले लिखा गया है प्रान्त के प्रत्येक जिले में जङ्गल पाये जाते हैं।

बनस्पति

आसाम में भिन्न भिन्न प्रकार की लकड़ी उपलब्ध होती है। अजार, साम, विसु, साल, नहोर, सोप तथा गोहोर आदि के पेड़ सखुआ के समान टिकाऊ होते हैं और घर और पुल बनाने के काम में आते हैं।

गोमारी, ओटेङ्गा, सोनाली, पोमा तथा अमारी आदि लकड़ी भी उपयोगी हैं परन्तु ये इतनी मजबूत नहीं हैं।

गोआलपाड़ा जिले में की 'हाल' नामक लकड़ी को नदी में बहा कर पूर्वी बंगाल भेजा जाता है। यह लकड़ी बहुत टिकाऊ होती है। इसके खम्भे पचासों वर्ष तक सुरक्षित रह सकते हैं। इस लकड़ी से बड़ी बड़ी व्यापारिक नावें भी तैयार की जाती हैं जिनका वज़न १५० टन तक होता है। कुछ दूसरे पेड़ भी हैं जो बहुत मोटे होते हैं तथा इनका धड़ १२-१८ फीट तक मोटा होता है। नहोर का पेड़ बड़ा सुन्दर होता है। यह नुकीले रूप में ऊपर बढ़ता है। इसकी पत्तियां घनी और काली हरी होती हैं। इसका फूल सफेद होता है। खजूर के पेड़ भी बगीचों में पाये जाते हैं परन्तु इसके फल का कुछ उपयोग नहीं होता है। इमली तथा पपीता के पेड़ बगीचों में अधिक पाये जाते हैं। इन फलों को सर्वसाधारण खूब खाते हैं।

केला आसाम का बड़ा प्रसिद्ध फल है तथा प्रत्येक मनुष्य की वाटिका में पाया जाता है। यह बारहों महीने फलता है। इसके अनेक भेद हैं। माल भोग

केला बड़ा अच्छा होता है। लोग इसे बड़े चाव से खाते हैं। जहजे, सम्पा, हुन्द मनोहर ये भी केले के भेद ही हैं और अच्छे होते हैं परन्तु जाति, पर और भीम प्रकार के केले उतने अच्छे नहीं हैं। ये केले यों ही जंगल में पैदा हुआ करते हैं। आम भी बहुतायत से होता है परन्तु उतना अच्छा नहीं होता। नासपाती तथा बेर भी होते हैं। कटहल का फल तरबूज़ के समान बड़ा होता और खूब फलता है। यहां के निवासी इसे बड़े चाव से खाते हैं। एक वृक्ष विशेष यहां ऐसा होता है जिसके छाल से रस्सियां बनाई जाती हैं और ये रस्सियां जंगली हाथियों को पकड़ने के काम में आती हैं।

बाँस यहाँ बहुतायत से पाया जाता है। घर बनाने में और लकड़ी के स्थान में इसका बड़ा प्रयोग किया जाता है। यह बांस बहुत मोटा होता है। अधिक दिन के हो जाने पर इस में फूल भी निकलने लगते हैं। बांस कई प्रकार का होता है। १—जन्थी जो छत जंगला बनाने तथा स्थान घेरने के काम में लाया जाता है। २—बलुका लम्बा तथा मज़बूत होता है। इसके खम्भे बनाये जाते हैं जो बड़े टिकाऊ होते हैं। ३—
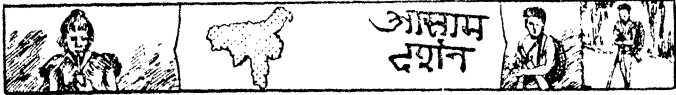
कटक एक कटैला बाँस है। नागा लोग इसे भाले के स्थान पर काम में लाते हैं। ४—बेज़ल बाँस की विशेषता यह है कि यह ५० से लेकर ७० फीट तक लम्बा होता है तथा इसमें गांठें बड़ी लम्बी लम्बी दूरी पर हुआ करती है। यह बिलकुल सीधा होता है १२ इंच तक मोटा होता है।

यहां पर एक विशेष प्रकार का ताड़ का वृक्ष पाया जाता है जिसे अँग्रेज़ी में 'रैटेन' कहते हैं। यह वृक्ष लम्बा और पतला होता है तथा पास ही पास इसमें बहुत सी गांठें होती हैं। यह प्रान्त के प्रत्येक भाग में बहुतायत से नीची ज़मीन में पाया जाता है। इसके पत्तों की चटाइयाँ तथा छाल की रस्सियाँ बनाई जाती हैं। यह कँटीला भी होता है। इसकी पत्तियां गोली होती हैं और हैट बनाने के काम में आती हैं।

सुपारी का पेड़—यह आसाम में बहुतायत से पाया जाता है। यह प्रायः उद्यान में लगाया जाता है और ताड़ के समान बड़ा ही विशाल वृक्ष होता है। इसकी लम्बाई ४० से ५० फीट तक होती है। यह बिल्कुल सीधा तथा पतला होता है। इसके धड़ में शाखायें

तथा पत्तियाँ नहीं होती हैं। एक पेड़ में २०० से ३०० तक फल गुच्छों में फला करते हैं।

यहाँ रबर का भी पेड़ बहुतायत से पाया जाता है। यह सब पेड़ों से बड़ा होता है। इसका धड़ ७४ फीट मोटा तथा इसकी ऊंचाई १००० फीट और इस की शाखाओं का क्षेत्रफल ६१० फीट होता है। रबड़ डैरेङ्ग, नवगांव तथा लखीमपुर जिलों में पाया जाता है। इससे रबर तैयार किया जाता है जो 'इण्डिया रबर' के नाम से प्रसिद्ध है। अब सरकार ने नये रबर के पेड़ भी लगाना शुरू कर दिया है। इस से आसाम को बड़ी आमदनी है।

यहां पर एक प्रकार का ऐसा वृक्ष होता है जिससे तेल निकाला जाता है। इसको हमिल्त कहते हैं। दूसरा पेड़ जिसे साचे कहते हैं ऐसा है कि उसकी छाल से कागज़ का काम लिया जाता है। प्राचीन समय में इसी की छाल पर पुस्तकें लिखी जाती थीं। आसामियों की प्रसिद्ध ऐतिहासिक पुस्तकें इसी की छाल पर लिखी गई हैं। मेला नामक वृक्ष के फल में एक ऐसी स्याही होती है जिससे लिखने पर कोई

चीज़ कभी मिट नहीं सकती है। मदार तथा आसु बृत्त की छाल का रंग लाल होता है। यहाँ भीमरुत्ती नाम का एक विचित्र पेड़ होता है जिसकी छाल से लाल रंग बनाया जाता है। इसका उपयोग होली के उत्सव में होता है। एक पेड़ यहाँ इस प्रकार का है कि उसकी छाल से मजबूत डोरा निकाला जाता है तथा उससे कम्बल तथा मछली मारने का जाल बुना जाता है। यहाँ भांग का पौधा होता है। जूट के पौधे का यहाँ सर्वथा अभाव है। जिन बृत्तों पर रेशम के कीड़े पाले जाते हैं ऐसे पेड़ स्वतः जंगलों में झुण्ड के झुण्ड खड़े दिखाई पड़ते हैं। एरण्ड का बृत्त भी होता है जिससे एरी नामक रेशम का कीड़ा पाला जाता है। अहकुरी के पेड़ से सुन्दर रेशम पैदा होता है। यहां जूरा नामक अंजीर का भी पेड़ होता है जिस पर लाह का कीड़ा पाला जाता है।

लाह

आसाम के जंगलों में लाह पाई जाती है परन्तु लाह कृत्रिम उपायों से भी तैयार कराई जाती है। लाह का कीड़ा अंजीर के बृत्त पर पाला जाता है।

ये वृक्ष कामरूप तथा डैरेंग ज़िले के गांवों में लगाये जाते हैं। प्रधानतया लाह घड़ो के आकार में बनाकर बाहर को भेजा जाता है। गत तीन वर्षों में २१,००० मन लाह बाहर भेजी गई।

रेशम

आसाम के बनस्पतियों में रेशम की भी गिनती है। यहां के जंगलों में शहतूत और रेंड़ के पेड़ के ऊपर भिन्न भिन्न प्रकार के रेशम के कीड़े पाले जाते हैं जो रेशम को तैयार करते हैं। यह रेशम बहुत ही सुन्दर और मजबूत होता है। इसका विस्तृत वर्णन अन्यत्र किया जा चुका है।

नारंगी और नींबू

खासी की पहाड़ियों में नारंगियाँ पैदा होती हैं और ये बाहर भेजी जाती हैं। परन्तु सिलहट में बड़ी सुन्दर तथा स्वादिष्ट नारंगियाँ प्रचुर मात्रा में पाई जाती हैं। ऊंचे पठारों पर नींबू भी अधिक संख्या में पैदा होते हैं परन्तु ये इतने अधिक नहीं होते कि बाहर भेजे जायँ। सन् १८६७ ई० के भीषण भूकम्प के कारण नारंगी तथा नींबू के बगीचों को बड़ी क्षति पहुंची
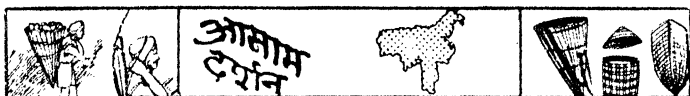
परन्तु इस व्यवसाय की उन्नति के लिये फिर से प्रबन्ध हो रहा है। सन् १९०१-२ ई० में ७४,००० मन नारंगियाँ बाहर भेजी गईं।

केला

आसाम के पहाड़ों पर केले भी बहुत पैदा होते हैं। ये केले बड़े ही स्वादिष्ट और सस्ते होते हैं।

पशु और पक्षी

जिस प्रकार आसाम में बनस्पतियों की अधिकता है उसी प्रकार वहां पशु पक्षी भी पाये जाते हैं। पशु सृष्टि की अनेक रूपता वहाँ स्पष्ट रूप से प्रतीत होती है। छोटे से लेकर बड़े तक जितने पशु पक्षी भारत में उपलब्ध हैं वह प्रायः सभी आसाम में पाये जाते हैं। पक्षियों में तोता से लेकर मयूर तक तथा पशुओं में गीदड़ से लेकर हाथी तक सब प्रकार के पक्षी और पशु यहां के जंगलों को सुशोभित कर रहे हैं। यदि चीता शेर तथा गेंडा जैसे हिंसक जीव अपनी चिग्घाड़ से मनुष्यों के हृदय में कम्पन्न उत्पन्न कर देते हैं तो

मैदान में चरने वाली भोली भाली हिरनें अथवा ऋषियों के 'डटजद्वार' को रोधन करने वाले विचरण शील मृग किसके हृदय में विश्वास का संचार नहीं करते। यदि खूंख्वार चीता किसानों के जानवरों को लेजाकर उन्हें कष्ट प्रदान करता है तो हाथी अपने बहुमूल्य दाँत तथा हड्डी के दाम से उन्हें प्रभूत धन भी प्रदान करता है। कौवे 'कांव' कांव' से जिनके कर्ण कुहरों में ज्वर उत्पन्न हो जाता है उन्हीं के श्रुति पुट मयूरों की मधुर केका ध्वनि सुन कर कभी तृप्त नहीं होते। कहने का तात्पर्य यह है कि आसाम में छोटे से लेकर बड़े तक सब प्रकार के पशु पक्षी पाये जाते हैं। यहां अनेक प्रकार के जानवर और चिड़ियां देखते ही बनती हैं। अतः हम समस्त आसाम प्रान्त को विशाल "ज़ू" कहें तो इसमें कुछ भी अत्युक्ति न होगी।

भारत के अन्य प्रान्तों को भांति आसाम में भी कौए बहुत पाये जाते हैं। ये 'कांव' 'कांव' करते हुये प्रान्त भर में सर्वत्र दृष्टिगोचर होते हैं। चमगादड़ भी प्रचुर मात्रा में हैं। ये रात को उड़ा करते हैं परन्तु बाज़ और गृद्धों की संख्या बहुत कम है। आसाम के
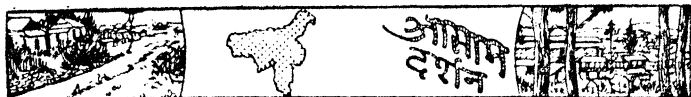
जंगलों में मयूर और एक अन्य पत्ती जिसे 'फ़ेज़ेण्ट' कहते हैं बहुत प्राप्त होते हैं। आसामी लोग मयूर को पकड़ कर बाज़ार में बेचते हैं। ये दो प्रकार के होते हैं। जंगली (फाउल) तित्तिर, कबूतर तथा तोता बहुत अधिक संख्या में पाये जाते हैं। जङ्गली हंसिन जाड़े के दिनों में मैदान में दिखाई पड़ती है। बत्तक तथा जंलीय अंडा देने वाली मुर्गियों का भी अभाव नहीं है। बत्तक नदी तथा तालाब के किनारे बहुत पाये जाते हैं। पाश्चात्य दर्शन के प्रतिनिधि स्वरूप कौशिक महाराज भी यहां कुछ कम नहीं हैं। इनकी आवाज़ रात्रि में सर्वत्र सुनाई पड़ती है। इसके अतिरिक्त अन्य छोटे छोटे पत्ती भी यहां पाये जाते हैं।

जानवरों की भी संख्या यहां अधिक है। लोमड़ी घूमती फिरती सदा दिखाई पड़ती है। गीदड़ यू० पी० की भांति आसाम में भी बहुत पाया जाता है। यह अधिक रात हो जाने पर गांवों के समीप में आकर बड़ी बुरी आवाज़ करता है तथा लोगों की नींद हराम किये रहता है।

आसाम के हिंसक जीवों में चीता और शेर सबसे

प्रसिद्ध हैं। ये आसाम के जंगलों में बहुतायत से पाये जाते हैं शेर बहुत बड़ा खतरनाक जानवर है। यह रात को पहाड़ पर से उतर आता है तथा मैदान के जानवरों को लेकर चला जाता है। रोज़ ही एक घटना सुनाई पड़ती है। ये जङ्गलों में चरने के लिये जाने वाली गायों तथा बछड़ों को लेकर चम्पत हो जाते हैं। ये पशुओं की हिंसा से ही संतुष्ट नहीं होते बल्कि मनुष्यों का भी खून चूसते हैं। शिवसागर जिले में एक मनुष्य भक्षी शेर बारह दिन तक सड़क पर आने जाने वाले यात्रियों को मार कर खा जाता रहा। अन्त में यह एक साहसी आदमी के द्वारा मारा गया। सरकार ने इस आदमी को इस कार्य के लिये दूना पुरस्कार दिया। सरकार पहिले शेर को मारकर सिर सहित उसका खाल लाने के लिये प्रत्येक मनुष्य को २५) रुपया पुरस्कार दिया करती थी। इस प्रकार धीरे धीरे शिकारियों की गोली के शिकार होने के कारण इस हिंसक जीव की संख्या घट रही है।

जङ्गल में जङ्गली भैंसें भी पाये जाते हैं। ये बड़े खतरनाक होते हैं। सांड़ बड़े भयानक तथा लम्बे सींग वाले होते हैं। ब्रह्मपुत्र के किनारे ये झुण्ड के

झुण्ड चरते हुये दिखाई पड़ते हैं। पालतू भैंसे चरते हुये दृष्टि गोचर होते हैं। यहां अनेक प्रकार के मृग होते हैं जो मैदानों में चरते हुये पाये जाते हैं। हिरणें उत्तरी पहाड़ियों के पास मिलती हैं। साही नामक जानवर यहां जङ्गलों में पाया जाता है। इसके शरीर पर लम्बे लम्बे कांटे होते हैं जिसके द्वारा यह अपनी रक्षा करता है। यह खतरनाक होता है। आसामी लोग इसके मांस को खाते हैं। इस प्रान्त में भी भारत के अन्य प्रान्तों की भांति बन्दर प्रचुर मात्रा में पाये जाते हैं परन्तु विशेषकर छोटे भूरे रंग के बन्दर अधिक होते हैं। ये बन्दर अनेक प्रकार के होते हैं। सफेद रंग का छोटा बन्दर बड़ा सुन्दर होता है। यहां के जंगली कुत्ते दो प्रकार के होते हैं। पहिला बड़ा होता है तथा मृगों का शिकार करता है और दूसरा आकार में छोटा होता है। ये दोनों प्रकार के जंगली कुत्ते बड़े ही शिकारी होते हैं। यहां जंगली बिल्लियां भी पाई जाती हैं जो तीन प्रकार की होती हैं। पहिली विचित्र शेर के रंग के समान रंग वाली होती है। दूसरी चीता के समान रंग वाली तथा तीसरी भूरी होती है। यहां के जंगली सुअर

बड़े ही खतरनाक होते हैं। ये विशेषकर पहाड़ों में पाये जाते हैं। नागा जाति के लोग इनके दांत के पुरस्कार की वस्तु समझते हैं तथा वीरता के उपलक्ष में उसे दूसरे को देते हैं। सूकरो (सुअरी) सीधी सादी जानवर है। इसे कचारी मिरी तथा अन्य पहाड़ी जाति के लोग खाते हैं। काले भालू भी मिलते हैं। ये अपने खूंख्वारी पने के लिये प्रसिद्ध हैं। पेड़ पर चढ़ जाने पर भी इनसे बचना कठिन है। आसाम के जंगलों में गैंडा भी पाया जाता है जो भारत के अन्य प्रान्तों में दुर्लभ है। इसकी विशेषता यह है कि इसके नाक पर सींग होता है तथा इसका चमड़ा बड़ा ही मोटा होता है जिस पर साधारणतया गोली का कुछ भी असर नहीं होता है। यहां के खच्चर छोटे छोटे होते हैं। इन्हें आसामी लोग अपने घरों में पालते हैं। यहां भूटानी खच्चर भी पाये जाते हैं जो बड़े मज़बूत तथा उपयोगी होते हैं। मणिपूर में ही अच्छे खच्चर होते हैं। यहां के सर्प बड़े विशाल भयंकर तथा विषैले होते हैं। ये जङ्गलों में प्रायः बांस की जड़ों में लिपटे रहते हैं। यहां कोबरा जाति का सर्प विशेष रूप से पाया जाता है। यह बड़ा विषैला होता है। पाइ-

थन जाति का सर्प बड़ा ही विशाल तथा भयंकर होता है। यह हिरण को भी निगल जाता है। यहां बिच्छू कम हैं। मच्छर बहुत ज्यादा हैं जिसके कारण प्रायः मलेरिया हुआ करता है। वर्षा में जोंक भी बहुत अधिक जाती हैं। रास्ते चलते पैरों में चिपक जाती हैं।
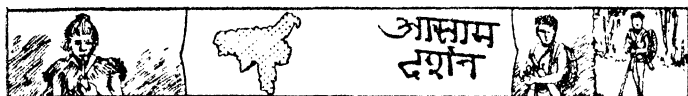
आसाम के जङ्गली जानवरों में हाथी सबसे अधिक उपयोगी और बहुमूल्य है तथा प्रचुर संख्या में पाया जाता है। आसाम के जङ्गल समस्त भारत में अपने हाथियों के लिये प्रसिद्ध हैं। यहां हाथियों का बहुत बड़ा व्यापार किया जाता है। यहां के लोग जङ्गली हाथियों को फंसा कर पालतू बनाते हैं और बेंच देते हैं। जङ्गलों से हाथियों को फंसाने का अधिकार सब को नहीं है। सरकार के "खेदा" डिपार्टमेण्ट की ओर से जङ्गल ठीके पर दे दिये जाते हैं। शेष जङ्गल में से हाथी फंसाने के लिये प्रत्येक हाथी के पीछे १००) 'कर' के रूप में लिया जाता है। हाथी का दांत बहुमूल्य होता है और मरने पर उसकी हड्डी भी बहुत दाम में बिकती है। इस प्रकार हाथी का व्यापार आर्थिक दृष्टि से बड़ा लाभदायक है। कुछ वर्ष पहिले समस्त प्रान्त में लगभग ४०० हाथी प्रति

वर्ष फंसाये जाते थे। ये हाथी विशेषकर आसाम घाटी तथा आसाम 'रेञ्ज' में पाये जाते हैं। सचमुच आसाम अपने हाथियों के लिये प्रसिद्ध है।

खान तथा खनिज पदार्थ

कोयला

आसाम में आर्थिक दृष्टि से सब से अधिक लाभ की वस्तु कोयला है। यह कोयला पूर्वी नागा की पहाड़ियों के उत्तरी पश्चिमी हिस्से में मिलता है। इस कोयले का पता सब से पहिले सन् १८२५ ई० में लगा। सन् १८४० तथा १८४५ ई० में इसकी जांच का काम एक कमेटी को सुपुर्द किया गया। सन् १८२६५ ई० में मिस्टर मेडलिकाट ने इसकी जांच की तथा १८७४-७५ और १८७६ में मिस्टर मेलेटने इन स्थानों को जाकर देखा। ये कोयले की खानें ११० मील में फैली हुई हैं। मेलेट ने जांच खानों का पता लगाया उनके नाम ये हैं। १—माकूम, २—जैपूर, ३—नाजिरा, ४—झाञ्जी, और ५—दिसोई। इन कोयले की खानों की स्थिति

लखीमपुर जिले में हैं। इसके अतिरिक्त नागा की पहाड़ियों के आगे दिहिंग नदी की घाटी में तथा बर्मा के सीमान्त में भी कुछ कोयले की खानें हैं जिनका पता तो लग गया है परन्तु अच्छी तरह से खुदाई का काम आरम्भ नहीं हुआ है। इन समस्त कोयले की खानों में दिहिंग नदी के किनारे स्थित माकूम की खानें बड़ी प्रसिद्ध हैं। यहाँ पर कोयला जमीन के बहुत नीचे तक पाया जाता है तथा बड़ा ठोस होता है।

वर्ष	(कोयले का वजन सहस्र टनों में)
१८८९-९०	११८
१८९८-९९	२०७
१८९९-१९००	२४२
१९००-१९०१	२४३

नाजिरा के कोयले की खान (जो शिवसागर के दक्षिण में पहाड़ियों के बीच में है) को आसाम कम्पनी ने पट्टे पर ले रक्खा है परन्तु इसमें कोई विशेष रूप से कार्य शुरू नहीं हुआ है।

गारो तथा खसिया और जयन्तिया की पहाड़ियों में भी कोयला मिलता है। यह कोयला दो प्रकार का

है ? पुराना तथा २ नया। गारो की पहाड़ियों में जो खाने हैं उनमें ७६ मिलियन टन कोयला होने की सम्भावना थी परन्तु आधुनिक खोज से पता चला है कि इनमें ३०० मिलियन टन से कम कोयला नहीं है। यह कोयला अच्छा तथा ठोस है।

खासी की पहाड़ियों में भी दो कोयले की खानें हैं। पहिली खान में ओवेह लरखर है जो मेओफ्लैंग के पास है तथा दूसरी लेनग्रिन है जो यदुकाता नदी के किनारे स्थित है। पहिली खान में स्थानीय लोगों ने कोयले निकालने का काम किया है। यह कोयला भी गारो की भांति उच्च कोटि का है। मिकिर की पहाड़ियों में नम्बोर नदी के किनारे लौंगलेई नामक स्थान में भी कोयला मिलता है। यह कोयला अच्छा नहीं है। खासी पहाड़ियों के दक्षिणी भाग में अनेक कोयले की खानें हैं। मेलांग खान आजकल एक लिमिटेड कम्पनी के हाथ में है। ऐसा अन्दाज़ है कि इस खान में १५ मिलियम टन कोयला है। चेरापूँजी की कोयले की खानों में सम्भवतः १,३०,००० टन कोयला है।

लोह

भारत के अन्य प्रान्तों की भांति आसाम में भी लोहा प्रचुर परिमाण में पाया जाता है परन्तु विदेशी लोहे की प्रतियोगिता के कारण इसको विशेष उन्नति नहीं हो सकती। खासी की पहाड़ियों में लोहा उत्तम कोटि का है। आसाम राजाओं के समय में लोहा गला कर अनेक सामान तैयार किये जाते थे। अपर आसाम में भी लोहा मिलता है। यह नागा की पहाड़ियों में खानों में बलुये पत्थर से मिला हुआ पाया जाता है। दक्षिण मिकिर पहाड़ियों में लोहे की खानें प्रायः बहुत पाई जाती हैं परन्तु इन खानों से लोहा निकालने का अभी कुछ अच्छा प्रबन्ध नहीं है। जिस कम्पनी ने माकूम की कोयले की खानों का ठेका लिया है उसी ने ही इन खानों का भी ठेका लिया है। इस प्रकार से आसाम में लोहा भी प्रचुर मात्रा में पाया जाता है।

नमक

नमक के सोते अपर आसाम की कोयले की खानों के पास जैपूर के आसपास पाये जाते हैं। इन सोतों के पानी को गरम करके, खौला करके नमक निकाला

जाता है। कचार जिले में भी नमक के सोते पाये जाते हैं हैलाकाण्डी की घाटी में स्थित बंसबरों तथा चण्डी पर गाँव में नमक बनाने का काम अब भी किया जाता है। प्राचीन समय में यह व्यवसाय विस्तृत रूप से किया जाता था। ये सोते थोड़े से रुपये में पट्टे पर दे दिये जाते हैं। मणिपुर में भी अनेक नमक के सोते हैं। वहां भी नमक बनाया जाता है तथा इससे बड़ी आमदनी होती है।

चूना का पत्थर

कोयले के बाद प्रान्त में चूना ही खनिज पदार्थों में अधिक प्रसिद्ध है। चूने की खानें खासी और जयन्तिया की पहाड़ियों के दक्षिण ओर हैं। चूने के पत्थर गारो की पहाड़ियों में सोमेश्वरी नदी के उद्गम स्थान से लेकर जयन्तिया की पहाड़ियों में हरी नदी तक मिलते हैं। जदुकाता तथा पुनातीथ नदियों के किनारे स्थित चूने के पत्थर की खानें बड़ी प्रसिद्ध हैं। इसके अतिरिक्त द्वारा तथा शेला की खानें भी प्रसिद्ध हैं। कुल मिला कर खसिया तथा जयन्तिया की पहाड़ियों में ३४ चूने के पत्थर की खानें है और एक सिलहट में और

एक गारो की पहाड़ियों में है। ये सब खानें सरकार के हाथों में हैं। सन् १६०१ ई० में सिलहट में शेला, सोहबर, बेरेंग तथा मोलोंग इन चार खानों से सरकारी आज्ञा से चूने के पत्थर निकाले गये तथा बोरपूँजी, लेंगरिग तथा नांगस्टोइन की खानें पट्टे पर दी गई थीं। गत तीन वर्षों में चूने तथा पत्थर का निर्यात औसत रूप से १६ लाख मन वार्षिक था। इस निर्यात से सरकार को १२,००० से लेकर २०,००० रुपया तक मिला। गोला घाट के दक्षिण में थोड़ी दूर पर धनसिरी नदी की एक सहायक नदी के तट पर से चूने के पत्थर प्रचुर परिमाण में मिलते हैं।

सोना

आसाम प्रान्त में जिन नदियों से सोना निकलता था वे ब्रह्मपुत्र से उत्तर में डेरेंग तथा लखीमपुर जिले में हैं। कहा जाता है कि शिवसागर जिले की धनसिरी देसाई तथा झाञ्जी नदियों से भी सोना निकाला जाता था। भरेली, दिकरांग तथा सुबनसिरी नदियों से सब से अधिक सोना निकलता था। आसाम राजाओं के समय में जब कि अनिवार्य मजूरी की प्रथा थी—इस व्यवसाय

की बड़ी उन्नति थी। इन नदियों में से सोना निकाल कर व्यापार किया जाता था परन्तु अँग्रेजों के आने के साथ ही यह व्यापार सदा के लिये नष्ट हो गया। सन् १८८२ ई० में एक यूरोपियन साहब ने इस व्यवहार का ठीका लिया परन्तु विशेष लाभ न होने से उसने छोड़ दिया। अब यह व्यवसाय बिलकुल नष्ट हो गया है।

पेट्रोलियम

लखीमपुर के जिले में माकूम की खानों से पेट्रोलियम निकाला जाता है। सन् १८६८ में यहाँ से तेल अधिक मात्रा में निकाला गया था परन्तु इसे साफ़ करने के लिये कोई प्रबन्ध नहीं था। सन् १८९२ में साफ़ करने का एक कारखाना खोला गया। सन् १८९९ ई० में आसाम आयल कम्पनी की ३,१०,००० पौंड की पूँजी से स्थापना की गई और डिगबाई नामक स्थान में एक तेल साफ करने का कारखाना खोला गया। सन् १९०३ में इस कारखाने में १० युरोपियन तथा ५०९ देशी आदमी काम करते थे। कुल मिलाकर ४२ कुयें बनाये गये। परन्तु इनमें से २२ तोड़ दिये। इन कुओं की गहराई ६०० से लेकर १८३३ फुट तक है। कहा जाता है कि सब से अधिक तेल देने वाले कुयें में से
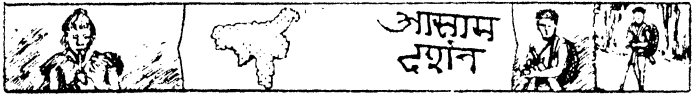
५०,००० गैलन तेल प्रति मास निकाला जाता है। यह तेल एक प्रकार का रफ़ पेट्रोलियम है और इससे प्रधान-तया किरासन का तेल तथा मोमबत्ती बनाई जाती है। सन् १९०३ में इससे ६३ टन मोमबत्ती तथा १२,००,-००० गैलन किरासन का तेल निकाला गया था। किरासन का तेल तो सहज ही सर्वत्र बिक जाता है। परन्तु मोमबत्तियां बिकने के लिये इंगलैंड भेजी जाती हैं। काचार के जिले में मासिमपुर में तथा बराक नदी के किनारे बदरपुर में पेट्रोलियम मिलता है। खासी पहाड़ी के दक्षिणी ढलुवे भाग पर खासीमार में सोतों से तेल निकाला जाता है।

दिहिंग नदी का बालुकाओं में प्लेटिनम पाया जाता है और खामटी की पहाड़ियों में सीसा मिलता है। इस प्रकार से आसाम की खनिजात्मक सम्पत्ति कुछ कम नहीं है।

———

देश दर्शन

भूमि और खेती

भूमि के विभाग और खेती (ब्रह्मपुत्र-घाटी)

साधारणतः ब्रह्मपुत्र के दोनों तरफ की भूमि चार भागों में बांटी जा सकती है—

(१) पहली प्रकार की भूमि को चपटी कहते हैं। जो नदी के बिल्कुल किनारे की भूमि है। इस भूमि में बरसात के दिनों में बड़े ज़ोरों की बाढ़ आती है और नियमतः यह भूमि घास के जंगलों से ढकी रहती है जिसे काटकर जलाये बिना खेती नहीं की जा सकती लेकिन जब बाढ़ बहुत शीघ्र नहीं शुरू होती तो आहू नामक धान की अच्छी खेती होती है। आहू मार्च या अप्रैल में बोया जाता है और जून या जुलाई में काटा जाता है। बाढ़ के बाद अक्टूबर और नवम्बर में इस ज़मीन में तेलहन और दलहन बो देते हैं और तीन महीने के बाद काट लेते हैं। घास के जंगल काट देने पर एक दो साल तक इसमें खेती हो सकती है क्योंकि दूसरे तीसरे साल खेतों में नरकट लग जाते हैं तथा सान
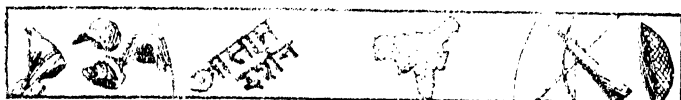
आठ वर्ष के बाद जब घास का जंगल घना हो जाता है तो उसे काटकर फिर खेत बना लेते हैं।

(२) चपरी के बाद निचली भूमि में बाओ नामक धान पैदा होता है जो अप्रैल और मई में बोया जाता है। कभी कभी बाओ के साथ आहू नामक धान भी बोते हैं जिसमें बाढ़ के पहिले ही एक फसल किसानों को मिल जाय। इस भूमि से पानी धीरे धीरे बाहर जाता है अतः जाड़े की फसल यहां नहीं हो सकती।

(३) इसके बाद ज़मीन कुछ ऊंची होने लगती है जहां बाढ़ का पानी मुश्किल से पहुंचता है। इस स्थान की मुख्य पैदावार साली नामक धान है। धान के छोटे छोटे पौधे जून और जुलाई में खेतों में रोक दिये जाते हैं और यह सफल नवम्बर और दिसम्बर में तैयार हो जाती है। साली धान दो प्रकार का होता है (१) बार और लाही बार धान में दाने अधिक होते हैं और इसके लिये पानी की अधिक आवश्यकता पड़ती है। इसलिये यह नीचे भागों में बोया जाता है। यह भुमिचक्र अधिक चौड़ा है और यहाँ स्थायी रूप से खेती

होती है तथा खेती करने वाले लोगों की संख्या यहां अधिक है।

(४) इसके बाद पहाड़ के निकट वाली भूमि है। यहाँ की सतह विशेष ऊंची है और अधिकतर खेत पहाड़ी नदियों से सींचे जाते हैं। यहां साली और खरमा नामक धान पैदा होता है। यहां बाढ़ बिल्कुल नहीं आती परन्तु कृत्रिम सिंचाई के कारण यहां फसल कभी मारी नहीं जाती। भूमि के उपर्युक्त ये चारों विभाग घाटी के सब भागों में नहीं पाये जाते। डैरेंग, शिवसागर तथा लखीमपुर के जिलों में बाओ नामक धान नहीं होता। यद्यपि ब्रह्मपुत्र के दोनों तरफ चपरीभूमि (३) नदी के किनारे तक चली आती है। ईख गांव के पास ऊंची ज़मीन पर बोई जाती है।

सूरमा घाटी में खेती

सूरमा घाटी की भूमि आसाम घाटी की भूमि से बिल्कुल भिन्न है। सूरमा की घाटी में चपरी भूमि नहीं होती। यहां नदियों के किनारे की भूमि बहुत ऊंची और उपजाऊ होती है। काचार और सिलहट के पूर्वी भागों की भूमि आसाम घाटी की स्थायी खेती वाली
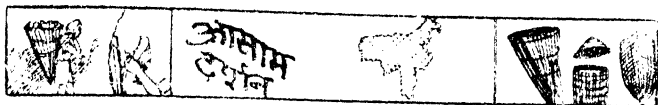
भूमि के समान है। यहां सेल (साली) और औस (आहू) अधिक पैदा होता है। सिलहट का पश्चिमी भाग बरसात के दिनों में पानी से डूबा रहता है और यह स्थान केवल आमन नामक धान के लिये ही उपयुक्त है। सेलबुरा नामक धान बड़े बड़े हाओर में बहुत पैदा होता है। यहाँ ईख नीचे भाग में बोई जाती है और तेलहन गाँव के निकट पुरानी ऊँची भूमि में।

पहाड़ी भागों में खेती

पहाड़ी जातियां भूमि प्रणाली से खेती कराती है। खासी की पहाड़ियों में धान सीढ़ीदार खेतों में बोया जाता है और इन खेतों की सिंचाई भी होती है। पहाड़ की ऊंची भूमि पर आलू और बाजरा आदि पैदा होता है। नन्कुल और अङ्गामी जातियों के प्रदेश में भूम प्रणाली से धान नहीं होता। इन जातियों के गांव बड़े सुन्दर सीढ़ीदार खेतों से घिरे रहते हैं जिसकी सिंचाई सुन्दर तथा बुद्धिमत्ता से बनी हुई नालियों द्वारा होती है उनके नाम तथा जितने स्थान में पैदा होती हैं उनका विस्तार वर्गमीलों में इस प्रकार है।

धान	६,१८८ वर्गमील
गेहूँ	१६ ,,
दाल	१५७ ,,
ईख	६३ ,,
जानवरों का चारा	५७ ,,
चाय	५२८ ,,
तम्बाकू	७ ,,
रुई	६ ,,

इस तालिका से स्पष्ट प्रतीत होती है कि आसाम में सब से अधिक खेती धान की होती है इसके बाद दूसरा नम्बर चाय का है जो भारत भर में सब से अधिक यहीं पैदा होती है।

खेती के औज़ार

यहां खेती के औजार बड़े पुराने ढङ्ग के हैं। लोहे के फाल लगे हुये लकड़ी के हल, हसुआ, खुरपी तथा कुदाल आदि पुराने औजारों से खेती का काम किया जाता है। ईख पेरने के लिये लकड़ी के दो कुन्दे जो एक बाँस से घुमाये जाते हैं काम में लाये जाते हैं।

पैदावार

आसाम की मुख्य पैदावार चावल, दाल, चाय, ईख, तेलहन, तीसी, आलू, नारंगी, रेड़ी, जूट, पान, गेहूँ, ज्वार, बाजरा, कपास आदि हैं। गोआलपाड़ा के पास थोड़ी सी गेहूँ की खेती होती है। दूसरी जगह गेहूँ और जौ की खेती विदेशियों द्वारा छोटे पैमाने में की जाती है। सिलहट में तीसी अधिक बोई जाती है। बगीचों में पान और सुपारी मिरचा तथा अन्य प्रकार के मसाले बोये जाते हैं। खासी की पहाड़ियों में आलू नारंगी और अनन्नास बहुत पैदा होते होते हैं। सिलहट की नारंगी बहुत ही प्रसिद्ध है जो उत्तरी भारत के बाजारों में अधिकता से पाई जाती है। प्रतिवर्ष प्रायः एक लाख मन स्वादिष्ट नारंगियाँ दिसावर को भेजी जाती हैं।

आसाम में आवागमन के साधन

रेलें

आसाम की सब से प्रधान रेलवे आसाम-बंगाल रेलवे है। यह चटगांव के बन्दरगाह से शुरू होती

है तथा सूरमा की घाटी के पूर्वी किनारे मिलचर तक जाती है। इसकी ही एक दूसरी शाखा आसाम घाटी के दक्षिण में गौहाटी से सिन सुकिया तक जाती है जो कि डिब्रूगढ़दिया रेलवे पर एक स्टेशन है। इस लाइन को सूरमा की घाटी वाली रेल से वह रेलवे की शाखा मिलती है जो दक्षिण में बदरपुर से शुरू होती है तथा उत्तर में इस लाइन पर लुमडिंग के पास मिल जाती है। इस रेलवे के बनाने का काम सन् १८९१ में शुरू हुआ था और पांच वर्ष के भीतर ही ११५ मील रेलवे बन कर तयार हो गई तथा चान्दुआरा से बदरपुर तक जनता के आने जाने के लिये खोल दी गई। इस रेलवे के निर्माण में पहाड़ी प्रदेशों को काट कर बनाने में बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ा था और यह कार्य १९०४ में जाकर समाप्त हुआ। यद्यपि इस रेलवे में पहाड़ी मार्ग केवल ११० मील है परन्तु इतने ही में इसमें २४ टनल, ७ घिरे रास्ते, तथा ७४ बड़े बड़े पुल हैं। सबसे लम्बे पुल की लम्बाई ६५० फीट तथा सबसे ऊंचे पुल की नदी के सतह से ऊंचाई ११३ फीट है और अन्य स्थानों पर १००
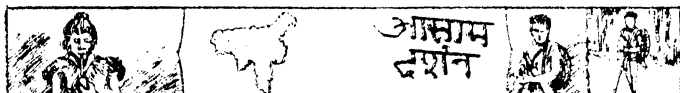
फीट की ऊंचाई साधारणतया पहुंच गई है। इस रेलवे के निर्माण में इंजीनियरिङ्ग की कठिनाइयों को छोड़ कर वहां पर उस ऊंचे पर्वत पर खाने पीने की सब चीज़ों का लाने और मोटी मोटी रेल की पटरियाँ ले जाने में बड़ी ही कठिनाइयों का सामना करना पड़ा है। एक समय रेलवे के सामान के अलावा २५,००० कुलियों के लिए खाने पाने का सामान बड़े ही कष्ट के साथ घोड़े, हाथी तथा खच्चर की पीठ पर ले जाना पड़ा था। इस कारण पहाड़ी भागों में रेलवे के बनाने में बड़ा रुपया खर्च करना पड़ा है।.

मैदानों में पुल के बनाने में बड़ी कठिनाई रही है। कमिली नदी के ऊपर जो पुल बना हुआ है उसकी लम्बाई ५०० गज़ है। बदरपुर के पास बराक नदी के ऊपर जो पुल बना है यद्यपि वह छोटा है तो भी उसके बनवाने में बहुत रुपया खर्च किया गया है। वह नदी की तह से ८० फीट नीचे तक गया है। मीटर गेज (छोटी लाइन) का विस्तार समस्त प्रान्त में ५७१ मील (१६०५) है और इसका निर्माण एक कम्पनी ने

सरकार की आज्ञा से किया है परन्तु रेलों में अधिक रुपया सरकार का ही लगा हुआ है।

एक छोटी लाइन डिब्रूगढ़ के स्टीमर घाट से मारघेरिटा तक गई है। इसकी एक छोटी शाखा तालाप तक गई है। इसकी समस्त लम्बाई केवल ८ मील है। इस लाइन की विशेषता यह है कि यह व्यापार के लिये बड़ी ही उपयोगी है। बड़े बड़े चाय बगान इसके आस पास दृष्टि गोचर होते हैं और माकूम का कोयला तथा तेल इसी रेल के द्वारा ब्रह्मपुत्री की घाटी तक पहुंच जाता है। यह लाइन सन् १८८५ ई० में सरकारी गारण्टी प्राप्त एक प्राइवेट कम्पनी के द्वारा मीटरगेज के तरीके पर बनाई गई थी। उस साल शिवसागर जिले में एक स्टेट रेलवे खुली जो कालिका मुख से (ब्र पर) मारिनी तथा टोटावर तक जाती है। यह चाय बगान की उपज को बाहर भेजने के लिये बनाई गई थी। इसकी पूरी लम्बाई ३० मील है और २ फीट चौड़े गेज पर बनी हुई है। इसी प्रकार एक छोटी लाइन जिसका गेज २ फीट ६ इञ्च चौड़ा है तेजपूर घाट से डेरेंग जिले के बालीपार तक बनाई गई थी। इसकी लम्बाई २०
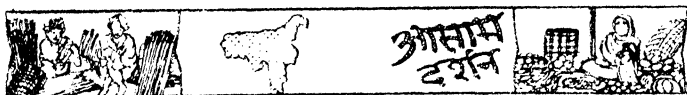
मील मील है। यह लाइन सन १७६५ ई० में एक प्राइवेट कम्पनी के द्वारा बनाई गई थी। १६०७ में ईस्टर्न बंगाल स्टेट रेलवे का निर्माण हुआ जो धुब्री को बङ्गाल प्रान्त के अन्य हिस्सों से मिलाती है।

सन् १८६१ में समस्त प्रान्त में केवल ११४ मील ही पर रेल की लाइन बिछी हुई थी परन्तु १६०३ में ७१५ मील रेलवे बन कर तैयार हो गई है जिसमें ६१७ मील सरकारी रेलवे है। सन् १६०३ में छोटी छोटी रेलवे लाइनों के बनाने का खर्चा ६४,६६,००० रुपया था।

ईस्टर्न बंगाल रेलवे

यह लाइन पूर्वी बङ्गाल और कुछ पश्चिमी आसाम में फैली हुई है। यह लाइन उत्तर में कलकत्ते से सिलगुड़ी तक चली गई है। सिलगुड़ी से दार्जिलिंग के लिये (२ फुट चौड़ी) पहाड़ी लाइन मिलती है। यह लाइन मीटर गेज है अर्थात् इसकी पटरियों की बीच की दूरी ३ फुट ३ इंच है। यह उत्तर-पश्चिम में कटिहार जंकशन पर बी० एन० डब्लू रेलवे (बङ्गाल और नार्थ वेस्टर्न रेलवे) से मिली हुई है। कटिहार से यह लाइन

पूर्वी बङ्गाल के दीनाजपूर और रंगपुर जिलों को पार करती हुई आसाम के पश्चिमी भाग में गोलक गंज नामक स्थान पर प्रवेश करती है तथा गोआल पाड़ा और कामरूप के जिलों से होती हुई गौहाटी तक चली गई है। इसका अन्तिम स्टेशन अमीन गांव है जो गौहाटी के सामने ब्रह्मपुत्र के दूसरी ओर स्थित है। यह लाइन गौहाटी में आकर आसाम बंगाल रेलवे से मिल जाती है। अतः आसाम में ईस्टर्न रेलवे गोलकगंज से अमीन गाँव तक फैल हुई है। बंगाल और नार्थ वेस्टर्न रेलवे की एक गाड़ी जिसका नाम "इलाहाबाद-अमीन गांव पेसेञ्जर" है इलाहाबाद से अमीन गांव तक सीधे चली जाती है अतः संयुक्त प्रान्त और उत्तरी विहार के लोग इस गाड़ी के द्वारा गौहाटी (अमीनगांव) तक सीधे चले जा सकते हैं।

सड़कें

प्राचीन समय में आसाम में आवागमन का समस्त काम नदियों के द्वारा ही होता था। अतएव लोगों को किसी स्थान विशेष पर जाने के लिये सड़कों की आवश्यकता नहीं होती थी। अतः सन् १८६५ में इतने अधिक

समय तक ब्रह्मपुत्र की समस्त घाटी में एक लम्बी सड़क के बनवाने का विचार हुआ। यह सड़क पूर्वी अन्त सदिया से प्रारम्भ होकर धुब्री तक आती है जहां पर स्टीमर से इसका सम्बन्ध है और गोआलपारा तथा उत्तरी बङ्गाल के सड़कों से मिल जाती है। गौहाटी से शिलांग तक बड़ी सुन्दर पक्की सड़क गई है। शिलाङ्ग से चेरापूञ्ज, थेरिया घाट तथा कम्पनीगंज तक सड़क गई है। सिलहट से काचार तक सड़क है। काचार से एक बड़ा रास्ता मनीपुर को गया है तथा वहां से गाड़ी के लायक सड़क कोहिमा, दीमापुर और गोला घाट होते हुये ब्रह्मपुत्र तक गई है। ब्रह्मपुत्र के उत्तरी किनारे से भी एक बड़ी सड़क गई है परन्तु इस पर अधिक लोग नहीं चलते। ट्रन्क सड़कों के अतिरिक्त निम्न-लिखित सड़कें भी अच्छी तथा बड़ी हैं। तुरा (गारो पहाड़ी) से ब्रह्मपुत्र तक की सड़क। गौहाटी के पास से दरैङ्ग तक (भूटान पहाड़ी के नीचे तक) रङ्गामाटी घाट से मंगलदेई सबडिवीजन के उत्तर तक शिवसागर से लेकर दिसांगमुख तक (ब्रह्मपुत्र के पास) सिलहट से फेंचुगंज और वहां से कुलडरा रेलवे स्टेशन तक

सिलचर से हैकाकाएडी की घाटी के ऊपर तक। सन् १८६०-६१ ई० में २६३ मील सड़क भारत सरकार की, २,११६ मील सड़क प्रान्तीय सरकार की तथा ३,०६५ मील सड़क लोकल बोर्डों की ओर से (अनेक धन से) बनी हुई थीं तथा इन सड़कों के बनाने का खर्चा ४,७०,००० रु० था। सन् १६०३-४ में १,६३५ मील सड़क प्रान्तीय सरकार की तथा ४८३ मील सड़क लोकल बोर्डों की ओर से बनाई गई थी इन सड़कों के बनाने का खर्चा ८,८७,००० रु० था। आसाम में पक्की सड़कों के बनवाने में व्यय बहुत अधिक पड़ता है। इसका कारण यह है कि मज़दूर सस्ते नहीं मिलते तथा सामान भी सुलभ नहीं है। सन् १६०३-४ में केवल १४४ मील ही पक्की मेटल्ड) सड़क थी। इन सड़कों पर दस दस मील के फासले पर इन्सपेक्शन बँगले बने हुए हैं। इन सड़कों के किनारे पर छायादार पेड़ नहीं लगे हैं।

नदियाँ

अब भी आसाम में आवागमन का प्रधान साधन प्रायः नदियाँ ही हैं। ब्रह्मपुत्र बहुत बड़ी नदी है अतः
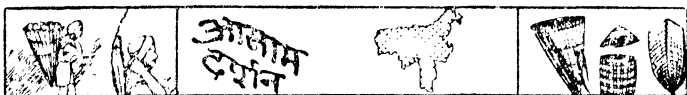
बड़े बड़े स्टीमर डिब्रूगढ़ के पास तक चले आते हैं। इस प्रकार से ब्रह्मपुत्र की घाटी का अधिक व्यापार इसी विशाल नदी द्वारा होता है। सूरमा की घाटी में नदियों का जाल सा बिछा हुआ है। वर्षा ऋतु में सिलहट जिले का पश्चिमी हिस्सा जलमय हो जाता है। इन दिनों में "इण्डिया जनेरल स्टीम नेविगेशन कम्पनी" "रिभर्स स्टीम नेविगेशन कम्पनी" की स्टीमरें दोनों घाटी की नदियों में चलती हैं। ग्वालन्दो से डिब्रूगढ़ तक रोजाना स्टीमरें चलती हैं। सूरमा की घाटी में वर्षा ऋतु में बड़ी बड़ी स्टीमरें सिलचर तक पहुंच जाती हैं। धुब्री और गौहाटी के आर पार पहुंचाने के लिये स्टीमरें हैं। इसके अलावा ये नावें एक ही लम्बे काठ को खोखला कर बनाई जाती हैं। कहीं कहीं नदियों पर पुल भी बने हुये हैं। इस प्रकार से इस प्रान्त में बहुत सा व्यापार तथा आवागमन नदियों के द्वारा भी होता है।

———

प्राकृतिक प्रकोप

प्रभञ्जन

आसाम में समय समय पर बड़े जोरों की आंधियाँ आया करती हैं जिन्हें संस्कृत में प्रभञ्जन कहते हैं। ये प्रभञ्जन प्रायः बसन्त के दिनों में आया करते हैं। यद्यपि ये बड़े भयानक होते हैं परन्तु जान माल का खतरा विशेष नहीं रहता। सन् १६०० ई० में गारो की पहाड़ियों में दो प्रभञ्जन आये जो बड़े ही भयानक तथा खतरनाक थे। इन प्रभञ्जनों के कारण ४४ मनुष्यों की मृत्यु हुई तथा जो कुछ वस्तुएँ इनके रास्ते में पड़ीं उन सब को इन्होंने नष्ट भ्रष्ट कर दिया। इसके बाद भी कई बार जोरों की आंधियाँ आती रहीं। सन् १६३६ के जून मास में फिर एक प्रभञ्जन आसाम के पश्चिमान्त भाग में आया। इसके कारण धुब्री के घर नष्ट हो गये। सरकारी अफसरों के कितने बँगले गिर पड़े तथा कितने बगीचे उजड़ गये। कुशल केवल इतना ही था कि इससे मनुष्यों की जान नहीं गई। इस प्रकार आसाम में प्रभञ्जन प्रायः आया ही करते हैं जिनसे लोगों को हानि होती है।

आसाम में भूकम्प सदा आया ही करते हैं। पर्वतों की गोद में बसे होने के कारण यह पार्वत्य प्रान्त भूकम्प का घर सा हो गया है। यहां भूकम्प कई शताब्दियों से आते रहे हैं। सन् १६०७ ई० में एक प्रचण्ड भूकम्प आया था जिसके कारण पहाड़ियाँ भी फट गईं तथा ज़मीन में धँस गईं। सन् १८३७ ई० में मैकाश साहब ने लिखा है कि आज से २० वर्ष पहिले एक ऐसा विनाशकारी भूचाल आया जिससे गोआलपाड़ा जिले में स्थित एक गाँव बिल्कुल नष्ट होकर पृथ्वी में घुस गया और उसकी जगह पर पानी का झरना हो गया। सन् १८६६ तथा १८८२ ई० में सिलचर में भूकम्प के अनेक धक्के मालूम पड़े और सन् १८७५ ई० के भूचाल से शीलांग तथा गौहाटी के अनेक घरों को नुकसान पहुँचा परन्तु इन सब भूकम्पों से प्रचण्ड तथा प्रलयकारी भूकम्प अभी होना बाकी था और यह ऐतिहासिक भूकम्प १२ जून सन् १८९७ ई० को हुआ। इससे आसाम का बड़ा ही नुकसान हुआ। शिलांग शहर नष्ट-भ्रष्ट हो कर भूमिसात् हो गया और स्त्री और

पुरुष कई दिनों तक भीषण वर्षा की बौछारें खाते रहे। गौहाटी तथा सिलहट के सारे पक्के मकान चकनाचूर हो गये और गोआलपाड़ा, नवगाँव और डैरेंग जिले में महती क्षति हुई। इस प्रलयकारी भूकम्प से १५४० मनुष्यों की मृत्यु हुई। बहुत से आदमी नदियों में डूब गये तथा पहाड़ों के बीच में पिस गये। पक्की सड़कें तथा पुल बिल्कुल नष्ट हो गये और नदियों के बहाव में परिवर्तन हो गया। गिरी हुई सरकारी इमारतों के बनवाने में ३५ लाख रुपया खर्च करना पड़ा तथा अन्य लोगों को व्यक्तिगत कितनी क्षति पहुँची इसका अन्दाज़ा लगाना भी असम्भव है।

बाढ़ और दुर्भिक्ष

आसाम में नदियाँ बहुत हैं और वे गहरी और चौड़ी हैं। नदियां सब पहाड़ी हैं अतः बरसात के दिनों में उनमें एकाएक बाढ़ आ जाया करती है। इसी कारण से आसाम को बाढ़ से ही कष्ट होता है। इस प्रान्त में अनावृष्टि से जितना कष्ट नहीं होता उतना अतिवृष्टि से होता है। ब्रह्मपुत्र तथा सूरमा नदियों में प्रायः भयंकर बाढ़ आया करती है। सन् १७८१ ई० में
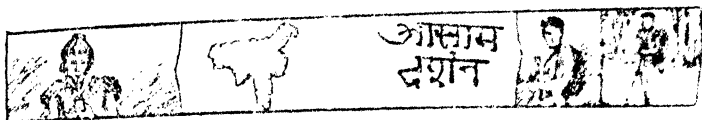
सहसा बड़े ज़ोर की बाढ़ आ गई जिससे लोगों को बड़ा ही भीषण कष्ट हुआ। सरकार के द्वारा प्रबन्ध किये जाने पर भी सारी आबादी का एक तिहाई भाग अन्न न मिलने कारण भूखों मर गया। ब्रह्मपुत्र की घाटी में तथा सिलहट के जिले में प्रायः बाढ़ बहुत आया करती है। इधर कुछ ही वर्ष हुये कि सिलहट में बाढ़ आई थी। सन् १९३६ ई० के जून मास में सूरमा नदी तथा इसकी शाखाओं में भयंकर बाढ़ आई थी। लोगों को इससे बड़ा कष्ट हुआ। सारी खड़ी फसल नष्ट हो गई। लोगों ने भाग कर रेलवे बान्धों पर शरण ली। कितने पुल और सड़कें नष्ट हो गईं। रेलवे अफसरों के परिवार को नावों और मालगाड़ियों में शरण लेनी पड़ी।

दुर्भिक्ष

बाढ़ के अधिक आने से आसाम में दुर्भिक्ष पड़ा ही करता है। अधिक वर्षा होने से खाने को अन्न नहीं मिलता। सन् १७८१ ई० में भी भीषण बाढ़ के कारण बहुत बड़ा दुर्भिक्ष पड़ा जिसमें सारे प्रान्त के एक तिहाई

दुर्भिक्ष के कारण मर गये। इसके बाद भी कई बार दुर्भिक्ष आये परन्तु इधर कुछ वर्षों से दुर्भिक्ष का आना बन्द है।

जन-संख्या

आसाम में अनेक जिले पहाड़ी हैं। वे दुर्गम है और इन पहाड़ी जिलों में स्थित गांव एक दूसरे से बहुत दूर पर बसे हुये हैं।

आसाम क्षेत्रफल में उतना ही बड़ा है जितना कि इङ्गलैंड और वेल्स परन्तु क्षेत्रफल में समान होते हुए भी आसाम की आबादी इङ्गलैंड के चतुर्थांश से भी कम है। आसाम प्रान्त की आबादी आजकल ८० लाख से अधिक नहीं है।

आसाम के प्रत्येक जिलों का क्षेत्रफल तथा उसकी आबादी की सघनता इस प्रकार है।

जिला	क्षेत्रफल वर्गमीलों में	जन-संख्या वर्गमीलों में
कछार	२,०६३	२०१
सिलहट	५,४४३	४१२

गोआलपाड़ा	३,६६१	११७
कामरूप	३,८५८	१५३
डैरेङ्ग	३,४१८	६६
नवागाँव	३,८४३	६८
शिवसागर	४,६६६	१२०
लखीमपुर	४,२०७	८८
लुगाई पहाड़ियां	७,२२७	११
उत्तरी कछार	१,७०६	२४
नागा पहाड़ियाँ	३,०७०	३३
खासी और जयन्तिया पहाड़ियाँ	६,०२७	३४
गारो पहाड़ियां	३,१४०	४४
मनीपुर	३,२८४	८७

ऊपर के आंकड़े को देखने से स्पष्ट पता लग जाता है कि लुशाई की पहाड़ियों में आबादी सब से कम है। क्षेत्रफल की दृष्टि से यह जिला आसाम के सब जिलों से बड़ा है। इसका क्षेत्रफल ७,२२७ वर्गमील है परन्तु आबादी सब जिलों से कम है अर्थात् प्रति वर्गमील में केवल ११ ही है।

खासी और जयन्तिया की पहाड़ियों में भी आबादी बहुत कम है। आसाम का सब से अधिक घना बसा हुआ जिला सिलहट है। यहां आबादी की सघनता प्रति वर्गमील ४१२ है। आबादी की अधिकता की दृष्टि से कछार जिले का नम्बर दूसरा है। जन-गणना के हिसाब से प्रत्येक घर की औसत आबादी ४'६ थी। यह संख्या गोआलपाड़ा जिले में बढ़कर ५'३ हो जाती है और नागा पहाड़ियों में घट कर ३'३ रह जाती है।

आसाम में मनीपूर को छोड़कर, शहर की आबादी समस्त आबादी का १'८ प्रतिशत है इसका कारण यह है कि आसाम में बड़े बड़े व्यवसायों की कमी के कारण वहाँ बड़े शहर नहीं हैं। यहां चाय का जो बड़ा व्यवसाय होता है उससे शहर की आबादी बढ़ने के विरुद्ध घटती ही जाती है। आसाम का सब से बड़ा शहर सिलहट है इसके बाद गौहाटी का नम्बर आता है। आसाम प्रान्त के उन मुख्य शहरों की आबादी के आंकड़े यहाँ दिये जाते हैं जिनको जन-संख्या ६,००० से अधिक है।
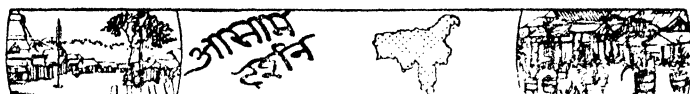
सिलहट	१३,८६३	बारपेता	८,७४७
गौहाटी	११,६६१	शिलांग	८,३८४
डब्रूगढ़	११,२२७	गोआलपाड़ा	६,२८७
सिलचर	६,२५६		

आसाम प्रान्त में सब मिला कर २२,३२६ गांव हैं जिनकी औसत आबादी प्रति गाँव २६६ मनुष्य हैं। ५६ प्रतिशत मनुष्य ऐसे गांवों में रहते हैं जिनकी आबादी ५०० मनुष्यों से भी कम है।

आसाम की आबादी में बाहर से आये हुये कुलियों का बड़ा भारी भाग है। आजकल समस्त कुलियों की संख्या दस लाख के लगभग है। इस प्रकार आसाम की आबादी का आठवाँ हिस्सा केवल बाहर के कुली ही हैं। परन्तु संतोष का विषय यह है कि आसाम की जन संख्या क्रमशः बढ़ती जा रही है। आसाम प्रान्त के सिलहट ज़िले में मुसलमानों की संख्या अधिक है। अतः इस ज़िले को पूर्वी बङ्गाल से मिला दया गया है।

———

व्यवसाय

आसाम में व्यवसाय की कुछ विशेष उन्नति नहीं है। आहोम राजाओं के समय में भिन्न-भिन्न कार्य को करने के लिये भिन्न-भिन्न आदमी नियुक्त थे परन्तु उनके बाद इन लोगों ने अपना पेशा छोड़ कर खेती करना आरम्भ कर दिया इसलिये वहां पर एक खास पेशे को करने वाले किसी जाति विशेष का मिलना कठिन है। पहिले जो कुछ व्यवसाय था अब वह नष्ट होता चला जाता है क्योंकि घर की बनी हुई वस्तु की अपेक्षा बाहर की बनी फैशनेबुल चीजों को लोग अधिक पसन्द करने लगे हैं। आसाम का प्रधान व्यवसाय वहां की बुनाई, रेशम के कीड़ों को पालना, मिट्टी के बर्तन, धातु की बनी हुई चीज़ें, चटाई बनाना, लाह तयार करना और मछली मारना है। इनका संक्षेप में यहाँ वर्णन किया जाता है।

बुनाई

आसाम में सूत के कपड़े बुनने का कार्य आज भी वहां के निवासियों में ब्रह्मपुत्र घाटी में प्रचुर प्रमाण में पाया है। यह वहाँ का सब से अधिक प्रचलित व्यवसाय

है। यह कार्य अधिकतर स्त्रियों के द्वारा ही किया जाता है। प्रायः प्रत्येक घर में करघा मिलेगा जिसके द्वारा इस बुनाई का कार्य किया जाता है परन्तु इससे जो कपड़ा तयार होता है उसकी संख्या अधिक नहीं होती। वह केवल उसी परिवार के लोगों के लिये काफी होता है। बुनाई लड़कियों की शिक्षा का एक बहुत बड़ा अंग समझी जाती है। इस कला से युक्त लड़की बड़ी गुणवती समझी जाती है। धनी घरों की स्त्रियों में घर के बुने हुए कपड़े का प्रयोग घटता जाता है। वे विदेश के सुन्दर कपड़े पहनने लग गई है।

सूरमा की घाटी में बुनाई का कार्य कभी भी गृह व्यवसाय नहीं था। यहां बुनाई का पेशा करने वाली एक अलग जाति हो जाती थी जो इसका कार्य करती थी लेकिन आजकल इन पेशा करने वालों ने भी खेती की समता में इस व्यवसाय को छोड़ दिया है। कामरूप जिले में यह व्यवसाय अब भी अच्छी तरह से चल रहा है परन्तु इससे अधिक प्रमाण में कपड़े तैयार नहीं होते हैं। इन करघों के द्वारा जो कपड़ा तैयार होता है

उनमें शाल भी है जो बहुत ही सुन्दर तैयार होता है और बड़ी कीमत का होता है।

रेशम और उसके कीड़े का पालना

आसाम की घाटी में एक विशेष प्रकार का व्यवसाय रेशम के कीड़ों को पालना और उससे रेशम उत्पन्न करना है। ये कीड़े चार प्रकार के होते हैं। १—छोटे पाट कीड़े, २—बड़े पाट कीड़े, ये दोनों प्रकार के कीड़े एक बारीक सफेद सूत को तैयार करते हैं। ३—मूँगा कीड़े, ये प्रधानतया सूत वृक्ष के ऊपर पाले जाते हैं और पीले रंग के रेशम का सूत पैदा करते हैं परन्तु यदि यही चाप वृक्ष के ऊपर पाले जायँ तो सफेद सूत को पैदा करते हैं। ४—एरी कीड़े, चूंकि ये रेंड (एरण्ड) वृक्ष के ऊपर पाले जाते हैं अतएव इनका ऐसा नाम पड़ गया है। ये एरण्ड वृक्ष के अतिरिक्त दूसरे वृक्षों पर भी पाले जाते हैं। पाट रेशम से जो कपड़ा तैयार किया जाता है। वह बड़ी ही सुन्दर और विलास की वस्तु समझी जाती है। यह अधिक मात्रा में मिलता भी नहीं है। परन्तु मूंगा रेशम का

प्रयोग सर्व साधारण भी करते हैं। इसे पहाड़ी जिलों में भेजते भी हैं।

परन्तु रेशम के कीड़े पालने का यह व्यवसाय बहुत बड़े व्यापारिक ढंग पर नहीं होता। कुछ देहात के आदमी इसे एक छोटे से पैमाने पर पालते हैं और उससे जो कुछ रेशम का सूत तयार होता है। उसे या तो अपने घर की स्त्रियों के प्रयोग के लिये रख लेते हैं अथवा बाजार या मेले में जाकर बेंच देते हैं। अपर आसाम में रेशम का व्यवसाय कुछ अधिक नहीं है परन्तु पश्चिमी जिलों की कतिपय जातियाँ जमीन का लगान चुकाने के लिये एरी रेशम को मोहियों के हाथ बेंच देते हैं। ये रेशम मारवाड़ियों के हाथ भी बेचते हैं जो उसे कलकत्ता भेज देते हैं। ब्राह्मण गणक और कलिता जातियाँ एरी रेशम के कीड़े को नहीं पालती। ये इसे निषिद्ध समझती हैं। यह व्यवसाय अधिकतर गारो, मिकिर और कचारी जातियों के हाथ में है। कामरूप जिले में इस व्यवसाय का प्रधान स्थान बरदुआर, चय गांव; पाटन गांव तथा तामुलपुर और बरमा तहसील हैं। आज कल शिक्षित लोग भी इस व्यवसाय को

ओर झुके हुये हैं। मूँग तथा एरी कपड़े इतने मज़बूत व टिकाऊ होते हैं कि यदि इन्हें तेल से दूर रक्खा जाय तो फटने का नाम ही नहीं लेते। ये कपड़े केले के छार से धोये जाते हैं। अच्छे साबुन से अगर खुद धो लिये जायँ तो भी कोई विशेष हानि नहीं होती।

यद्यपि आसाम में जवाहिरात के काम कुछ उतने अच्छे नहीं होते परन्तु तो भी बरपेटा में सुवर्ण जटित मुक्ता मालायें विशेष प्रकार की बनाई जाती हैं और कला से पूर्ण होती है। खासो जाति की स्त्रियां हाथ में कड़ा तथा गले में मालायें बहुत पहिनती हैं। इस व्यवसाय का विशेष प्रचार नहीं है। इसे बहुत ही कम आदमी करते हैं। इस पेशे के करने वाले आदमियों की जीविका का साधन दूसरी भी वस्तुएँ हैं।

पीतल धातु की बनी हुई चीजें

अन्य प्रकार की बनी हुई वस्तुओं में पीतल, लोहे के सामान तथा वेल मेटल के सामान हैं। इस प्रकार के जो कुछ भी सामान बनते हैं उनमें विशेष कारीगरी नहीं रहती। ये सामान इतनी अधिक संख्या में नहीं बनते कि स्थानीय आवश्यकता की पूर्ति कर सकें।
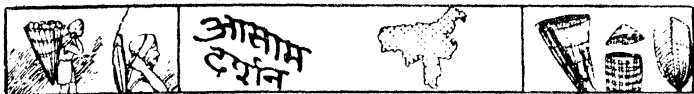
अतः बङ्गाल से यहां सामान भेजा जाता है। पीतल के जो सामान बनते हैं उन्हें पीतल के पतले चद्दरों को पीट पीट कर तैयार किया जाता है। यह व्यापार प्रधानतया आसाम की घाटी में मोरियों (जो कि एक प्रकार के पतित मुसलमान माने जाते हैं) के हाथ में है। आसाम के राजाओं के समय में मिश्रित लोहे गला कर उसमें से अच्छा लोहा निकालने का बहुत बड़ा व्यापार होता था। यद्यपि यह व्यापार प्रायः नष्ट हो गया है फिर भी आजकल खासी जाति के लोग मिश्रित लोहा गला कर उसमें से शुद्ध लोहे को निकाल कर अपने खेती के हथियारों को बनाते हैं। यहाँ जो लोहार के कार्य को करने वाले हैं वे प्रायः दूसरे प्रान्तों से आये हुये हैं और वे अन्य स्थान से आये हुये लोहे के द्वारा हथौड़ा, घड़ा, हसिया, खुरपी आदि सामान तयार करते हैं। कामरूप जिले में पीतल के बरतन बनाने के केन्द्र हाजो तथा गौहाटी हैं।

यों तो प्रान्त के प्रायः प्रत्येक जिले में चटाई बनाने का काम होता है परन्तु सिलहट और कछार के जिले में यह व्यवसाय विशेष रूप से होता है। मुर्दा बेंत की

चटाइयां, बालगंज, जूरी, तेघरी, कालीमंज तथा सिलहट और कचार जिले के अन्य गाँवों में बनती है। बांस तथा नल की बनी हुई चटाइयां करीमगंज तथा सुनामगंज तहसील में पाई जाती हैं। लगभग २,५०० परिवार बेंत की चटाई बनाने में तथा २,००० परिवार बांस और नल की चटाइयां बनाने में लगे रहते हैं। इन परिवारों का यही पेशा है। सुनामगञ्ज तहसील से बांस तथा नल की चटाइयां प्रचुर मात्रा में बङ्गाल को भेजी जाती है। आसामी चटाइयों की विशेषता यह है कि ये बड़ी सुन्दर चिकनी तथा मज़बूत होती हैं।

मिट्टी के बर्तन

आसाम में जो कुम्हार मिट्टी के बर्तन बनाते हैं वे कलिता तथा नमशुद्र जाति के आदमी हैं ये मिट्टी के बर्तन बना कर ही अपनी जीविका उपार्जन करते हैं। इनमें से अधिक आदमी अब खेती का काम भी करने लगे हैं। स्त्रियां भी इस कार्य में पुरुषों की बड़ी सहायता करती हैं। मिट्टी के जो बर्तन बनाये जाते हैं उनमें भोजन बनाने के बर्तन, घड़े, टिम्अट आदि प्रधान हैं। गौहाटी के कुम्हारों के द्वारा फूल रखने के गमले
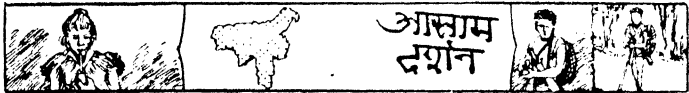
अच्छे बनाये जाते हैं। इस व्यापार से जो लाभ होता है वह बहुत थोड़ा है। धीरे धीरे इन मिट्टी के बर्तनों के स्थान धातु के बर्तन ग्रहण कर रहे हैं। ये बर्तन बङ्गाल से आते हैं और इनका प्रचार क्रमशः बढ़ रहा है। कामरूप जिले में इस व्यवसाय का केन्द्र पारू, रानी, बेलतला आदि स्थान हैं।

चटाई बुनने का काम

ये चटाइयां बांस, बेंत, नल और साल की बनाई जाती हैं। बांस की चटाइयाँ गौहाटी तथा बाजली तहसील में बनाई जाती हैं। छोटे छोटे गाँवों में भी ये चटाइयां बनाई जाती हैं। सिलहट के जिले में भी इन चटाइयों के बनाने का काम होता है। यहां पर नल के बक्स, कुर्सी, टेबुल और पत्तों के छाते आदि बनाये जाते हैं। लाह की चूड़ियाँ, लड़कों के खिलौने आदि का निर्माण किया जाता है।

इधर सरसों के तेल और चीनी के व्यवसाय की ओर भी अधिक ध्यान आकर्षित हुआ है। इस दिशा में बहुत अधिक उन्नति हुई है। सन् १६०५ ई० में गौहाटी में दो मिलें काम कर रही थीं जिनमें से तीन

टन तेल प्रति दिन निकलता था। चीनी के कारखाने से गुड़ से चीनी बनाने का काम होता है। सिलहट के जिले में नाओं के बनाने का भी काम होता है। आसाम की घाटी में पेड़ के धड़ को खोखला करके नाव बनाने का काम किया जाता है। हाथी के दांत तथा लकड़ी की नक्कासी बनाने का कार्य अब प्रायः लुप्त हो गया है। लकड़ी में नक्कासी करने वाले प्रायः बढ़ई होते हैं। हाथी दांत में काम किये हुये सामान जोरहाट, बरपेट तथा सिलहट में पाये जाते हैं। लखीमपूर जिले के लेड़ो नामक स्थान में लकड़ी चीरने की मिल, ईख और मिट्टी के बर्तन के कारखाने हैं। ये सब कारखाने योरुपीयनों के हैं। सन् १६०३ में कुल मिलाकर ग्यारह मीलें थीं। जिनमें १,२०५ आदमी काम करते थे। इन मीलों में विशेषकर चाय के बक्स तैयार किये जाते हैं जो सेमल की लकड़ी में बनाये जाते हैं। यद्यपि इसकी मांग बहुत है परन्तु कलकत्ते से सुन्दर बक्सों के बन कर आ जाने के कारण क्रमशः इसका व्यापार मन्द पड़ गया है। सन् १६०३ में १४६ आदमी मिट्टी के बर्तन बनाने के काम को करते थे।

मछली मारना

कामरूप के जिले में मछली मारने का व्यापार बड़ा चढ़ा बढ़ा है। सन् १९०५ ई० में नदियल तथा नमशूद्र जाति के २१,००० आदमी थे जिनका पेशा मछली मार कर बेचना था। इसके अतिरिक्त कितने आदमी ऐसे हैं जो जाल से मछली पकड़ कर अपनी जीविका निर्वाह करते हैं। कितनी नदियों तथा झीलों में मछली मारने का ठीका सरकार के द्वारा दिया जाता है। ये मछलियाँ बंगाल भी भेजी जाती हैं।

काँसे का काम

कामरूप जिले के बरपेटा तहसील के सरथेबारी गांव के रहने वाले लोग कांसे का काम अधिक करते हैं। ये लोग धनी महाजनों के यहां नौकरी करते हैं और उनके आदेशानुसार काँसे का बर्तन बनाते हैं। इनकी मजदूरी छः रुपये से लेकर आठ रुपये मासिक से अधिक नहीं होती। इनमें से कुछ आदमी अपर आसाम में चले जाते हैं और वहां स्वतंत्र पेशा कर अधिक रुपया कमाते हैं। इन लोगों के अतिरिक्त खरीलपूर तथा कचार जिले के गांवों के कुछ आदमी भी इस काम को करते हैं। मणि-पूर के लोग इस काम में विशेष दक्ष हैं।

हांथी दांत के काम

कामरूप जिले के बरपेटा तहसील में हाथी दांत पर काम करने वाले कारीगर मिलते हैं परन्तु इनकी संख्या बहुत थोड़ी है। ये चूड़ी, बटन, कंघी तथा क़लम के होल्डर आदि को बनाते हैं। ये सामान वहीं पर बेचे जाते हैं। एक कारीगर इस काम से १५) तक प्रति मास कमा लेता है परन्तु हाँथी दांत के काम की वस्तुओं की मांग अधिक नहीं है वह साल भर तक काम नहीं करता है। ये निर्मित वस्तुयें कारीगरी तथा पालिश में उतनी अच्छी नहीं होती जितनी को दिल्ली की। यदि कारीगरों ने इस कार्य में अधिक उन्नति नहीं की तो सम्भव है कि यह व्यवसाय सदैव के लिये नष्ट हो जाय।

लोहे का व्यवसाय

प्रान्त में छोटे बड़े सब मिल कर लगभग २,००० लोहे के कारखाने हैं जिनमें दाव, छुरी, छूरा, कुलहाड़ी, कुदाली तथा हल जोतने के औज़ार बनाये जाते हैं। लोहे के हथियार बनाने का सबसे प्रसिद्ध स्थान सिलहट जिले में राजनगर नामक गाँव है इस व्यवसाय की भी दशा आजकल अच्छी नहीं है।

साबुन का व्यवसाय

प्रान्त भर में कुल मिला कर प्रायः तीस साबुन बनाने के कारखाने है जिनमें अधिकतर कपड़ा धोने का साबुन बनाया जाता है। ये कारखाने डैरेङ्ग कामरूप, नवगांव, शिवसागर, कचार, तथा डिब्रूगढ़ जिलों में हैं। ये प्रायः कस्बों में हैं तथा वहीं पर सारे सामान को बेचते हैं। बाहरी व्यापारियों की प्रतियोगिता के कारण इस व्यवसाय का टिकना कठिन है।

स्टील लोहे के ट्रंक बनाना

प्रान्त में लोहे के ट्रंक बनाने के प्रायः चालीस कारखाने हैं जो सिलहट, करीमगंज मौलवी बाज़ार, सिलचर, गौहाटी, तेज़पुर, डुबरी, नवगांव, जोरहाट, बालघाट, शिवसागर तथा डिब्रूगढ़ में हैं। इनके मालिक तथा इनमें काम करने वाले आदमी प्रायः बाहर के रहने वाले हैं।

बेंत की टीकरी तथा अन्य वस्तुयें

यह काम प्रायः प्रत्येक जिले में किया जाता है परन्तु इसके प्रधान स्थान सिलहट, कचार और डिब्रूगढ़ हैं। सिलहट तथा गौहाटी जेल में भी यह बनाया जाता है। डिब्रूगढ़ के मारवाड़ी तथा सूरमा की घाटी

के लोग इस व्यवसाय को अधिक संख्या में करते हैं। बेंत की टोकरियाँ चाय बगानों में पत्तियां रखने के काम में लाई जाती हैं। ये टोकरियाँ स्थानीय बाज़ारों में भी प्रचुर मात्रा में बिकती हैं। सिलचर में अनेक दूकानों में बेंत की कुर्सियां आदि भी बनाई जाती हैं। इस कार्य को करने वाली प्रधान कम्पनी "मेसर्स विश्वास एण्ड कम्पनी" है। इस कम्पनी को बहुत ज्यादा आर्डर मिलते हैं। इस व्यवसाय की दशा अच्छी है।

छाता बनाना

छाता बनाने के लिये प्रान्त में गौहाटी, तेजपूर, शिलांग, सिलहट, करीमगंज सिलचर तथा दूसरे स्थानों में दूकानें हैं। बेंत तथा बांस के छाते के डंडे सिलहट के श्रीमंगल, नीलाम बाज़ार, समसेर नगर आदि स्थानों से तथा बङ्गाल के कोमिल्ला ज़िले से लाया जाता है। छाते बनाने के लिये अन्य आवश्यक चीज़ें कलकत्ते से मँगाई जाती हैं। छाते की दूकानें व्यापार में मन्दी होने पर भी अच्छी तरह से चलती हैं।

जूते के कारखाने

जूते बनाने के लिये गौहाटी में दो, सिलहट में

एक, हबीबगंज में एक और सिलचर में पांच छोटे छोटे कारखाने हैं। इन कारखानों में बनाया हुआ चमड़ा प्रान्त के बाहर के स्थानों से मँगाया जाता है। यहां पर उस चमड़े से बूट तथा अन्य प्रकार के जूते तैयार किये जाते हैं।

बढ़ई के काम के कारखाने

प्रान्त में बढ़ई के काम के अनेक कारखाने हैं। गवर्गमेन्ट के टेक्निकल स्कूलों में पास विद्यार्थी भी इस कार्य को कर रहे हैं।

सोने तथा चाँदी के काम

इस काम के करने वाले आदमी प्रान्त भर में सर्वत्र पाये जाते हैं। पहले तो साधारण तौर से स्थानीय गहनों को बनाते थे जो भद्दे तथा पालिश से रहित होते थे। परन्तु आजकल इस कार्य को अधिक सुन्दरता से करने वाले आदमी बाहर से आ जाने के कारण इस व्यवसाय में भी उन्नति हुई है। शहर के रहने वाली स्त्रियों में प्रायः नवीन ढङ्ग के गहनों का ही व्यवहार होने लग गया है।

कंघी बनाना

कंघी बनाने के लिये सिलहट, करीमगञ्ज, हबीब-

गञ्ज गथा मौलवी बाज़ार में प्रायः दस दूकानें हैं। इस काम को करने वाले आदमी ढाका के हैं। व्यवसाय बिलकुल मन्दा है।

खिलौने

सिलहट के आसपास के स्थानों में लाह से पालिश किये हुये लकड़ी के खिलौने बनते हैं। इस व्यवसाय में सौ से अधिक आदमी काम करते हैं परन्तु इन वस्तुओं को बेचने के लिये उचित सुविधा न मिलने के कारण यह काम मन्दा पड़ रहा है।

कपड़ा सीने की दूकानें

प्रान्त भर में सब मिला कर लगभग २,००० दूकानें कपड़ा सीने की हैं और प्राइवेट घरों में लगभग ५,००० कपड़ा सींने की मशीनें इस काम के लिये रक्खी गई हैं।

चीनी का व्यवसाय

प्रान्त में हाल ही में कुछ छोटी छोटी चीनी की फैक्टरियाँ खोली गई हैं। हैबर गांव में (जिला नवगाँव) गुड़ से चीनी बनाने की एक छोटी सी फैक्टरी है। फैक्टरी में जो चीनी तैयार की जाती है वह भूरी होती है। अभी यह व्यवसाय प्रारम्भिक रूप में ही है।
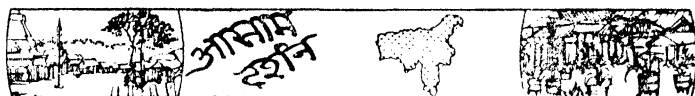
लकड़ी चीरने के कारखाने

प्रान्त में लकड़ी चीरने की अनेक मिलें हैं। सिलहट जिले में गङ्गा नामक स्थान में "सूरमा भेलो सा मिल्स" नामक लकड़ी चीरने की मिलें हैं जिसमें रोज़ लगभग १२५ आदमी काम करते हैं। ये मिलें अच्छी तरह से काम कर रही हैं।

चावल तथा तेल की मिलें

प्रान्त में सब मिलाकर चावल तथा तेल की इक-तीस से भी अधिक मिलें अधिकतर लखीमपूर, शिब-सागर, डैरेङ्ग तथा कामरूप जिलों में हैं। यह व्यापार प्रधानतया मारवाड़ियों के हाथ में है। अब तक सिल-चर में तथा दूसरी सिलहट में छोटी तेल की मिलें खोली गई हैं जिनमें बिजली की शक्ति से काम होता है। ये मिलें आसामी लोगों की ही हैं। धनाभाव के कारण इन मिलों में अभी अधिक लाभ नहीं है। इसके अतिरिक्त प्रान्त भर में ३,००० से लेकर ४,००० तक कोल्हू हैं जिनमें तेल पेरने का काम किया जाता है। अभी भी गाँवों तथा पहाड़ी जगहों के रहने वाले पुराने ढङ्ग से तेल निकाल लेते है।

अब तक जो वर्णन किया गया वह कुटीर शिल्प का है। आसाम में कौन कौन सा व्यवसाय कहाँ और किस प्रकार होता है और उसकी दशा क्या है इसका वर्णन अभी किया गया है। अगले पृष्ठों में इस बात का वर्णन किया जावेगा कि सरकार ने कुटीर शिल्प की उन्नति तथा प्रचार के लिये कौन सा प्रयत्न किया है। सरकार ने इन व्यवसायों की शिक्षा देने के लिये जो स्कूल खोल रक्खे हैं उनका विवरण 'शिक्षा' वाले अध्याय के अन्तर्गत किया गया है। प्राइवेट व्यवसायिक स्कूलों का वर्णन भी यहां ही मिलेगा

हाथ के करघे की बुनाई का प्रचार

हाथ की बुनाई के प्रचार के लिये सरकार ने बड़ा प्रयत्न किया है। सारे प्रान्त में इस प्रकार के निमित्त अनेक घूमने की पार्टियां जिन्हें डिमान्स्ट्रेशन पार्टी कहते हैं बनी हुई हैं जो गांवों में जा जा करके लोगों को सुन्दर रीति से बुनने का तरीका सिखाती हैं और लोगों को इस विषय की शिक्षा भी देती हैं। ये लोग नये ढङ्ग से भी जनता को काम करना बतलाते हैं।
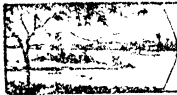
ऐसी पार्टियाँ लोअर तथा पर आसाम दोनों में हैं। सिलहट में भी एक पार्टी ऐसी ही है जो गाँवों में ऐसा प्रचार करती हैं।

रेशम के कीड़े पालने के प्रचार

सरकार ने रेशम के कोड़े पालने के लिये भी बड़ा उद्योग किया है। सरकार की ओर तीतावर तथा शिलाङ्ग में कीड़े पालने के लिये बड़ा प्रबन्ध हैं और ये इस कार्य के लिये प्रधान स्थान हैं। तीतावर में ७० बीघा जमीन इस काम के लिये रक्खी गई है इस विस्तृत जमीन में वे पौधे लगाये जाते हैं जिनको रेशम के कीड़े खाते हैं। इन कीड़ों से जो रेशम तयार होता है। वह बेचा जाता हैं। रेशम के कीड़ों को पालने का काम मार्च के अन्त से शुरू होता है और अक्टूबर के अन्तिम सप्ताह में प्रायः समाप्त हो जाता है। बुनाई के प्रचार की भांति ही कीड़े पालने के प्रचार के लिये भी अनेक पार्टियां बनी हुई हैं जो गांवों में जाकर इसका प्रचार करती हैं।

आसाम का व्यापार

आसाम का व्यापार प्रधानतया दो दिशाओं में

होता है पहिला बङ्गाल प्रान्त के साथ तथा दूसरा इस प्रान्त की सीमान्त जातियों के साथ। बङ्गाल तथा आसाम के बीच में जो व्यापार होता है वह प्रायः नदियों के द्वारा ही होता है। रेलों के बनने के पहिले तो नदियाँ ही व्यापार की एक मात्र साधन थीं परन्तु रेलों के प्रान्त के हृदय तक में बन जाने के कारण नदी द्वारा व्यापार कुछ कम हो गया है। फिर भी ब्रह्मपुत्र तथा सूरमा नदी में नावें तथा स्टीमर माल से लदे दिखाई देते हैं। नदी में व्यापार नाव तथा स्टीमर द्वारा किया जाता है। ब्रह्मपुत्र नदी में मेल स्टीमर प्रतिदिन डिब्रूगढ़ तथा ग्वालन्दों के बीच में चला करते हैं तथा सूरमा नदी में ग्वालन्दा तथा सिलचर के बीच में चलते हैं।

आसाम के बाहरी व्यापार का अधिक अंश मणिपूर स्टेट तथा टिपेरा से होता है। प्रान्त का प्रधान तथा बहुमूल्य आयात रबर, लकड़ी बांस तथा धान है और प्रधान निर्यात रुई, सूत, रेशम, सुपारी तथा अन्य छोटी छोटी वस्तुएँ हैं।

चाय के व्यवसाय का इतिहास

चाय की खेती

चाय की खेती पहाड़ी ढलुवे स्थान पर हुआ करती है। चाय के पौधे को अधिक पानी की आवश्यकता अवश्य होती है परन्तु वह पानी उसकी जड़ में जमना नहीं चाहिये। चाय का जंगली पौधा दस से तीस फीट तक ऊँचा होता है और इसके नीचे हिस्से का विस्तार पन्द्रह से चौबीस इंच तक होता है। चाय के खेतों में यह पौधा काट छाँट कर लगभग तीस इञ्च ऊँचा रक्खा जाता है। चाय की पत्तियों को बहुधा स्त्रियां और छोटे छोटे बालक चुनते हैं। ये लोग अपनी पीठ पर टोकरी लिये रहते हैं जिसमें पत्तियां रखते हैं। प्रत्येक स्त्री से आठ सेर और बालक से चार सेर पत्ती चुनने की आशा की जाती है। कुछ लोग इससे भी अधिक कार्य करते हैं। जब नई युवतियों तथा बालकों का झुण्ड खेतों में चाय चुनने लगता है तब उस समय का दृश्य बड़ा ही सुन्दर होता है। जिस जिले में चले जाइये उसी जिले में हरे हरे चाय के खेत यात्री के मन को मोह लेते हैं। जहां देखिये वहीं प्रकृति हरी भरी दिखाई पड़ती

है। सचमुच ही यह मनोरम दृश्य कभी भुलाया नहीं जा सकता।

चाय तैयार करने का ढङ्ग

चाय की केवल कोमल पत्तियां ही तोड़ी जाती हैं तोड़ने के बाद चाय की पत्तियां चटाई के ऊपर रात्रि के समय बिखेर दी जाती हैं। यदि हवा के ठंढक के कारण रात को वे सूख नहीं पातीं तो प्रातःकाल धूप में भी सुखाने के लिये डाल दी जाती हैं। इसके बाद पत्तियां दबा कर गोल कर दी जाती हैं। यह काम बहुत दिनों तक हाथ के ही द्वारा होता था परन्तु आज-कल क्लिन्मण्ड और जैक्सन साहब के द्वारा आविष्कृत मशीन के द्वारा होता है। मशीन से दबाने पर उनमें से एक रस निकलता है जिसके सूख जाने पर पत्तियां काली भूरी हो जाती हैं और उनमें से एक प्रकार की उग्र गन्ध आने लगती है। पश्चात् इन पत्तियों को कड़ाहियों में रख कर आग में सुखाते हैं। इसमें बड़ी सावधानी रखनी पड़ती है। ऐसा न हो कि पत्तियाँ जल जायँ। इसके बाद पत्तियां और उसका चूर्ण अलग कर दिया जाता है और दोनों पैकटों में बन्द कर दिये
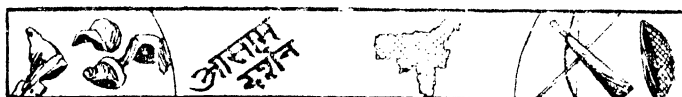
जाते हैं जिससे ये बाहर भेजे जा सकें। यह बनाने का प्रकार काली चाय का है जो आसाम में अधिकता से पैदा होती है। हरी चाय का प्रकार इससे भिन्न है।

चाय के व्यवसाय से आसाम को लाभ

सच पूछा जाय तो चाय के व्यवसाय से आसाम प्रान्त को कुछ विशेष लाभ नहीं है। पहिले जो आंकड़े दिये गये हैं उनसे स्पष्ट प्रतीत होता है कि आसाम में जितने चाय बगान हैं उनमें से केवल तिहाई ही भारतीयों के अधिकार में है। चाय के व्यापार का बहुत अधिक लाभ उन विदेशी कम्पनियों को मिल रहा है जिन्होंने लगभग सौ वर्ष से प्रान्त में अपना अड्डा जमा रक्खा है। चाय बगानों में जो कुली काम करते हैं उनमें से अधिकांश उस प्रान्त के बाहर के रहने वाले हैं। भारतीय चाय के मालिकों में बहुत ही कम आसामी हैं। इस प्रकार से पूँजीपतियों तथा कुलियों में आसामियों की संख्या बहुत ही कम है। उनकी जमीन की पैदावार से दूसरे देश तथा दूसरे प्रान्त के आदमी लाभ उठा रहे हैं। हां, चाय के कारण प्रान्त में कुछ सड़कें और रेलें अवश्य खुल गई हैं। पर चाय के

कारण आसामी लोगों की आर्थिक स्थिति में विशेष उन्नति नहीं हुई है।

आसाम की पार्वत्य तथा सीमान्त जातियाँ

१—गारो जाति

गारो की पहाड़ियां गोआलपाड़ा जिले के दक्षिण में स्थित हैं। इन्हीं पहाड़ियों में गारो नामक जाति रहती है। आजकल इसकी संख्या एक लाख से भी अधिक है। सन् १८७२ ई० तक इसका केवल थोड़ा सा ही हिस्सा अंग्रेज़ी सरकार के अधिकार में था। इसके बाद सरकार ने एक चढ़ाई की और सारे देश को अपने अधीन कर लिया। इस जाति का मुखिया एक सरदार हुआ करता है जो इस जाति के समस्त राज-नैतिक मामलों पर विचार करता है और फैसला किया करता है। यह जाति जंगली तथा अशिक्षित है। इसकी भाषा बड़ी सुन्दर है। इनके शरीर का गठन सुडौल है। ये बड़े कार्य निपुण हैं। धान और रुई की खेती

करते हैं। गारो स्त्री, पुरुष गठरी को पीठ पर रख कर, उसे रस्सी में बांध सिर से टेक कर नीचे मैदान में सामान बेचने के लिये जाते हैं। इनका हथियार भाला और तलवार है। ये लड़ाई में ढाल का भी प्रयोग करते हैं। ये शिकारी नहीं हैं परन्तु कभी कभी हाथियों को फंसाया करते हैं। ये खूब धूम्रपान करते हैं और चावल की शराब भी पीते हैं। इनके घर बांस के बने होते हैं। सबसे आश्चर्य की बात यह है कि इन्हें दूध पीने से बड़ी घृणा है। ये बाल नहीं कटाते और सिर पर जूड़ा बांधा करते हैं। माता तथा पिता के द्वारा ही इनका विवाह सम्बन्ध तय किया जाता है। इस अवसर पर पुरोहित मन्त्र पढ़ता है और एक मुर्गा और मुर्गी का बलिदान किया जाता है। इनके नाचने का ढंग विचित्र है। दस, बीस आदमी मिलकर एक दूसरे की कमर पकड़ कर नाचते हैं। विवाहित पुरुष माता पिता को बिल्कुल छोड़ देता है। दामाद ससुर के मर जाने पर अपनी सास से विवाह कर लेता है और इस प्रकार अपने ससुर के धन का उत्तराधिकारी बन जाता है। गारो स्त्री सारे परिवार की स्वामिनी होती है। उसे पूर्ण

स्वतंत्रता होती है। गारो जाति मूर्तिपूजक नहीं है परन्तु ये ईश्वर में विश्वास रखते हैं। ये भूत प्रेत की सत्ता में भी विश्वास रखते हैं और अपने मृतक को तीन दिन घर में रखकर जलाया करते हैं।

२—खसिया

खसिया जाति खसिया की पहाड़ियों में रहती हैं जो गारो की पहाड़ियों से लेकर पूर्व मणिपूर तक फैली हुई हैं। इन पहाड़ियों के उत्तर में कामरूप तथा नवगांव का जिला, पश्चिम में गारो की पहाड़ियां, दक्षिण में सिलहट और पूर्व में मणिपूर राज्य है। इसका प्रधान स्थान शिलाङ्ग है। खसिया जाति के लोग बड़े मेहनती, शान्त स्वभाव तथा प्रायः शुद्धाचरण के होते हैं। ये सदा प्रसन्न चित्त रहते हैं। जब तक कोई इनकी स्वतंत्रता में बाधा नहीं डालता तब तक ये नहीं बोलते। इसी कारण इन्होंने सन् १८३० तथा १८६२ ई० में विद्रोह किया था। खासी स्त्रियां बड़ी ही सुन्दर और आकर्षक होती हैं। खसिया लोग अशिक्षित हैं परन्तु शिक्षा की ओर इनकी अभिरुचि है। पहाड़ी नदियों पर पुल बांधने में ये बड़े दक्ष हैं। इनके धार्मिक विचार
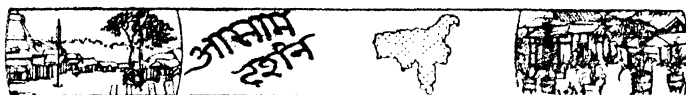
वही हैं जो गारो जाति के हैं। इनका विवाह सम्बन्ध माता, पिता के द्वारा तय नहीं किया जाता परन्तु वर और कन्या स्वयं ठोक करते हैं। ये मृतक को जलाने के पूर्व उसे बाक्स में कई दिनों तक बन्द रखते हैं और मृतक ले जाते समय जलूस में बंशी बजाते हैं। कचारी—यह कचार जिले में रहने वाली एक छोटी जाति है। ये शान्त, मिहनती तथा कष्टसहिष्णु हैं। चाय बगान में काम करते हैं। इनकी अपनी भाषा अलग है जिसमें आठ से आगे गिनने के लिये कोई गिनती ही नहीं है। इनके यहां भी पिशाच विवाह की प्रथा है। इनकी स्त्रियां बड़ा काम करती हैं।

३—मिकिर

यह जाति नवगांव जिले में इसके दक्षिणी और पश्चिमी भाग में रहती है। इसकी संख्या लगभग ४००० है। ये हिन्दूधर्म में दीक्षित हो गये हैं और ईश्वर में पूर्ण विश्वास रखते हैं। मिशनरियों के द्वारा इनमें शिक्षा का प्रचार हो रहा है। इनके यहां वर ही कन्या को चुन लेता है। वर कन्या के घर एक दो वर्ष तक रहता है। यह हर्ष की बात है कि इनके यहां बहु

विवाह की आज्ञा नहीं है। ये बड़े मिहनती हैं परन्तु बड़े शराबी भी हैं। खेतों में रुई और चावल पैदा करते हैं। मिकिर स्त्रियाँ बड़ी मिहनती होती हैं और मैदान से लकड़ी लेकर बेचने को आती हैं। यही इनका पेशा है।

४—नागा

यह जाति आसाम की समस्त जातियों में सब से प्रसिद्ध जाति है। यह नागा कि पहाड़ियों में रहती है। इन नागा पहाड़ियों के उत्तर में लखीमपूर का जिला पश्चिम में नवगांव तथा शिवसागर के जिले दक्षिण में मणिपूर राज्य और पूर्व में बर्मा की पर्वत श्रेणियां हैं। पहिले अँग्रेजी सरकार से नागा जाति को बड़ा झगड़ा था। ये लोग अँग्रेजी सीमा में आकर बड़ी लूट मार मचाया करते थे। सन् १८५७ ई० तक सरकार ने इन पर कम से कम दस चढ़ाइयाँ कीं। सन् १८७५ ई० में एक सर्वे पार्टी के अफसर को इन लोगों ने मार डाला। सन् १८७८ ई० में एक दूसरी पार्टी भेजी गई परन्तु उसकी भी यही दशा हुई। सन् १८८० ई० में सरकार से फिर एक बहुत बड़ी चढ़ाई में नागा लोग हार गये
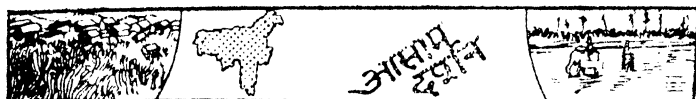
और उन्होंने सरकार की आधीनता स्वीकार कर ली। फलस्वरूप नागा की पहाड़ियों में स्थित कोहिमा नामक स्थान में एक नया ब्रिटिश स्टेशन खोला गया। इस समय ब्रिटिश सरकार इनके भीतरी मामलों में हस्तक्षेप नहीं करती है। नागा पहाड़ियों का डिपुटी कमिश्नर इनकी राजनैतिक निगरानी किया करता है। यह वार्षिक दौरा किया करता है और भिन्न-भिन्न जातियों में होने वाले झगड़ों का निपटारा करता है।

नागा जाति अनेक टुकड़ियों में जैसे अङ्गामा, रेङ्गामा और सेमा आदि—विभक्त है। हर एक टुकड़ी का एक सरदार होता है जिसकी आज्ञा सब मानते हैं। सरदार का पद पैत्रिक नहीं है बल्कि चुनाव से निश्चित किया जाता है। सरदार झगड़ा तय करता है।

सामाजिक

नागा जाति के लोग शान्त प्रकृति के हैं। ये रुई और अन्य पर्वतीय उपजों का व्यापार करते हैं। इनका हथियार भाला और तलवार है परन्तु अङ्गामी जाति के इन्डो-चाइनीज वंश के हैं। इनके शरीर का गठन सुन्दर

और नाक चपटी होती है। ये बड़े बहादुर होते हैं और वीरता का बैज (चिह्न) अपनी छाती पर पहिनते हैं। शत्रु के जीतने के उपलक्ष में ये अपनी सारी देह में गोदना भी गोदवाते हैं। इनकी स्त्रियां चुस्त कुर्तियां पहिनती हैं। नागा लोग अपनी जान हाथों पर लिये फिरते हैं। अफगानों की भांति जान लेना या देना इनके बायें हाथ का खेल है।

अङ्गामी नागा जो कि नागा जाति ही का एक भेद है बड़े गरीब हैं। ये मृतक पशु तक का भी मांस भक्षण करते हैं। ये अफ़ीम भी खाते हैं। इन का स्वभाव गन्दा है। शराब मांग कर पिया करते हैं। इनका धर्म भूत प्रेतों से अत्यन्त डरना है।

५—सिङ्गफो

यह जाति दिहिङ्ग तथा तेङ्गपानी नदी के किनारे तथा "लखीमपूर फ्रान्टियर ट्रैक्ट" के पूर्व में रहती है। इस जाति के लोग उस जाति से सम्बन्ध रखते हैं जो पटकोई की पहाड़ी और चिन्दविन नदी के बीच में रहती है। बर्मी लोगों से अधिक सम्बन्ध होने के कारण इनका यह नाम पड़ा क्योंकि बर्मी भाषा में 'सिङ्गफो'

का अर्थ आदमी होता है। सन् १७९३ में गौरीनाथ सिंह के समय में ये आसाम में आये। ये बर्मीज लोगों के साथ शिवसागर पर चढ़ाई किया करते थे। सन् १८३६ ई० में खामटी लोगों के साथ इन्होंने सदिया पर चढ़ाई कर दी। फलस्वरूप ब्रिटिश सरकार ने इन पर चढ़ाई कर इन्हें अपने आधीन कर लिया। सन् १७८२ ई० से सदिया में एक असिस्टेण्ट पोलिटिकल आफिसर की नियुक्ति हुई।

खामटो लोगों की सभ्यता से ये बड़े प्रभावित हुए। इनमें से कुछ आदमो बौद्ध भी हैं। इनके शरीर का गठन सुन्दर है। ये मंगोलियन जाति हैं, अर्धसभ्य तथा मिहनती हैं। सिङ्गफो पुरुष भी गोदना गोदाते हैं और स्त्रियां अपने पूरे पैर में गोदना गोदाती हैं। इनकी भाषा बर्मीज लोगों को भांति है। इन्हें एक ईश्वर में विश्वास है। ये भूत प्रेत की भी पूजा करते हैं।

६ - खामटी

ये सिंगफो जाति के उत्तर में और "लखीमपुर फ्रान्टियर ट्रैक्ट" के उत्तर और "सदिया फ्रान्टियर

ट्रैक्ट के" दक्षिण में हैं। ये उसी वंश के हैं जिस वंश के आहोम थे। ये पूर्णतया बुद्धावलम्बी हैं। सन् १६०१ में इनकी संख्या १,६७५ थी। ये समस्त पर्वतीय तथा सीमान्त जातियों में सबसे अधिक सभ्य और शिक्षित हैं। १६ वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में सदिया में निवास करते थे। आसाम में बर्मीज लोगों के भाग जाने पर सदिया के खामटी गोसाईं ने ब्रिटिश सरकार से सन्धि कर आधीनता स्वीकार कर ली। तब से सदिया में पोलिटिकल एजेन्ट रक्खा जाने लगा। सन् १८३६ ई० में खामटी लोगों ने सदिया में विद्रोह किया और पोलिटिकल एजेण्ट कालोनल ह्वाईट की हत्या कर डाली। पश्चात् सरकार ने विद्रोह को दबा दिया। ये बर्मीज लोगों की भांति वस्त्र पहिनते हैं। स्त्रियां नेक स्वभाव की होती हैं। ये कपड़ा बुनती तथा उसे रंगती हैं।

७—मिशमी

यह जाति ब्रह्मपुत्र की घाटी के उत्तर-पूर्व कोने में दिवांग नदी से लेकर ब्रह्मकुण्ड तक रहती है। ये छोटी छोटी तीन जातियों में विभक्त हैं। सन् १८६६ में बिबेजिया मिशमी ने खामटी ब्रिटिश प्रजा पर चढ़ाई कर दी

थी। परन्तु दिगारू मिशमी बड़ी शान्त प्रकृति के हैं। यह ब्रह्मकुण्ड तक यात्रियों को ले जाने के लिये पथ प्रदर्शक का काम करते हैं। सन् १८५४ ई० में मिशमी लोगों ने क्रिक नामक एक फ्रेंच मिशनरी की हत्या कर डाली थी। सन् १८५५ ई० में सरकार ने इसका बदला चुकाने के लिये चढ़ाई कर दी और इन्हें दबा दिया।

मिशमी लोगों का सबसे बड़ा गुण यह है कि ये बड़े व्यापारी हैं। ये सदिया से लेकर डिब्रूगढ़ तक व्यापार करते हैं। ये पहाड़ से जड़ी, बूटी तथा कस्तूरी लाकर डिब्रूगढ़ आदि में बेचते हैं। इनका पहाड़ी स्थान बड़ा सुन्दर है। ये जानवरों को चराने का भी काम करते हैं तथा इस कार्य के लिये साँड़ रखते हैं। इनके घर बहुत बड़े होते हैं; कोई कोई तो १३० फीट तक लम्बे होते हैं। ये मुर्दे की कब्र के पास मृत व्यक्ति का समस्त सामान लाकर गाड़ देते हैं। पुरुष तथा स्त्री दोनों लम्बे बाल रखते हैं तथा दोनों धूम्रपान करते हैं। स्त्रियां कपड़ा बुनने में निपुण हैं।

८—अबोर

यह जाति मिरी जाति के पूर्व में दिबाङ्ग नदी तक

फैली हुई है तथा 'सदिया फ्रान्टियर ट्रैक्ट' के उत्तर में रहती है। ये दो भागों में विभक्त हैं। पहिले सदिया तथा डिब्रूगढ़ पर बड़ा धावा बोलते थे। अतः सन् १८-५८ ई० में सरकार ने इन पर चढ़ाई कर दी परन्तु सफलता न मिली। सन् १८५६ में दूसरी चढ़ाई की गई परन्तु कुछ भी परिणाम न हुआ। अन्त में १८६२ ई० की चढ़ाई में हार कर इन्हें सरकार से सन्धि करनी पड़ी। सन् १८६६ ई० में समस्त भिन्न-भिन्न फिरकों को सरकार ने अपने आधीन कर लिया परन्तु सरकार इन्हें वार्षिक भत्ता देती है। ये मंगोलियन वंश के हैं। ये लम्बे तथा मज़बूत होते हैं और इनका रंग ताम्बे के रंग का है। विशेष बात यह है कि इनमें बहु विवाह की प्रथा नहीं है। ये स्त्रियों का आदर करते हैं। वर कन्या के द्वारा ही विवाह तय कर लिया जाता है। ये भी गोदना गोदाते थे और एक विशेष वृक्ष की छाल पहिनते थे।

९—मिरी

ये दफला जाति के ऊपर तथा 'बालिपुर फ्रान्टियर ट्रैक्ट' के उत्तर में रहते हैं। इनका स्वभाव शान्त है।
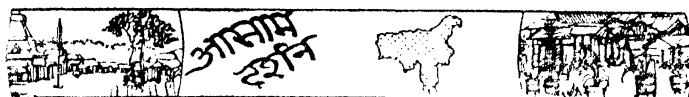
सन् १६०१ ई० में इनकी संख्या ४६,७२० थी। सरकार लाभ दिखा कर इन्हें अपने वश में रखती है और उत्तरी-लखीमपूर खजाने से इन्हें रुपया, नमक तथा शराब भत्ता के रूप में मिलता है। ये कुशल तथा निडर मल्लाह हैं और सदा नदी के किनारे रहते हैं। ये अपनी भाषा तथा आसामी भाषा दोनों जानते हैं इसीलिये इनका नाम मिरी पड़ गया जिसका अर्थ द्विभाषिया होता है। ये आसामी गोसाइयों के चेले हैं। ये मांसभक्षण करते हैं तथा शराब भी पीते हैं। इनकी लड़कियां नाच कर लोगों को रिझाती हैं और इस प्रकार पैसे कमाती हैं। मिरी स्त्रियां आज्ञाकारिणी होती हैं। इनका पहिनावा विचित्र होता है। वन देवता को बलिदान देना ही इनका धर्म है परन्तु ये ईश्वर तथा स्वर्ग में भी विश्वास रखते हैं।

१०—दफला

ये अका जाति के उत्तर तथा 'बालिपूर फ्रान्टियर ट्रैक्ट' के उत्तर में रहते हैं। दफला जाति के लोग सन् १८३७ ई० के पहिले ब्रिटिश सीमा पर बड़ी चढ़ाई करते थे परन्तु इस साल से सरकार ने इनको पेन्शन देना

निश्चय किया अतः धावा कम हो गया। सन् १८७२-७३ ई० में इन्होंने फिर उपद्रव करना शुरू किया। सरकार ने सन् १८७४-७५ ई० में इन पर चढ़ाई कर इन्हें परास्त कर दिया। तब से ये शान्त हैं तथा मित्रता का बर्ताव रखते हैं।

मिरी लोग कद के छोटे तथा मंगोलियन लोगों की तरह होते हैं। इनके गांव बड़े होते हैं। ये गाय और भैंस अधिक संख्या में रखते हैं। ये ईश्वर में विश्वास रखते हैं परन्तु भूतप्रेत पूजते हैं तथा बलि चढ़ाते हैं। बहु विवाह की प्रथा है। स्त्रियां भी अनेक पुरुषों से एक साथ विवाह कर सकती हैं।

११—अका

यह जाति डैरेङ्ग जिले के सुदूर उत्तर में और 'बालिपूर फ्रान्टियर ट्रैक्ट' के दक्षिण में निवास करती है। यह जाति दो भागों में विभक्त है। इन लोगों को भी सरकार की ओर से वार्षिक भत्ता मिलता है। इनका एक सरदार बड़ा उत्पाती था जो ब्रिटिश सीमा पर सदा धावा करता था। सन् १८२६ ई० में सरकार ने उसे पकड़ कर गौहाटी जेल में ठूस दिया। कुछ वर्षों के बाद
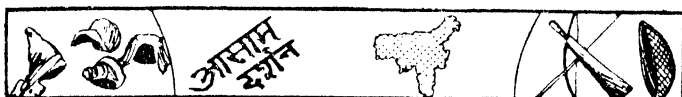
छोड़ दिये जाने पर वह फिर उत्पात करने लगा। अन्त में सरकार से हार कर उसे सन् १८४२ ई० में आत्म समर्पण करना पड़ा। सरकार ने उसे ५००) की पेन्शन नियत कर दी। तब से यह जाति सदा मित्रता का बर्ताव रखती है।

१२—भुटिया

भुटिया जाति के लोग भूटान देश में रहते हैं। इन्हें भुटिया अथवा भोटिया भी कहते हैं। भूटान गोआलपाड़ा तथा कामरूप जिले की उत्तरी सीमा है। यह एक स्वतन्त्र देश है परन्तु भूटान का राजा ब्रिटिश की आधीनता को स्वीकार करता है। जब आसाम सरकार के हाथ में आया तब कामरूप जिले का कुछ हिस्सा भूटान-राजा के हाथ में था। सन् १८४१ ई० में सरकार ने राजा को १०,०००) रुपया वार्षिक देकर उन स्थानों को उनसे ले लिया। सन् १८६४ ई० में भूटान-युद्ध के कारण यह रुपया देना बन्द कर दिया गया। उसी समय सरकार ने दिवनगिरि का किला भी अपने क़ब्जे में कर लिया।

भोटिया एक बड़ी बहादुर जाति है। ये कद में

बड़े लम्बे चौड़े तथा विशाल होते हैं। इनके शरीर की गठन बड़ी सुन्दर होती है। इनका पेशा व्यापार करना तथा खेतों में जानवर चराना है। जाड़े के दिनों में ये कामरूप के उत्तरी भाग में तथा पश्चिमी डैरेङ्ग में व्यापार करने के लिये आते हैं। ये मिर्चा और नमक बेचने के लिये आते हैं और न लेने पर गाँव वालों पर अत्याचार करते हैं अतः सरकार ने सब द्वारों पर सेना का प्रबन्ध कर रक्खा है। ये बुद्ध धर्मावलम्बी हैं।

प्रसिद्ध स्थान

कामाख्या देवी का मन्दिर

आसाम का सबसे प्राचीन तथा सबसे प्रसिद्ध मन्दिर कामाख्या देवी का है। इसकी कीर्ति केवल प्रान्त भर में ही सीमित नहीं है बल्कि समस्त भारत इसे परम पुनीत मन्दिर मानता है। यह मन्दिर गोहाटी शहर के पास नीलाचल पर्वत पर स्थित है कहा जाता है कि दक्षप्रजापति के यज्ञ में भस्म हुई सती के शव को लेकर जब शंकर चले तब उनके शोक को कम करने के लिये विष्णु ने सती के शव के ५१ टुकड़े कर डाले। जहाँ

जहाँ ये टुकड़े गिरे वे स्थान अत्यन्त पवित्र माने गये। कामाख्या में सती का जनन अंग गिरा। अतः इस स्थान को बड़ा पवित्र मानते हैं। तब से यह क्षेत्र परम पूज्यनीय समझा जाता है।

कहा जाता है कि महाभारत के समय में नरकासुर ने यहां एक मन्दिर बनवाया था। इसके पश्चात् वह मन्दिर भी नष्ट हो गया। तथा सब बातें लुप्त सी हो गईं। सर्वप्रथम कोच राजा विश्वसिंह ने इस पवित्र स्थान को फिर से ढूँढ निकाला तथा उसने एक मन्दिर बनवा दिया। परन्तु शीघ्र ही यह मन्दिर काला पहाड़ नामक प्रसिद्ध दुराचारी और आततायी के हाथों नष्ट हो गया। सन् १५६५ ई० में कोच राजा नर नरायण ने पुनः इसका उद्धार किया। वर्तमान मन्दिर की नींव का भाग जो कि कटे हुये पर्वत के बड़े-बड़े टुकड़ों से बना हुआ है। नर नारायण के ही समय का है। परन्तु ऊपर का मन्दिर भाग उतना प्राचीन नहीं है। मन्दिर सुन्दर तथा दर्शनीय है। प्राचीन काल में यह मन्दिर तान्त्रिक सम्प्रदाय का एक बहुत बड़ा केन्द्र समझा जाता था। यहां पर इस सम्प्रदाय की बड़ी उन्नति हुई। बड़े

बड़े विद्वान तन्त्रशास्त्र सीखने तथा सिद्धि के लिये यहां आते थे और पारंगत होकर लौटते थे। आजकल भी इस मन्दिर में दर्शनार्थियों की संख्या कुछ कम नहीं रहती। ये यात्री भारत के प्रत्येक भाग से आते हैं तथा अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। इस स्थान पर कुमारी भोजन का बड़ा माहात्म्य माना जाता है।

नीलाचल पर्वत की शोभा

नीलाचल पर्वत की शोभा निराली है। इस पर चढ़ने का रास्ता ढालुआ है तथा असंख्य यात्रियों के पद घर्षण से यह स्थान चिकना हो गया है। पर्वतों के किनारे चट्टानों से युक्त हैं और कहीं कहीं ढालुआ भी है। पर्वत के ऊपर से नीचे का दृश्य बड़ा ही सुहावना मालूम होता है। विशाल काय ब्रह्मपुत्र इसका पाद प्रक्षालन करता है। दक्षिण तरफ खासी पहाड़ियां हैं और उत्तर की ओर सुनहले धान के खेत मन को मुग्ध कर लेते हैं।

हाजो का मन्दिर

यह मन्दिर हिन्दू तथा बौद्धों दोनों के लिए बड़े आदर की वस्तु है। वह हाज़ो के पास एक पहाड़ी के
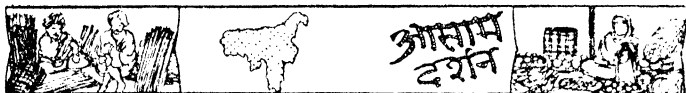
ऊपर स्थित है। कहा जाता है कि डवो ऋषि ने इसका निर्माण कराया था तथा कोच राजा रघुराय ने सन् १५८३ ई० में इसको फिर से सुधारा। इस मन्दिर में विष्णु की नृसिंहावतार की प्रतिमा स्थापित है। भुटिया लोग उसे गलती से बुद्ध की प्रतिमा समझ कर पूजा करते हैं। मन्दिर की बाहरी दीवालों में अनेक प्रकार की नक्काशी की गई है। इस मन्दिर के लिये १२,००० एकड़ भूमि माफी में दी गई है। यहां पर देवताओं को अपनी नृत्य कला से प्रसन्न करने के लिये नर्तकियां भी रक्खी गई हैं। इस प्रकार की नर्तकियों का प्रबन्ध आसाम के अन्य किसी मन्दिर में नहीं पाया जाता है।

अन्य मन्दिर

कामरूप में और अनेक मन्दिर पाये जाते हैं। गौहाटी स्वयं इन मन्दिरों की दिव्य विभूति से कुछ कम वैभव शाली नहीं है। तीन मन्दिर गौहाटी के पास की पहाड़ी के पश्चिम में हैं जिनकी अवस्था आज कल अच्छी नहीं है। ये जीर्ण शीर्ण हो गये हैं। दूसरा मन्दिर उमानन्द का है जो ब्रह्मपुत्र के बीच में स्थित टापू में है। ब्रह्मपुत्र के उत्तरी किनारे पर अश्वक्रान्त का मन्दिर है

जो ढलुवे पहाड़ पर स्थित है। गौहाटी के आस पास में ही उग्रतारा तथा छत्रकर का मन्दिर है यद्यपि इनका गुम्बज छोटा है परन्तु इनकी दिवालें बड़ी मज़बूत हैं तथा आठ से नौ फुट तक मोटी हैं। गौहाटी के अत्यन्त समीप में नवग्रह का मन्दिर अत्यन्त रमणीक बना हुआ है। इसमें सूर्य, चन्द्रमा तथा अन्य सातों ग्रहों की प्रतिमा रक्खी हुई है। प्रत्येक ग्रह योनि पीठ तथा लिङ्ग के रूप में दिखाई गई है। इस पर पुष्पादि चढ़ाये जाते हैं। गौहाटी से ७ मील दक्षिण वशिष्ट जी का मन्दिर है। यद्यपि इसकी इमारत जीर्ण शीर्ण दशा में है परन्तु इसकी स्थिति बड़ी ही मनमोहिनी प्रकृति के बीच में है। यह मन्दिर सन् १७५१ ई० में वशिष्ट ऋषि ने इस स्थान में बनवाया था। कहते हैं कि कुछ दिनों तक वशिष्ट ऋषि ने इस स्थान पर निवास किया था। गौहाटी के पास रुद्रेश्वर नाम का एक मन्दिर है जिसे रुद्रसिंह के लड़के शिवसिंह ने अपने गौहाटो पूज्यनीय पिता की स्मृति में (जिनका स्वर्गवास गौहाटो में सन् १७१४ ई० में हुआ था) बनवाया था। इस प्रकार से सैकड़ों रमणीय मन्दिर समस्त आसाम प्रान्त में बिखरे

पड़े हैं तथा अपने निर्माणकर्ता की उज्वल कीर्ति को आज भी सुरक्षित रक्खे हुये हैं। आज भी इन मन्दिरों को देख कर किसका मन आनन्द सागर में गोते नहीं लगाने लगता ?

बरपेता

यह कामरूप ज़िले में एक छोटा सा शहर है। सन् १८८६ ई० में इस शहर में म्युनिसिपलिटी को स्थापना हुई थी। शहर का क्षेत्रफल १·३७ वर्गमील है। प्रायः १५ मील लम्बी सड़क म्युनिसिपलिटी के अन्तर्गत है परन्तु इनमें से एक भी पक्की नहीं हैं। बरपेता सुप्रसिद्ध वैष्णव सुधारक शंकरदेव के द्वारा संस्थापित महान् महापुरुषिया सत्र का प्रधान स्थान होने के कारण बड़ा ही प्रसिद्ध है। जिस स्थान पर सत्र स्थित है वह स्थान बड़ा ही पवित्र माना जाता है। यहां पर इस मत के मानने वाले साधु, महात्मा अपनी अपनी कुटिया में आनन्द से जीवन बिताते हैं। महापुरुषिया सम्प्रदाय के विषय में अन्यत्र विस्तृत विवेचन किया गया है। सन् १८९५ ई० में शीतला देवी का प्रकोप इस स्थान पर हुआ। यह प्रकोप बड़ा भयङ्कर था। केवल इसी बीमारी

से प्रति मील ३६ आदमी मर गये। इससे इसकी आबादी बहुत कम हो गई। सन् १८९७ ई० के भीषण भूकम्प से तो इसका बहुत हिस्सा बर्सात के दिनों में भी पानी के अन्दर चला जाता है। यह सब डिवीज़न आफिसर का प्रधान स्थान है। अस्पताल, कोर्ट, पुलिस स्टेशन और हाई स्कूल प्रधान बिल्डिगें हैं। यहां चावल, दाल और सरसों का प्रधान व्यापार होता है तथा नाव बनाना और मिट्टी के सुन्दर सुन्दर सामान बनाना यहाँ का मुख्य व्यवसाय है।

शिव सागर

यह शिवसागर जिले का प्रधान स्थान है। शिव सागर का अर्थ है शिव का समुद्र। चूँकि इस जिले में शिव जी का एक बहुत बड़ा मन्दिर तथा वृहद्‌काय तालाब है। सम्भवतः इसी कारण से इस जिले का नाम शिवसागर पड़ गया। सन् १८८५ ई० में इसकी जन-संख्या ५,००० थी। इस शहर का क्षेत्रफल ७ वर्गमील है। यह एक बहुत ही सुन्दर तथा स्वास्थ्यप्रद स्थान है। इस शहर में सब से बड़ी आकर्षक वस्तु यहां का विशालकार्य तालाब है जो कि दो वर्ग मील में फैला

हुआ है। यह बहुत ही सुन्दर तथा रमणीय तालाब है। इसका निर्माण आहोम राजा शिवसिंह के द्वारा हुआ था। इस तालाब के एक किनारे शिव जी के तीन सुन्दर मन्दिर हैं। इन मन्दिरों के बीच वाला मन्दिर सबसे ऊँचा है। काशी के भगवान विश्वनाथ के मन्दिर की भांति ही इस मन्दिर का ऊपरी भाग भी सुवर्ण के मोटे पत्तर से आच्छादित है। इसकी ऊँचाई २०० फुट है। यह बहुत दूर से ही दिखाई पड़ता है तथा बड़ा सुहावना मालूम होता है इस मन्दिर में बन्दूक की गोलियों के छिद्र आज भी दृष्टि गोचर होते हैं। इससे ज्ञात होता है कि प्राचीन समय में इसके सोने को लूटने के लिये अन्य राजाओं ने इस पर चढ़ाई की थी। मन्दिर के निचले भाग में भिन्न-भिन्न हिन्दू देवताओं की मूर्तियां प्रस्तराङ्कित हैं। इसमें अविछिन्न रूप से दीपक जला करता है। यहां के लोगों का विश्वास है कि इस तालाब में सुनहले बछुवे भी हैं। लोग नाव द्वारा इस तालाब में बिहार भी करते हैं। इसमें स्नान करना तथा कपड़ा धोना मना है। यह मन्दिर बड़ा पवित्र माना जाता है तथा लोग बड़ी संख्या में यहाँ पूजा करने आते हैं।

ब्रह्मकुण्ड

यह स्थान लखीमपूर जिले के उत्तर-पूर्व में है। यह हिमालय पहाड़ के एक तङ्ग पहाड़ी स्थान में गोलाकार रूप में बना हुआ है। यहां पर एक बहुत बड़ा कुण्ड है जिसे ब्रह्मकुण्ड कहते हैं। चूंकि ब्रह्मपुत्र को ब्रह्मा का पुत्र कहते हैं अतः इस नदी के द्वारा बनाये कुण्ड को ब्रह्मकुण्ड कहना स्वाभाविक है। यहां से ब्रह्मपुत्र नदी अपने दक्षिणी मार्ग को छोड़कर दक्षिण-पश्चिम को ओर अपना मार्ग बनाती है। यह कुण्ड बड़ा पवित्र माना जाता है। यहां तक पहुँचने का मार्ग बीहड़ तथा दुर्गम होने पर भी प्रतिवर्ष हज़ारों आदमी इस कुण्ड में स्नान करने के लिये आते हैं।

देवदुबी

यह स्थान लखीमपूर जिले में ही है। यह एक अंधकारमय गहरा सोता है। बीच में इसकी गहराई का कुछ अन्दाज़ा नहीं लगता। यहीं से देसङ्ग नदी नागा की पहाड़ियों को छोड़ती है। यहां जाने के लिये भी रास्ता बड़ा कठिन तथा दुर्गम है। इस सोते में स्नान करना बड़ा पुण्यमय माना जाता है। लाखों आदमी प्रतिवर्ष

इस सोते में स्नान करके पाप से मुक्त होने के लिये आते हैं।

तेजपूर

कहा जाता है कि सती के भिन्न भिन्न अंग कट कर जिन इक्कावन स्थानों पर गिरे उनमें दो स्थान आसाम में ही हैं। पहिला स्थान तो निर्विवाद कामाख्या है। कुछ लोगों का कहना है कि उनका दूसरा अंग (जंघा) तेजपूर में गिरा जो डैरेंग जिले का प्रधान स्थान है। इसी कारण से इस स्थान को भी पवित्र मानते हैं।

शिलाङ्ग

आसाम प्रान्त के राजनैतिक महत्व रखने वाले स्थानों में शिलाङ्ग का नाम सर्व प्रथम है। यों तो गौहाटी का राजनैतिक महत्व प्राचीन समय में बहुत था। परन्तु शिलाङ्ग के कारण आज उसका वह महत्व नहीं है। वर्तमान समय में गौहाटी कामरूप जिले का केवल प्रधान स्थान रह गया है। शिलाङ्ग आजकल आसाम प्रान्त की राजधानी है। सन् १८६४ ई० में जिले का केवल प्रधान स्थान था परन्तु सन् १८७४ ई० प्रांत का प्रधान बनाया

गया। शिलाङ्ग खसिया की पहाड़ियों में बसा हुआ है। इसकी चोटी ६००० फुट से भी ऊँची है। समुद्र की सतह से इसकी ऊँचाई ५००० फुट है। शहर का क्षेत्र-फल ४¾ वर्ग मील है। इस शहर में अच्छी म्युनिसिपलिटी है जो शहर में सफाई पानी तथा बिजली की रोशनी का प्रबन्ध करती है। पर्वत मालाओं की गोद में बसे होने के कारण शिलाङ्ग का शोभा अपूर्व है। कहीं मनोरम झरने जोरों की आवाज़ करते हुये झर रहे हैं तो कहीं नाना प्रकार की सदा हरी हरी बनस्पतियां मन को लुभाये लेती हैं। यहां का प्राकृतिक दृश्य अपूर्व तथा स्वर्गीय हैं। जलवायु सुन्दर और स्वास्थ्यप्रद है। प्रान्त का प्रधान स्थान होने से गवर्नर यहीं रहता है तथा प्रान्तीय कौन्सिल यहीं होती है। इसी स्थान में प्रान्तीय सिक्रेटरियट तथा अन्य सरकारी दफ्तर हैं। इस स्थान तक रेल नहीं गई हैं। गौहाटी से यहां तक बिल्कुल पक्की सड़क बनी हुई है अतः मोटर द्वारा यहां आसानी से जा सकते हैं। इसकी अपूर्व प्राकृतिक शोभा तथा राजनैतिक महत्व ने सचमुच ही इसे 'आसाम का स्वर्ग' बना दिया है।

आसाम दर्शन

गौहाटी

गौहाटी (गोआ = हथी = सुपारी के पेड़ों से घिरा हुआ ऊँचा स्थान) विशाल ब्रह्मपुत्र नदी के बायें किनारे पर २६'११ उ० ९१'४५ पू० में अवस्थित है। बंगाल से सदिया तक जो ट्रङ्क रोड जाती है। उसी के किनारे यह बसा हुआ है। आसाम बंगाल रेलवे तथा ईस्टर्न बंगाल रेलवे दोनों से यहां आसानी से सामान पहुँचाया जा सकता है। यह प्रान्त भर में सबसे प्रसिद्ध शहर है। शिलाङ्ग की प्रसिद्ध केवल इसीलिये है कि वह सरकार का प्रधान स्थान है। शिक्षा व्यवसाय आवागमन का साधन, प्राकृतिक सौंदर्य तथा धार्मिक स्थान आदि अनेक दृष्टियों से गौहाटी की समता रखने वाला दूसरा शहर आसाम में नहीं है। कामाख्या देवी के भारत विख्यात मन्दिर ने तो मानों सोने में सुगन्ध का कार्य किया है। प्राचीन राजा भगदत्त की राजधानी यही प्राग्ज्योतिषपूर (आजकल का गौहाटी) थी संस्कृत साहित्य में यदि आसाम के किसी शहर का नाम मिलता है तो इसी प्राग्ज्योतिषपूर का। गौहाटी प्राचीन काल से ही अनेक राजवंशों की राजधानी रही है। आज भी

इसके आस पास जो भग्नावशेष दृष्टि गोचर होते हैं। वे इसकी प्राचीनता तथा महत्ता को आज भी डंके के चोट पर बतला रहे हैं। जब रघु ने आसाम प्रान्त पर चढ़ाई की थी तब यहीं के राजा ने रघु के पाद पद्मों की पूजा की थी तथा मद चुराने वाले मदमाते हाथियों को रघु को उपहार में दिया था। इस घटना का वर्णन महाकवि कालिदास ने रघुवंश में बड़ी सुन्दर रीति से किया है।

यह स्थान प्राचीन काल से ही अनेक राजवंशों की राजधानी रही है। कोच राजाओं के समय में कोच राजों का राज्य अलग हो जाने पर गौहाटी ही उन राजाओं का प्रधान स्थान था। आहोम राजाओं के समय में तो गौहाटी अपनी प्रसिद्धि की चरम सीमा पर पहुँची हुई थी और यहां पर एक आहोम राजा का गवर्नर सर्वदा रहता था। गौहाटी ही आसाम जीतने की कुञ्जी समझी जाती थी इसलिये मुसलमानों के आसाम पर जब जब आक्रमण हुये हैं तब तब उन्होंने गौहाटी हो लेने का प्रयत्न किया। मुसलमानों के अधिकार हो जाने पर गौहाटी में एक गवर्नर रहा करता था। जब

अंग्रेज़ों ने आसाम को जीता तब कुछ वर्षों तक इनकी भी राजधानी गौहाटी ही रही परन्तु इस स्थान को अस्वास्थ्यकारक समझ कर राजधानी शिलाङ्ग बदल दी गई। सन् १९२६ ई० में कांग्रेस ने भी आसाम में गौहाटी को अपने अधिवेशन के लिये उपयुक्त समझा तथा यहीं अधिवेशन हुआ।

यदि धार्मिक दृष्टि से देखें तो गौहाटी का महत्व आलौकिक है। कामाख्या देवी का यह पवित्र स्थान होने के कारण सर्वदा के लिये अमर हो गया। शक्ति सम्प्रदाय वालों के लिये विशेषकर तथा सब हिन्दुओं के लिये साधारण तौर पर कामाख्या एक तीर्थस्थान माना जाता है। शक्ति सम्प्रदाय के इतिहास में गौहाटी का एक प्रसिद्ध स्थान है क्योंकि इसी स्थान पर इस सम्प्रदाय का परिवर्धन तथा परिपोषण हुआ। कामाख्या देवी के इस भारत-विख्यात मन्दिर के अतिरिक्त गौहाटी में आहोम राजाओं के बनवाये अनेक मन्दिर अब भी विद्यमान हैं जो उनकी हिन्दू धर्म प्रियता के ज्वलन्त प्रमाण है। रुद्रेश्वर मन्दिर, गौहाटी के पास का नवग्रह-मन्दिर तथा ब्रह्मपुत्रा के बीच में स्थित वशिष्ठ ऋषि

का मन्दिर आदि बीसियों मन्दिर गौहाटी की शोभा आज बढ़ा रहे हैं तथा इसके धार्मिक केन्द्रस्थान होने की बात को बतला रहे हैं। सचमुच इसी हो कारण से गौहाटी को 'ए सिटी आफ टेम्पुल्स' मन्दिरों का नगर कहते हैं।

शिक्षा की दृष्टि से भी गौहाटी आसाम में सबसे आगे निकला हुआ है। यदि गौहाटी को आसाम का मस्तिष्क कहें तो इसमें कुछ अत्युक्ति न होगी। आसाम की जो कुछ विशेषतायें हैं वह आपको गौहाटी में दृष्टि गोचर होगी। गौहाटी का 'काटेन कालेज' तथा अनेक स्कूल बहुत दिनों से इस प्रान्त में शिक्षा का प्रचार कर रहा है। यहीं पर 'कामरूप अनुशीलन समिति' है जो आसाम में प्राचीन शोध का कार्य बड़े उत्साह तथा सफलता से कर रही है। इस प्रकार शिक्षा की दृष्टि से भी इसका महत्व अधिक है।

व्यापार की दृष्टि से भी गौहाटी को केन्द्र कह सकते है। ब्रह्मपुत्रा की घाटी में जो कुछ व्यापार होता है वह यहीं से होकर जाता है। बंगाल से जो कुछ माल आसाम में आता है वह गौहाटी होकर ही जाता है।
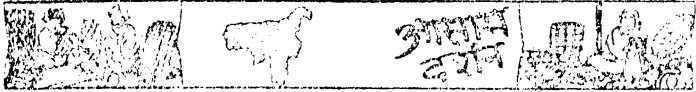
स्वयं गौहाटी में मिट्टी के बर्तन, चटाई आदि बहुत अच्छी बनती हैं। ए० बी० आर० तथा ई० बी० आर० दोनों के मिलने का यह स्थान है अतः व्यापार का केन्द्र होना स्वाभाविक है। यह स्टीमर सर्विस का भी स्टेशन है अतः नावों के द्वारा भी यहां आना-जाना हो सकता है।

यदि प्राकृतिक सौन्दर्य की दृष्टि से गौहाटी का विचार करें तो इसकी छटा निराली दिखलाई पड़ती है। विशाल ब्रह्मपुत्रा दासी की भांति सर्वदा इसका पाद प्रक्षालन किया करती है तथा ऊँचे ऊँचे गिरि शिखर जो प्रायः बर्फ से ढके रहते हैं मानों इसके सिर पर श्वेत छत्र धारण किये रहते हैं। गौहाटी के पास स्थित नीलाचल पर्वत की अनूठी छटा का वर्णन विस्तृत रूप में अन्यत्र किया गया है अतः उसे यहां दुहराना उचित नहीं है परन्तु गौहाटी का प्राकृतिक दृश्य अनोखा है, अद्वितीय है तथा स्वर्गीय है।

गौहाटी शहर

गौहाटी के आस पास जो प्राचीन भग्नावशेष मिलते हैं उस से अनुमान किया जाता है कि प्राचीन

समय में यह शहर ब्रह्मपुत्र के दोनों किनारों पर बसा हुआ था। कहा जाता है कि ब्रह्मपुत्र के उत्तर में जो शहर था उसे कोच राजा परीक्षित ने सोलहवीं शताब्दी के अन्त में बसाया था। मीर जुमला के आक्रमण के समय गौहाटी शहर ब्रह्मपुत्र के उत्तर तरफ बसा हुआ था। सन् १८६७ में इसके इतिहास में एक बहुत बड़ी दुर्घटना हुई। वह उस साल का प्रलयकारी भूकम्प है। इस भीषण भूकम्प ने सारे गौहाटी शहर को भूमिसात् कर दिया। गवर्नमेन्ट ने बड़े खर्चे तथा परिश्रम से इसे फिर से बसाया।

गौहाटी में सर्वप्रथम सन् १८७८ ई० में म्युनिसिपलिटी की स्थापना हुई। इस शहर का क्षेत्रफल २'६५ वर्गमील है। १४ मील सड़क म्युनिसिपलिटी के अन्तर्गत है जिसमें साढ़े नौ मील सड़क बिलकुल पक्की है। यहां की म्युनिसिपलिटी अच्छी तरह से काम कर रही है। म्युनिसिपलिटी ने शहर में पानी देने के सुविधा के लिये पाइप लगवाया है। यह पानी ब्रह्मपुत्र से लिया जाता है। इस प्रकार यहां दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति हो रही है।
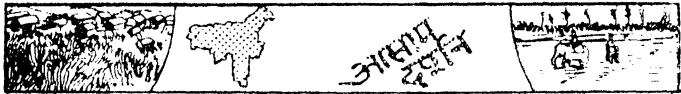
गौहाटी के दर्शनीय स्थान

यहां की 'कामरूप-अनुसन्धान-समिति एक बड़ी संस्था है और दर्शनीय स्थान है। इस संस्था ने प्राचीन शोध का कार्य बड़े उत्साह के साथ प्रारम्भ किया है तथा कामरूप के प्राचीन इतिहास का बड़ा उद्धार कर रही है। यहां का काटन कालेज एक प्राचीन कालेज है तथा शिक्षा प्रचार में बड़ी सहायता कर रहा है।

तेजपूर

यह डैरेङ्ग जिले का प्रधान स्थान है और ब्रह्मपुत्र के उत्तरी किनारे पर बसा हुआ है। यहां सुन्दर तालाब और झीलें हैं। यहां का बाजार बड़ा सुन्दर है। इस स्थान के दक्षिण-पश्चिम में वर्ष भर में एक बहुत बड़ा मेला लगता है जिसमें भूटान के घोड़े बिकने के लिये यहां आते हैं। इसी स्थान में चाय का सुप्रसिद्ध आविष्कारक चार्ल्स ब्रूस रहता था। तेजपूर का धार्मिक महत्व भी है।

जोरहाट

यह स्थान शिवसागर जिले में है और शिवसागर शहर से ३५ मील दक्षिण-पूर्व में है। अँग्रेज़ों के आने के पहिले यह प्राचीन वंश का प्रधान स्थान था और

वे यहीं रहते थे। प्राचीन राजाओं के वंशज अब भी यहां निवास करते हैं। १८५७ ई० में प्राचीन राजवंश के एक राजकुमार ने विद्रोह किया था परन्तु सरकार ने अन्त में उस विद्रोह को दबा दिया।

डुबरी

यह गोआलपाड़ा ज़िले का प्रधान स्थान है और ई० बी० रेलवे का एक प्रधान स्टेशन है। इसे यदि आसाम का द्वार कहें तो कुछ अत्युक्ति न होगी क्योंकि उत्तरी भारत से आसाम जाने के लिये सब से नज़दीक रास्ता इसी से होकर जाता है। कलकत्ते से भी यहां शीघ्र ही पहुँच सकते हैं। यह ब्रह्मपुत्र के उत्तरी किनारे पर बसा हुआ है। कलकत्ते से आने जाने वाली स्टीमरों का यह स्टेशन भी है। ब्रह्मपुत्र में इस स्थान पर एक घाट भी है जिसे 'डुबरी घाट' कहते हैं। यहां अफसरों के रहने के लिये सुन्दर बँगले बने हुये हैं।

कामरूप ज़िले में पुरातत्व सम्बन्धी स्थान

बर-नगर नामक स्थान जो कि कोच राजा बलि नारायण और परीक्षित की राजधानी थी बारपेता से आठ मील उत्तर में है। यह स्थान कोच राजाओं की
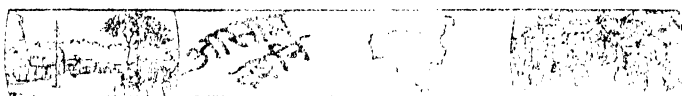
राजधानी होने के कारण अपना बड़ा ऐतिहासिक महत्त्व रखता है। यह परिवर्तन शील समय के कारण आज जंगली बृक्षों से घिरा हुआ है। परन्तु आज भी फल वाले वृक्षों, तालाब और आदमियों के रहने के लिये निर्मित घरों के कारण इस स्थान का कुछ अन्दाज़ा लगाया जा सकता है।

कोच राजा नर नारायण ने एक बहुत बड़ी और पक्की सड़क बनवाई। इस सुप्रसिद्ध सड़क का नाम "गोहाइन कमला अली" है। यह उत्तरी कामरूप से मङ्गलदई तक जाती है।

रङ्गिया तहसील में बेटना नामक स्थान के पास बैदरगढ़ नामक एक प्रसिद्ध किला है। यह वर्गाकार है तथा जिन दीवालों से यह घिरा हुआ है उनमें प्रत्येक की लम्बाई चार मील है। इतना विशाल किला साधारणतया देखने में नहीं आता।

खरिजा बेलबरी नामक गांव में भी एक छोटा सा क़िला है जो फेनगुआगढ़ के नाम से प्रसिद्ध है। यह क़िला बैदरगढ़ क़िले से दस मील आगे है।

कमलापुर डाक बंगले से तीन मील की दूरी पर

सिल सिन्दुर घोष नामक गांव में सन् १८६७ ई० के भूकम्प के पहिले एक पत्थर का पुल था। यह विशाल पुल १४६ फुट लम्बा था। इसके सब पाये ठोस पत्थर के बने हुये थे और रास्ता भी पत्थर का था। नदी के सूख जाने पर भी यह पुल बना रहा परन्तु अब यह प्रायः बिल्कुल नष्ट हो गया है।

गौहाटी के पास, ब्रह्मपुत्र के किनारे स्थित शुक्लेश्वर मन्दिर के नीचे पहाड़ी पत्थरों के ऊपर बड़ी ही सुन्दर रीति से नक्काशी का काम किया गया है। इसमें विष्णु की मूर्ति बनी हुई है। इस मूर्ति के दक्षिण में सूर्य और गणेश हैं और दाहिनी ओर दुर्गा की मूर्ति है। कामाख्या पहाड़ी के पश्चिम ओर में पत्थर की अनेक मूर्तियां, लिङ्ग और मन्दिर पत्थर को काट कर बनाये गये हैं। डैरेङ्ग जिले के तेजपूर नामक स्थान में प्राचीन राजाओं के अनेक शिलालेख मिले हैं।

खासी पहाड़ी

खासी की पहाड़ियों में यद्यपि पुरातत्व सम्बन्धी कोई विशेष वस्तु नहीं मिलती फिर भी कुछ चीज़ें हैं जो दृष्टि को आकर्षित कर लेती हैं। खासी लोगों ने मृत
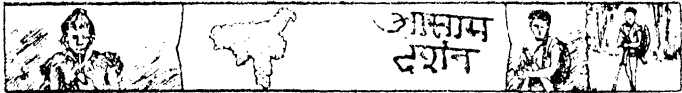
पुरुषों की स्मृति में अनेक विशालकाक पत्थर गाड़ रक्खा है। ये पत्थर एक ही विशाल पत्थर के बने हुये हैं और इस जिले के स्थानों में सर्वत्र पाये जाते हैं। ये प्रायः पंक्तियों में रक्खे जाते हैं। इनमें बीच का पत्थर सब से बड़ा होता है। इनमें से कुछ पत्थरों की लम्बाई चौड़ाई बहुत ही बड़ी होती है। एक स्थान पर एक पत्थर की ऊँचाई २६ फीट ६ इंच, चौड़ाई ६ फीट ९ इंच और मोटाई २ फीट ३ इंच है। ये पत्थर प्रायः रास्तों के नज़दीक रक्खे जाते हैं।

चेरापूँजी में ठोस पत्थर के कुछ ऐसे प्लेट फार्म बने हुए हैं जिन पर चेरा स्टेट के राजघराने के लोग जलाये जाते थे। इसके अतिरिक्त और भी अनेक स्थान पुरातत्त्व संबंधी महत्त्व के हैं जो काल के फेर से पृथ्वी के गर्भ में अभी तक पड़े हैं।

व्यापारिक

गोआलपाड़ा

यह इसी नाम के जिले में एक साधारण कस्बा है। डुबरी के प्रधान शहर हो जाने के कारण यह अब उजाड़ सा हो गया है। यह व्यापारिक स्थान है। यहां नावों

तथा स्टीमरों के द्वारा तेलहन, सूखा मिर्चा और लाह का व्यापार होता है।

नवगांव

यह नवगांव जिले का प्रधान स्थान है। यहां की जलवायु अत्यन्त गर्म है। यहां सुपारी, पान, ईख, चावल तथा रेशम बहुत पैदा होता है। तथा इसका बड़ा व्यापार होता है। इस स्थान में चाय के बगीचे बहुत हैं अतः व्यापार की चीजों में चाय भी मुख्य है।

डिब्रूगढ़

यह लखीमपुर ज़िले का प्रधान स्थान है यह स्टीमरों का अन्तिम स्टेशन है और आसाम के प्रधान शहरों में से एक है। यह एक व्यापारिक स्थान है। यहां भी चाय बहुत अधिक पैदा होती है। अतः चाय बगानों की बड़ी अधिकता है। जिनमें उत्तरी भारत के कुली जाकर काम करते हैं। यह ब्रह्मपुत्र के किनारे बसा हुआ है तथा रेल का अंतिम स्टेशन है।

सदिया

यह आसाम की सुदूर उत्तर पूर्वी सीमा पर ब्रह्मपुत्र के किनारे पर बसा हुआ है यह 'सदिया-फ्रान्टियर
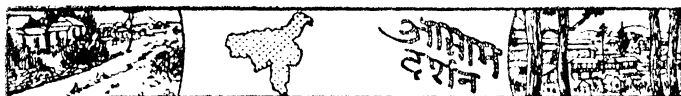
ट्रैक्ट' का प्रधान स्थान है। अँग्रेज़ी राज्य के पहिले पहाड़ी जातियां यहां आकर बड़ा उत्पात मचाती थीं परन्तु अब यह दशा नहीं है।

चेरापूँजी

यह खसिया पहाड़ी में बसा हुआ है तथा शिलांग के दक्षिण में स्थित है। समुद्र की सतह से यहां की ऊँचाई ४,४५५ फुट है। इस स्थान की प्रसिद्धि इसलिये है कि यहां पर संसार में सबसे अधिक वर्षा होती है। कभी कभी साल में ५०० इंच तक पानी बरसता है। अनेक झरने और सोते होने के कारण स्थान बड़ा ही रमणीय है।

माकूम

यह स्थान लखीमपूर जिले में है। यहां पर कोयले की बहुत बड़ी खानें हैं। जिनमें से उत्तम कोटि का कोयला निकाला जाता है। यहां कोयला उत्तमत्ता में ब्रिटिश कोयले से टक्कर लेता है। यहां के सोतों से पेट्रोलियम भी निकाला जाता है। यह स्थान एक छोटा सा कस्बा है। केवल कोयलों की खान होने के कारण ही यह प्रसिद्ध है।

डिगबोई

यह भी एक छोटा सा कस्बा है। यह अपने तेल के सोतों के लिए प्रसिद्ध है। यहां पर तेल के अनेक बड़े बड़े सोते हैं जिनसे तेल निकाला जाता है इस कार्य को सुचारु रूप से करने के लिये अनेक मशीनरी काम किया करती हैं।

कोहिमा

यह नागा पहाड़ियों में एक प्रधान स्थान है। यहां पर एक व्यवसायिक स्कूल है जिसे 'फुलर टेक्निकल स्कूल, कहते हैं।

ब्रह्मपुत्र की घाटी

शीलांग का एक साधारण दृश्य

आसाम—प्राकृतिक विभाग

ब्रह्मपुत्र नदी में एक मुसाफ़िरी अगिन बोट

आसाम
सदिया
डिब्रूगढ़
नौगांव
इम्फाल
(मनीपुर)
संकेत
तापक्रम फारेनहाइट
और सेण्टीग्रेड अंशों में
३२°-४८°
४८°-६४°
६४°-८०°

आसाम
ग्रीष्म कालीन जलवायु
सिबसागर
तेजपुर
नौगांव
गौहाटी
लुमडिंग
शिलांग
चेरापूंजी
सिलचर
(मनीपुर)

आसाम
तेजपुर
नौगाँव
ब्रह्मपुत्र नदी
गौहाटी
ग्वालपारा
लुमडिंग
शिलांग
कोहिमा
सिलचर
इम्फाल
मणिपुर
संकेत
कम विकास वाले कृषि और उद्यान प्रदेश
अधिक विकास वाले कृषि और उद्यान प्रदेश
वन
चाय आदि के बगीचे

आसाम
संकेत
तेजपुर
गोहाटी
नौगांव
सदिया
शिवसागर
कोहिमा
सिलचर

अगले महीने (जुलाई १९४७)

में

कोलम्बो

का

इसी तरह का

सचित्र वर्णन रहेगा

यदि आप अभी तक

देश-दर्शन

के

ग्राहक नहीं बने हैं

तो

६) रु० भेज कर

एक वर्ष के लिये ग्राहक बन जाइये ।

मैनेजर, भूगोल-कार्यालय, इलाहाबाद ।

सम्पादक तथा प्रकाशक पं० रामनारायण मिश्र, बी० ए०